प्रस्तावना

पहिला एडिशन तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली का एक गुरमुखी अक्षर की लिपि से जो बाबा अचिन्तदास जी साधू (हाल अम्बाला निवासी) ने कृपा करके दी थी छापा गया था लेकिन दूसरी स्वतत्र लिपि न मिलने के कारण उसमें कुछ त्रुटियाँ और दो चार क्षेपक शब्द रह गये थे। अब हमको सेठ सुदर्शनसिंह साहिब रायबहादुर (आगरा के रईस) ने दया करके एक प्रमाणिक लिपि देवनागरी में लिखी हुई भेजी जिससे मिलान करके पहिला छापा शोधा गया। दूसरे छापे के दस बारह फार्म छपने के पीछे एक तीसरी लिपि हाथ लगी जिससे फिर मुकाबला करने से जो थोड़े से पाठान्तर मिले वह नये छापे में सुधार दिये गये हैं।

दो चार क्षेपक शब्द देवी साहिब (मुरादाबाद वाले) के तुलसी साहिब के नाम से बनाये हुए पहिले छापे में बिना जाने छप गये थे वह इस छापे से निकाल दिये गये हैं और कितने एक मनोहर शब्द जो नई लिपियों में मिले वह शामिल किये गये हैं सिवाय ऐसे पदों के जो रत्नसागर या घटरामायण के हैं और उन ग्रंथों में छपे हैं।

रसिकजनों की सुगमता के लिये शब्दावली अब दो भागों मे छापी जाती है।

शब्दावली के दूसरे भाग में तुलसी साहिब का पद्मसागर जो वह अधूरा छोड़ गये थे ज्यों का त्यों छाप दिया गया है जिससे उनका अब कोई ग्रंथ छपने से बाकी नहीं रह गया।

दासानुदास,

अधम,

एडिटर, संतबानी-पुस्तकमाला।

इलाहाबाद, मर्च, सन् १९५३

तुलसी साहिब का जीवन-चरित्र

सतगुरु तुलसी साहिब जिनको लोग साहिबजी भी कहते थे जाति के दक्षिणी ब्राह्मण राजा पूना के युवराज यानी बड़े बेटे थे जिनका नाम उनके पिता ने श्यामराव रक्खा था। बारह बरस की उमर में उनकी मरज़ी के ख़िलाफ़ पिता ने उनका विवाह कर दिया पर वह जवान होने पर भी ब्रह्मचर्य्य में पक्के और अपनी स्त्री से अलग रहे। उनकी स्त्री जिसका नाम लक्ष्मीबाई था पूरी पतिव्रता थी और अपने पति की सेवा दिल जान से बराबर करती थी। आख़िर को एक दिन जब कि उसके पति किसी भारी सेवा पर बड़े प्रसन्न हुए और उससे वर माँगने को कहा तो उसने अपनी सास की सीख अनुसार यह माँगा कि मुझे एक पुत्र हो। साहिबजी ने कहा बहुत अच्छा और दस महीने पीछे बेटा हुआ।

साहिबजी के पिता भी बड़े भक्त थे और अब इनकी इच्छा हुई कि बेटे को राजगद्दी देकर आप एकान्त में रहकर मालिक की बंदगी करें परन्तु उनको हज़ार समझाया वह किसी तरह राज़ी न हुए और अपने पिता से बैराग और भक्ति की ऐसी चरचा की कि उनको जवाब न आया फिर भी वह इनके राजगद्दी पर बैठने की तैयारी करते रहे। जब गद्दी पर बैठने को एक दिन बाकी रहा तो साहिबजी अपने पिता से मिलने बाग को थोड़े से सवारों के साथ जो उनकी निगरानी के लिए तईनात थे गये और वहाँ से आगे हवा खाने के बहाने एक तेज़ तुरकी घोड़े पर सवार होकर निकल गये। जब शहर-पनाह के पास पहुँचे तो मौज से ऐसी आँधी उठाई कि घोर अँधेरा छा गया जिसकी ओट में वह घोड़ा भगा कर अपने साथियों से अलग हो गये। राजा ने यह ख़बर सुन कर इनकी खोज के लिए चारों ओर देश विदेश आदमी व सवार दौड़ाये पर जब कहीं पता न लगा तो अति उदास व निरास होकर राज्य को त्याग किया और अपने छोटे कुँवर बाजीराव को गद्दी पर बैठाया।

तुलसी साहिब कितने ही बरस तक जंगलों, पहाड़ों और दूर दूर शहरों में घुमे और हज़ारों आदमियों को उपदेश देकर सत मार्ग में लगाया और कई बरस पाछे ज़िला अलीगढ़ के हाथरस शहर में आकर पक्के तौर पर ठहरे और वहाँ अपना सतसंग जारी किया।

घर से निकलने के बयालीस बरस पीछे वह अपने छोटे भाई राजा बाजीराव से बिठूर (ज़िला कानपुर) में मिले थे जहाँ कि बाजीराव गद्दी से उतारे जाने पर सम्वत् १८७६ में भेज दिये गये थे। इसका हाल "सुरत बिलास" ग्रंथ में इस तरह लिखा है कि साहिबजी गंगा के तट पर रम रहे थे कि एक शूद्र और ब्राह्मण में झगड़ा होते देखा। ब्राह्मण गंगाजी के तट पर संध्या करता था और शूद्र नहा रहा था। शूद्र के देह से जल का छींटा ब्राह्मण पर पड़ा जिससे वह क्रोध में भर आया और उठकर शूद्र को गाली देने और मारने लगा। साहिबजी के पूछने पर उसने सब हाल कहा और बोला कि इस शूद्र ने जल की छींट अपने बदन से उड़ा कर मुझे अपवित्र कर दिया और अब मेरे पास दूसरी धोती भी नहीं है कि फिर नहाकर पहिरूँ और पूजा ख़तम करूँ। साहिबजी ने समझाया कि तुम्हारे ही शास्त्र के अनुसर गंगा और शूद्र दोनों एक ही पद से याने विष्णु के चरण से निकले हैं फिर क्यों एक को पवित्र और दूसरे को अपवित्र मानते हो? यह सुन कर ब्राह्मण लज्जित हुआ।

घाट पर जो लोग जमा थे उनमें से राजा बाजीराव के एक पंडित ने साहिब जी को पहिचान लिया क्योंकि इनका अति सुन्दर और मोहनी रूप जिस किसी ने एक बार भी दरशन किया उसकी आँखों में समा जाता था। उसने तुरंत राजा को ख़बर भेजी कि आपके भाई आये हैं। राजा नंगे पाँव दौड़े और साहिबजी के चरणों पर बिलाप करते हुए गिरे और बड़े आदर भाव से सुखपाल पर बैठा कर घर लाये और चाहा कि उनको वहीं रक्खें पर वह एक दिन वहाँ से भी चुपचाप चलते हुए।

सुरत विलास में तुलसी साहिब के देशाटन समय के कितने ही चमत्कार लिखे हैं जैसे रोगियों को आरोग्य कर देना, मुरदों को जिला देना, अंधों को आँख, निर्धन को धन और बाँझ को संतान देना इत्यादि, जिनके विस्तार की यहाँ आवश्यकता नहीं है। ऐसी कथायें महात्माओं की महिमा बढ़ाने के लिए लोग अक्सर गढ़ लेते हैं। संत यद्यपि सर्व समरथ हैं पर यह कभी सिद्धि शक्ति नहीं दिखलाते और अपनी ऊँची गति को गुप्त रखते हैं। हमारे मन में तो सब कथाओं में यह हाल जो मशहूर है अधिक बैठता है कि एक साहूकार ने आपका बड़ा सत्कार किया और भोग लगाते समय यह बरदान माँगा कि मुझे दया से एक पुत्र बख़्शा जाय। तुलसी साहिब ने अपना सोंटा उठाया और यह कह कर चलते हुए कि लड़का अपने सगुँन इष्ट से माँग, सतों की दया तो यह है कि अगर उनके दास के औलाद मौजूद भी हों तो उसे उठा लें और अपने दास को निर्बंध कर दे।

तुलसी साहिब के उत्पन्न होने का सम्वत् सुरत विलास में नहीं दिया है पर यह लिखा है कि उन्होंने अनुमान अस्सी बरस की अवस्था में जेठ सुदी २ बिक्रमी सम्वत् १८६६ या १९०० में चोला छोड़ा। इससे उनके देह धारण करने का समय सम्वत् १८२० के लगभग ठहरता है। हाथरस में उनकी समाधि मौजूद है, बहुत से लोग वहाँ दर्शन को जाते हैं और साल में एक बार भारी मेला होता है।

यद्यपि इनको इस संसार से गुप्त हुए १०० बरस हुए हैं पर उनके अनुयाइयों ने न जाने किस मसलहत से उनके जीवन समय को ऐसी भूल भुलैयों में डाल रक्खा है कि लोग उसे सैकड़ों बरस पहिले समझते हैं। मुंशी देवीप्रसाद साहिब ने भी जो अब इस मत के आचार्य्य कहे जाते हैं घट रामायण की भूमिका में इस भ्रम को दूर करने की कोशिश नहीं की है। हमने इस मत के कई साधुओं और गृहस्थों से तुलसी साहिब का जीवन समय पूछा तो उन्होंने एकमुँह होकर अब से साढ़े तीन सौ बरस पहिले बतलाया जो कि गोसाईं तुलसीदासजी लक्त-प्रचलित सगुँण रामायण के करता का समय है। तुलसी साहिब ने निस्सदेह घट रामायण के अंत में फ़रमाया है कि पूर्व जन्म में आप ही गोसाईं तुलसीदास जी के चोले में थे और तब ही घट रामायण को रचा परन्तु चारों ओर से पंडितों भेषों और सब मत वालों का भारी विरोध देख कर उस ग्रंथ को गुप्त कर दिया और दूसरी सगुँण रामायण उसकी जगह समयानुसार बना दी। इससे यह नतीजा साफ तौर पर निकलता है कि घट रामायण को तुलसी साहिब ने जब दूसरा चोला अनुमान एक सौ चालीस बरस पीछे धारण किया तब प्रगट किया न कि पहिले चोले से। सवाल यह है कि कोई संत तुलसी साहिब के नाम के पिछले सत्तर पचत्तर बरस के अंदर हाथरस में उपस्थित थे या नहीं जो वहाँ सतसंग कराते थे और उपदेश देते थे, और जहाँ उनकी समाधि अब तक मौजूद है। हमको इसमें कोई संदेह नहीं है कि ऐसे महापुरुष अवश्य थे क्योंकि हम आप उनकी समाधि का दर्शन कर आये हैं और दो प्रमाणिक सतसंगी अब तक मौजूद हैं जिन्होंने अपने लड़कपन में तुलसी साहिब के दर्शन किये थे और उनमें से एक को तुलसी साहिब ने अपनी घट रामायण आप दिखलाई थी।

तुलसी साहिब के मत वाले उनकी महिमा समझ कर इस बात पर बड़ा ज़ोर देते हैं कि महाराज ने कोई गुरु धारण नहीं किया और इसके प्रमाण में यह कड़ी पेश करते हैं—

'एक दिना चित रहूँ सम्हारे। मिलै कोइ संत फिरौं तिस लारे॥'

यह कड़ी तुलसी साहिब के "पूर्व जन्म के चरित्र" में पहिली चौपाई की बीसवीं कड़ी है और उसी के दो पन्ना आगे "बरनन भेद संत मत" में पहिला सोरठा लोगों की इस बहस का खंडन करता है—

"तुलसी संत दयाल, निज निहाल मो को कियौ।
लियौ सरन के माहिं, जाइ जन्म फिर कर जियौ ॥"

इसमें सन्देह नहीं कि तुलसी साहिब स्वर्ग संत थे जिनको गुरू धारण करने की ज़रूरत न थी लेकिन मरजादा के लिए किसी को नाम मात्र को अवश्य गुरु बना लिया होगा जिसके लिए संत सतगुरु कबीर साहिब और समस्त संतों की नज़ीर मौजूद है।

तुलसी साहिब अक्सर हाथरस के बाहर एक कम्मल ओढ़े और हाथ में डंडा लिये दूर दूर शहरों में चले जाया करते थे। जोगिया नाम के गाँव में जो हाथरस से एक मील पर है अपना सतसंग जारी किया और बहुतों को सत मार्ग में लगाया।

इनकी हालत अक्सर गहिरे खिंचाव की रहा करती थी और ऐसे आवेश की दशा में धारा की तरह ऊँचे घाट की बाणी उनके मुख से निकलती, जो कोई निकट-वर्ती सेवक उस समय पास रहा उसने जो सुना समझा लिख लिया नहीं तो वह बाणी हाथ से निकल गई। इस प्रकार के अनेक शब्द उनकी शब्दावली में हैं।

तुलसी साहिब के अनुयायी अब तक हज़ारों आदमी हिन्दुस्तान के शहरों में मौजूद हैं। उनके प्रसिद्ध ग्रंथ घट रामायण, शब्दावली और रत्न सागर हैं और एक अधूरा ग्रंथ पद्म सागर है जो शब्दावली के दूसरे भाग के अंत में छपा है।

तुलसी साहिब ने अपनी बाणी में बहुत जगह वेद, कतेब, क़ुरान, पुरान, राम-रहीम और प्रचलित मतों का खोल कर खंडन किया है जिससे लोग उन्हें निन्दक और द्रोही समझते हैं पर यह उनकी अनसमझता की बात है। तुलसी साहिब के पदों के अर्थ पर ध्यान देने से स्पष्ट जान पड़ता है कि उन्होंने किसी मत को झूठा नहीं ठहराया है बरन् जहाँ तक जिसकी गति है उसको साफ़ तौर पर बतला दिया है। उनका अभिप्राय केवल यह है कि इष्ट सबसे ऊँचे और समस्त पिंड और ब्रह्मांड के धनियों के धनी का बाँधना चाहिये और उसी की सेवा और भक्ति करनी चाहिये, निर्मल चेतन्य देश से नीचे के लोकों के धनियों की भक्ति करने से परिश्रम तो उतना ही पड़ेगा और लाभ पूरा न उठेगा अर्थात् भक्त का काम अधूरा रह जायगा और वह आवागवन से न छूटेगा देर सवेर जन्म मरन का चक्कर लगा रहेगा, क्योंकि ये लोक माया के घेर में हैं चाहे वह कितनी ही सूक्ष्म माया हो।

सूचीपत्र

शब्दावली

तुलसी साहिब (हाथरस वाले की)

पहला भाग

बिरह और प्रेम

॥ शब्द १ ॥

कोइ सतगुर देव री बताइ, चरन गहूँ ताहि के ॥ टेक ॥
चहुँ दिसि ढूँढ़ि फिरी कोइ भेदी, पूछत हौं गुहराइ ।
उन से कहूँ बिथा सब अपनी, केहि बिधि जीव जुड़ाइ ॥१॥
जो कोइ सखी सुहागिन होवै, कहे तन तपन बुझाइ ।
पिउ की खोल खबर कहै मो से, मरूँ री बिकल कर हाइ ॥२॥
जो न्यामत दुनिया दौलत की, सो सब देउँ बहाइ ।
बारम्बार वार तन डारूँ, यह कहा मोल बिकाइ ॥३॥
बिन स्वामी सिंगार सुहागिन, लानत तोबा ताइ ।
पिय बिन सेज बिछावे ऐसी, नारि मरै बिष खाइ ॥४॥
सतगुरु बिरहिन बान कलेजे, रोवै और चिल्लाइ ।
हाय हाय हिये में निस बासर, हर दम पीर पिराइ ॥५॥
इह झुँड में कोइ पाक पियारी, पिया दुलारी आहि ।
मैं दुखिया हौं दर्द दिवानी, प्रीतम दरस लखाइ ॥६॥
तुलसी प्यास बुझै प्यारे से, चढ़ घर अधर समाइ ।
किरपावंत संत समझावैं, और न लगै उपाइ ॥७॥

॥ शब्द २ ॥

कोइ सतगुर मिलैं री दयाल, काढ़ैं जमजाल से ॥ टेक ॥
करता काल कलेवर कीन्हा, दीन्हा भौ भ्रम डाल ।
लख चौरासी जिया जोनि में, फिरते बहुत बिहाल ॥१॥
कहो उनकी किरपा बिन दूजा, कौन करै प्रतिपाल ।
कल्प कल्प कागा करि राखे, कैसे होइ मराल ॥२॥
चहुँ दिसि फेर रह्यो चक्कर को, दूसर चलै न चाल ।

सूचीपत्र

विषय			पृष्ठ

शब्दावली

तुलसी साहिब (हाथरस वाले की)

पहला भाग

बिरह और प्रेम

॥ शब्द १ ॥

कोइ सतगुर देव री बताइ, चरन गहूँ ताहि के ॥ टेक ॥
चहुँ दिसि ढूँढ़ि फिरी कोइ भेदी, पूछत हौं गुहराइ ।
उन से कहूँ बिथा सब अपनी, केहि बिधि जीव जुड़ाइ ॥१॥
जो कोइ सखी सुहागिन होवै, कहे तन तपन बुझाइ ।
पिउ की खोल खबर कहै मो से, मरूँ री बिकल कर हाइ ॥२॥
जो न्यामत दुनिया दौलत की, सो सब देउँ बहाइ ।
बारम्बार वार तन डारूँ, यह कहा मोल बिकाइ ॥३॥
बिन स्वामी सिंगार सुहागिन, लानत तोबा ताइ ।
पिय बिन सेज बिछावे ऐसी, नारि मरै बिष खाइ ॥४॥
सतगुरु बिरहिन बान कलेजे, रोवै और चिल्लाइ ।
हाय हाय हिये में निस बासर, हर दम पीर पिराइ ॥५॥
इह झुँड में कोइ पाक पियारी, पिया दुलारी आहि ।
मैं दुखिया हौं दर्द दिवानी, प्रीतम दरस लखाइ ॥६॥
तुलसी प्यास बुझै प्यारे से, चढ़ घर अधर समाइ ।
किरपावंत संत समझावैं, और न लगै उपाइ ॥७॥

॥ शब्द २ ॥

कोइ सतगुर मिलैं री दयाल, काढ़ैं जमजाल से ॥ टेक ॥
करता काल कलेवर कीन्हा, दीन्हा भौ भ्रम डाल ।
लख चौरासी जिया जोनि में, फिरते बहुत बिहाल ॥१॥
कहो उनकी किरपा बिन दूजा, कौन करै प्रतिपाल ।
कल्प कल्प कागा करि राखे, कैसे होइ मराल ॥२॥
चहुँ दिसि फेर रह्यो चक्कर को, दूसर चलै न चाल ।

को रोकै सन्मुख होइ जाके, कठिन कुलाहल काल ॥३॥
सतसँग बिना दीन दिल दृढ़ कै, केहि बिधि होइ निहाल ।
संत सरन लीन्हे बिन कोई, लिखा रे मिटै नहिँ भाल[१] ॥४॥
तुलसी तीन लोक का नाइक, सब का लूटै माल ।
सतगुर चरन सरन जो आवै, सो जिव देत निकाल ॥५॥

॥ शब्द ३ ॥

जिनके हिरदे गुर संत नहीँ । उन नर औतार लिया न लिया ॥टेक॥
सूरत बिमल बिकल नहिँ जाके । बहु बक ज्ञान किया न किया ॥१॥
करम काल बस उद्र निहारा । जग बिच मूढ़ जिया न जिया ॥२॥
अगम राह रस रीत न जानी । बहु सतसंग किया न किया ॥३॥
नाम अमल घट घोँट न पीन्हा । अमल अनेक पिया न पिया ॥४॥
मोटे मात जात जिँदगी मेँ । सिर धर पैर छुआ न छुआ ॥५॥
तुलसीदास साध नहिँ चीन्हा । तन मन धन न दिया न दिया ॥६॥

॥ शब्द ४ ॥

बिन गुर गैल गवन कहँ जैहो ॥ टेक ॥
बाट घाट घर मारग भूले । मूल मिलाप राह नहिँ पैहो ॥१॥
ऊभट बाट चलत जुग बीते । अब मारग बिन जम घट सहिहो ॥२॥
लख सतसंग बदन दिन चारी । हारी जीत समझि सुधि लैहो ॥३॥
तुलसी तलब करै कोइ दरदी । करि तलास गुरन सँग रहिहो ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

सखी मोहिँ नींद न आवै री । एरी बैरन बिरह जगावै ॥टेक॥
सूनी सेज पिया बिन ब्याकुल । पीर सतावै री ॥ १ ॥
रैन न चैन दिवस दुख ब्यापै । जग नहिँ भावै री ॥ २ ॥
तड़फत बदन बिना सुख सइयाँ । सब जरि जावै री ॥ ३ ॥
बिषधर[२] लहर डसै नागिन सी । ज्यों जस खावै री ॥ ४ ॥
देवै मौत दइ बिरहन को । होते मरि जावै री ॥ ५ ॥
कैफ[३] बिना तुलसी तन सूखै । जिय तरसावै री ॥ ६ ॥

---

(१) माथा, लिलार । २ साँप । ३ ——

॥ शब्द ६ ॥

भोर कोइ जागो रे जागो, क्या सोवै नींद भर घोर ॥टेक॥
बदली घुमड़ घोर अँधियारी, पहरू करत हैं सोर।
जागे जिन जिन तपन निवारी, घर मूसत हैं चोर ॥ १ ॥
पाँच पचीस बसैं घट माहीं, साईं निपट कठोर।
मोर और तोर देत झकझोला, चलत नेक नहिँ ज़ोर ॥ २ ॥
तलबी तीन द्वार पर प्यादे, साधे कपट की डोर।
आवत जात नेक नहिँ रोकैं, एक न मानत मोर ॥ ३ ॥
तुलसीदास बाज यह बसती, कह कह हार निहोर।
कोतवाल कलबूत समाना, हाकिम अंधा घोर ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

प्यारी पिया पैहौं कौने भेस, मैं तो हारी ढूँढ़ि सारा देस॥टेक॥
जोग जुगति जोगी ठगे, ब्रह्मा विस्नु महेस।
बेद बिधी बंधन भये, देव मुनी और सेस ॥ १ ॥
ब्रह्मचार बैराग लौ, सन्यासी दुरवेस।
परमहंस बेदान्त को, पढ़ि भाषत ब्रह्म नरेस ॥ २ ॥
तीरथ बरत अन्हान को, चार बरन परवेस।
काल करम करता करै, बाँधे जम धर केस ॥ ३ ॥
जगत जाल जंजाल से, कोइ नहिँ पावत पेस।
मैं सतगुर सरना लिया, तुलसी सकल तज ऐस ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

पी की मोहिँ लहर उठत खुटत रैन नाहीं।
कहा कहूँ करमन की रेख हिये की दरदाई ॥ टेक ॥
अँखियाँ ढुर ढुरत नीर सखियाँ सुख नाहीं।
पपिहा पिउ पिउ के बोल खोलत खिसियाई ॥ १ ॥
जियरा जरजर पिरात रात रटत साईं।
लाई सुति चरन सरन हित चित चिन्हवाई ॥ २ ॥

मेरे मन की मुराद साध सँगत चाही।
खोजै खुल खुल बिसेष लेखै अपनाई ॥ ३ ॥
तुलसी तत मत बिलास पास प्रेम छाई।
पाई घर धधक धीर रमक सी जनाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ९ ॥

बिरह में बेहाल बिकल सुध बुध बिसराई।
रजनी नहिं नींद नैन दीदा दरसाई ॥ टेक ॥
सखियाँ सुन सेज पास गाज परत आई।
पलँगा पर पाँव धरत नागिन डस खाई ॥ १ ॥
तड़फत तन तोल बोल बाक बचन नाहीं।
पल पल पी की उसास स्वाँसा भरि आई ॥ २ ॥
मोरा कुछ बल बिवेक एक चलत नाहीं।
सतगुर बिन मेहर कहर अजगुत[1] दरसाई ॥ ३ ॥
तुलसी तू तरक बोध साध समझ लाई।
गाई सब संत अंत सूरत लखवाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द १०—रखतो ॥

मेरे दरद की पीर कसक किससे मैं कहूँ ॥ टेक ॥
ऐसा हकीम होय जोई जान दे दहूँ।
खटकै कलेजे बीच बान तीर से सहूँ ॥ १ ॥
घायल की समझ सूर चूर घाव में रहूँ।
हीये हवाल हाल गला काट के लहूँ ॥ २ ॥
जैसे तड़फती मीन नीर पीर ज्यों सहूँ।
जैसे चकोर चंद चाह चित्त से चहूँ ॥ ३ ॥
सोचों सुबह और साम पिया धाम कस गहूँ।
तुलसी बिना मिलाप छुरी मार मर रहूँ ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११—पश्तो ॥

प्यारे बिना पलँग पै जाय हाय क्या करूँ।
अली ये अबर की पीर जबर सबर बिन मरूँ ॥ १ ॥
पाटी पकड़ के सीस रैन रोय के रही।
प्यारी पिया बेपीर बात नेक ना कही ॥ २ ॥
बीती बदन पै कहर लहर लगन लाल की।
आह फाँसी फँसी मोह जबर जक्त जाल की ॥ ३ ॥
ज्यों पपी की प्यास पीव रात भर रटी।
अरी स्वाँति बिना बुंद भोर भ्यान पौ फटी ॥ ४ ॥
भटकी भौ भेष देख नेक नजर में।
तुलसी मुर्सिद की मेहर मूर अजर में ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२—टप्पा ॥

प्यारी पिया पीर खली आधी रतियाँ ॥ टेक ॥
सोवत समझ उठी अपने में। क्या कहुँ बरनि बिपतियाँ ॥१॥
चोली बंद बदन बिच खटकै। उमँग उमँग फटे छतियाँ ॥२॥
रोवत रैन चैन नहिं चित में। कूर करम की बतियाँ ॥३॥
तुलसी देस ऐस बिन पिय के। सोचु लिखूँ कित पतियाँ ॥४॥

॥ शब्द १३—मंगल ॥

अली अलबेली नार पार पिया पै चली।
सुन्दर कीन्ह सिँगार सार स्रुति से मिली ॥ १ ॥
चढ़ी महल पर धाय राह रबि कोट है।
जैसे प्रीत चकोर चंद चित चोट है ॥ २ ॥
अधर अटारी माहिं लगन पिय से लगी।
जैसे डोर पतंग संग रँग में पगी ॥ ३ ॥
देखि पिया को रूप भूप कोइ ना लपै।
ज्यौं भुवंग मणि भाव भूमि भूमी दिपै ॥ ४ ॥
तेज पुंज पिया देस भेष कहो को लखै।
ऐसा अगम अनूप जाय कहो को सकै ॥ ५ ॥

मैं पिया की बलिहार प्यार मोहिँ से कियो ।
दीन्ह पलँग सुख साज काज रहसो हियो ॥ ६ ॥
जाऊँ नित नित सैल केल पति से करौं ।
जिन की तिन को लाज काज पति से सरो ॥ ७ ॥
तुलसी कहै बिचार सार सब से कही ।
बिन सतगुर नहिँ पार भिन्न कैसे भई ॥ ८ ॥

रेखता

(१)

अगम के महल पर सुगम की सैल है ।
हरषि मन मगन गुर सरन आवै ॥ १ ॥
सुरति की सैन से चैन निरखत रहै ।
चढ़ै घर अधर सोई अलख पावै ॥ २ ॥
अलख की पलक पर खलक का खेल है ।
भलक नित जोति सोइ झलक आवै ॥ ३ ॥
दास तुलसी कहै चमक पर चाँदना ।
वंद पर वंद तजि तुरत जावै ॥ ४ ॥

(२)

अगम की जोति में सोत निरखत रहै ।
लखै कोइ सूर सोइ नूर पावै ॥ १ ॥
यार सोइ प्यार दिलदार दीदा लखै ।
सुखमनो घाट पर सुरति लावै ॥ २ ॥
चाँद और सूर जाहूर जाहिर तकै ।
पकै मन नाद नित अगम छावै ॥ ३ ॥
दास तुलसी कहै संत की टहल में ।
महल की खबर खुद खोज लावै ॥ ४ ॥

(३)

गन के सिखर पर मुकर मन चाँदना ।

चढ़ै मन मगन सोई गगन पावै ॥ १ ॥
सुरत की निरत नित प्रीति से पति लखै ।
चखै रस अधर अज अमर पावै ॥ २ ॥
मधुर मन महल में टहल करता रहै ।
गुरू पद पदम सत सुरति छावै ॥ ३ ॥
गिरा गिर गुहा पर सात खिरकी बनी ।
तुलसी दल दरज दुरबीन लावै ॥ ४ ॥

(४)

पैठ मन पैठ दरियाव दर आप में ।
कँवल बिच जहाज में कमठ राजे ॥ १ ॥
होत जहँ सोर घरघोर घट में लखै ।
निरख मन मौज अनहद्द बाजे ॥ २ ॥
गगन की गिरा पर सुरत से सैल कर ।
चढ़ै तिल तोड़ घर अगम साजे ॥ ३ ॥
दास तुलसी कहै पछिम के द्वार पर ।
साहिब घर अजब अदभुत बिराजे ॥ ४ ॥

(५)

कँवल बिच कली में सुरत न्यारी लखो ।
सुन्न की धुन्न को परख भाई ॥ १ ॥
सब्द की संध पर बंद गुर से गहो ।
देख पट पार पद सार साईं ॥ २ ॥
कमठ और सेस मिल मरम जानैं नहीं ।
बेनी बिध घाट घट अगम राही ॥ ३ ॥
दास तुलसी कहै समझ सतसंग में ।
लखै कोई सूर जिन मूर पाई ॥ ४ ॥

(६)

अजब इक कँवल में जुगल खिरकी बनी ।
चाँद और सुरज बिच गंग धाई ॥ १ ॥

गगन आपंग मन संग से चढ़ि गई।
सुरत पट खोल गई भवन माहीं ॥ २ ॥
ज्ञान गुर से लिया पाइ अपना पिया।
हिये की तपन पत पोर खोई ॥ ३ ॥
दास तुलसी कहै अगम धस रस पिया।
लिया मन सूर सम सुरत सोई ॥ ४ ॥

(७)

गगन के गुमठ पर गैब का चाँदना।
संत बिन भेद नहिँ हाथ आवै ॥ १ ॥
हद्द बेहद्द के पार परचा मिलै।
होइ निज हंस सोई महल पावै ॥ २ ॥
अमरपुर बास जहँ नहीँ जम त्रास है।
काल का अमल बल नाहिँ जावै ॥ ३ ॥
दास तुलसी हजूर दरबार है।
अलख और खलक दोउ नाहिँ आवै ॥ ४ ॥

(८)

निकट निरवान की स्यान[१] जग में लखै।
फटिक बिच सिला पर स्याम माहीं ॥ १ ॥
काल की जाल दरहाल जा को कहै।
भये चौबीस भव मुक्ति पाई ॥ २ ॥
गुन्न मिलि गोह चौदह गुनिष्ठान हैं।
चौदह जमराय जहँ वसत भाई ॥ ३ ॥
अधर अठवीस लख लोक राजू कहै।
काल निरवान रित रहत राही ॥ ४ ॥
देव मुनि देत गंधर्प और मानवी।
केवली काल मुख सकल जाई ॥ ५ ॥

---

१ सैन।

दास तुलसी निरबान पद निरखि कै।
छाड़िया राह घर अधर माहीं ॥ ६ ॥

(९)

चौदहौ तबक किताब कूरान मैं।
पीर चौबीस पुनि वोहू गावा ॥ १ ॥
अल्ला रचि खेल सब जहान आलम किया।
आब और ताब पट अबर आवा ॥ २ ॥
सरा[1] का खेल मुहम्मद से कर कहै।
यही बिधि तुरक तकरीर लावा ॥ ३ ॥
जैन मत माहिँ गुनिष्ठान चौदह कहै।
बिधि भगवान चौबीस गावा ॥ ४ ॥
रिषबजी रचन संसार की थापना।
आपने मते की वोहू लावा ॥ ५ ॥
बेद पुरान संसार बाम्हन कहै।
भागवत भगवान चौबीस गावा ॥ ६ ॥
चतुरदस लोक लीला बरनन करै।
रचा बैराट जग बिधि बनावा ॥ ७ ॥
झूठ और साँच कहो कौन की कीजिये।
हिंदू और तुरक पढ़ि भूल पावा ॥ ८ ॥
जैन सोई जिंद बुँद आदि को ना लखा।
तीन मैं किनहूँ नहिँ चीन्हि पावा ॥ ९ ॥
दास तुलसी कहै अगम घर अधर है।
संत बिन भेद नहिँ हाथ आवा ॥ १० ॥

(१०)

अगम की लहर सुख सहर हुसियार हो।
मिहर बिच कहर दिल दूर जावै ॥ १ ॥

---

*शरअ=मुसलमानों की मजहबी किताब।

जहर जंजाल बिच जहान में फसि रहा।
सैल मन मसखरे भरम भावै ॥ २ ॥
जतन की बुंद से मगन मन को किया।
रचा अस्थूल तन रतन पावै ॥ ३ ॥
दास तुलसी कहै अगम दरियाव में।
बहा बेचेत भव कूप आवै ॥ ४ ॥

(११)

अरे बेहोस गाफिल गुरू ना लखा।
बँधा बेपीर जंजीर माहीं ॥ १ ॥
खुदी खुद खोइ बदबोइ रुह ना रखो।
रहम दिल यार बिन प्यार साईं ॥ २ ॥
बाँधै जम जकड़ करि खंभ दोउ दस्त लै।
फरक मन मूढ़ फिरि समझ भाई ॥ ३ ॥
इसम[1] से खलक जिन ख्याल पैदा किया।
तुलसी मन समझ तन फना जाई ॥ ४ ॥

(१२)

अरे आजिज[2] अधर बिन हो रहा।
पार बिन पिया नित काल खाई ॥ १ ॥
प्यार सोई यार रहमान रब खोजि ले।
लाह अल्लाह बेचून[3] साईं ॥ २ ॥
अरे मुहम्मद मन मान मुमकिल परै।
होय आसान घर अधर माहीं ॥ ३ ॥
दास तुलसी कहै मर्म जिन लख लिया।
सरन की सरम पिया पास जाई ॥ ४ ॥

(१३)

अरे तन सुपन खूब ख्वाब के ज्वाब में।

---

(१) नाम। (२) दीन। (३) अद्वितीय, बेनज़ी

सोई आचेत क्या अजस अई ॥ १ ॥
मास की मसक मन मवासी हो रहा।
खाय भर पेट तनदुरुस्त माहीँ ॥ २ ॥
मनी के मान से स्यान निरखत चलै।
घड़ी घड़ियाल घट उमर जाई ॥ ३ ॥
संत जन खोज दिल रोज रखते रहो।
जान तुलसी जम जबर भाई ॥ ४ ॥

(१४)

अरे मन मस्त बेहोस बस हो रहा।
जगत असार बस सार जावै ॥ १ ॥
माया मद मोह जग सरम के भरम से।
करम के फंद फरफंद भावै ॥ २ ॥
पेख दिन चार परिवार सुख देखि ले।
झूठ संसार नहिँ काम आवै ॥ ३ ॥
दास तुलसी नर चेत चल बावरे।
बूझ बिन यार नहिँ पार पावै ॥ ४ ॥

(१५)

बेद पुरान कुरान में देख ले।
नेत ही नेत कर कहत भागी ॥ १ ॥
जाहि की साख पंडित्त पढ़ सब कहैं।
बूझ बिन सूझ पर तिमर लागी ॥ २ ॥
अगम रस राह गुर संत बिन अंत ना।
जक्क मतमंद का संग त्यागी ॥ ३ ॥
खोल के चसम लख खसम को खोज ले।
जान भ्रम खानि भव भीख माँगी ॥ ४ ॥
दास तुलसी घर घट्ट में खोज ले।
पट्ट के खुले से सुरत लागी ॥ ५ ॥

(१६)

बेद पुरान सब झूठ का खेल है।
लूट बदफेल सब खोसि खाया ॥ १ ॥
भया मन जोस भव भागवत पढ़े से।
चढ़ा मन ज्ञान का मान आया ॥ २ ॥
अगम की राह का खोज कीन्हा नहीँ।
शेज रस ज्ञान बस लोभ माया ॥ ३ ॥
सुनै जिजमान परमान गये खानि मेँ।
मुक्ति नित कहत भइ भूत काया ॥ ४ ॥
दास तुलसी टुक जीभ के कारने।
अल्प सुख मान फिर नरक पाया ॥ ५ ॥

(१७)

अरे किताब कुरान को खोज ले।
अलख अल्लाह खुद खुदा भाई ॥ १ ॥
कौन मकान महजीत मस्सीत मेँ।
जिमीँ असमान विच कौन ठाईँ ॥ २ ॥
हर वखत रोजा निमाज और बाँग दे।
खुदा दीदार नहिँ खोज पाई ॥ ३ ॥
खोजते खोजते खलक सब खप गया।
टेकही टेक खुद खुदी खाई ॥ ४ ॥
दास तुलसी कहै खुदा खुद आप है।
रूह से निरख दिल देख जाई ॥ ५ ॥

(१८)

सिखर के मुकर पर अजब संदूक है।
सुरति बंदूक गज गुमठ मारा ॥ १ ॥
मल बैराग बारूत पर बैठि के।
ज्ञान निस्सान ले गगन फारा ॥ २ ॥

जोग रस राह मन तोड़ तोड़ा किया।
मन्न से मगन रस अगिनि जारा ॥ ३ ॥
करन बंदूक की राह रंजक धरी।
गोली गढ़ तोड़ गई गगन पारा ॥ ४ ॥
दास तुलसी सतसंग के रंग से।
तोड़ फरफंद धसी अगम धारा ॥ ५ ॥

(१९)

अरे बेहोस उस यार को खोज ले।
यार के प्यार से सार पावै ॥ १ ॥
दिया जिव जान जो पिया पहिचान ले।
राह से रोसनी फजल आवै ॥ २ ॥
छिनक में कयागढ़ हाल पैदा किया।
मूल को छाड़ि बद भूल भावै ॥ ३ ॥
गुनह जहीर[1] जंजीर जम तौक में।
जबर कर बंद जब कूट लावै ॥ ४ ॥
दास तुलसी कहै सुकर की राह ले।
कुफर से कूर को दूर भावै ॥ ५ ॥

(२०)

अजब आनार दोइ भिस्त के द्वार में।
लखै दुरवेस फकीर प्यारा ॥ १ ॥
ऐन के अधर दुइ चसम के बीच में।
खसम को खोज जहँ झलक तारा ॥ २ ॥
उसी बिच फक्र[2] खुद खुदा का तख्त है।
सिस्त[3] से देख जहाँ भिस्त सारा ॥ ३ ॥
तुलसी सत मत मुरसिद के हाथ है।
मुरीद दिल रूह दोजख नियारा ॥ ४ ॥

---

(१) संगी। २ केवल। (३) निशाना।

(२१)

अगमगढ़ राह का किला चढ़ तोड़िया ।
नृपति मनराय दल मोह मारा ॥ १ ॥
ज्ञान कासिद बिबेक नाकी[1] बने ।
जबर सतसंग दी खबर सारा ॥ २ ॥
छिमा संतोष बैराग दल दया का ।
घुरै निस्सान चढ़ किला घेरा ॥ ३ ॥
सुरति चढ़ि बुरज की सुरँग में धस गई ।
गरज गिरनार[2] बल बुरज ढारा ॥ ४ ॥
पाँच पचीस मन मोरचा मिट गये ।
मोह मन जकड़ जंजीर डारा ॥ ५ ॥
सत्त का अमल दल सुरत की हाकिमी ।
हुकम जहँ होत है सब्द न्यारा ॥ ६ ॥
दास तुलसी गई फतह कर अगम को ।
सुरति सजि मिली जहँ प्रीतम प्यारा ॥ ७ ॥

(२२)

अधर है अगिन आकास के मद्धि में ।
जरत परचंड विच कँवल फूला ॥ १ ॥
सुरति सम्हाल मन मगन होय देखिया ।
परख गत गवन में भवन मूला ॥ २ ॥
वोही पत पिया की पीर लागी रहै ।
रैन और दिवस नित उठत सूला ॥ ३ ॥
बिरह की बिथा बेहाल बस में रहूँ ।
तन मन बदन रस रीत भूला ॥ ४ ॥
दास तुलसी तक सुन्न में समझ ले ।
धुन्न धधकार चढ़ अगम झूला ॥ ५ ॥

---

(१) नाकी = दंग । (२) एक पहाड़ का नाम—यहाँ अगम अर्थ [illegible]

(२३)

अगम इक चौज में मौज न्यारी लखो।
अंड बिच निरख ब्रह्मंड सारा ॥ १ ॥
सुरति की सैल नित महल में बस रही।
निकरि पट खोल गई गगन पारा ॥ २ ॥
अकल और सकल लख लोक न्यारी भई।
गइ घर अधर पर सुरति लारा ॥ ३ ॥
आद और अंत घर संत पहिचानिया।
दास तुलसी अज अमर न्यारा ॥ ४ ॥

(२४)

संत की राह घर अगम के पार है।
सार सोई न्यार नहिं जगत जाना ॥ १ ॥
मनी के मान से धनी को ना लखा।
संत और साध सोई नाहिं माना ॥ २ ॥
पकड़ि जम जकड़ि करि बँधे जंजीर में।
अरे बेपीर पड़े नरक खाना ॥ ३ ॥
दास तुलसी कहै संत की टहल में।
जीव की काल नहिं करत हाना ॥ ४ ॥

(२५)

देख ले जगत में लख कोई अमर है।
मरन और जिवन बिच जीव सारे ॥ १ ॥
अंड और पिंड चर अचर को निरखि ले।
काल ने घेर कर पकर मारे ॥ २ ॥
देख दिन चार संसार का कार है।
पार बिन सार का भेद हारे ॥ ३ ॥
दास तुलसी कहै बैठ सतसंग में।
माया और मोह कर दूर सारे ॥ ४ ॥

ग़ज़ल

(१)

अंडे के बीच ताक पाक पीँजरा ।
साहिब की मेहर सुकर जीव जहँ धरा ॥
आलम कुल खलक बीच खुद खुदाई ।
तुलसी तन बदन रमक रोसनी छाई ॥

(२)

तेरे तन बीच देख अंदर प्यारा ।
दिल को दौड़ाव रूह राह की लारा ॥
प्यारा सोइ यार प्यार जो पिउ पावै ।
मुरसिद बिन सूझ बूझ हाथ न आवै ॥

(३)

तन मन जिन खाक स्याह कीन्ह मुरीदी ।
जैसे तन बीच घाव मार छुरी ली ॥
जिसका यह हाल सोई अंदर पैठा ।
तुलसी सोइ यार मेहर मारग बैठा ॥

(४)

मेरे खुद प्यार यार बाग लगाया ।
जाहिर जहूर नूर जग में छाया ॥
देखा दिलदार प्यार अजब साहिबी ।
रोसन गुल बदन यार प्यार अमर जी ॥
जिन जिन हिये हेर सहर साहिब पाया ।
मुरसिद की मेहर कोई मारग आया ॥
लागी इक मूर वस्त दस्त के माहीँ ।
तुलसी तारीफ़ खूब जिन जिन पाई ॥

(५)

अन्दर अनूप रूप भूप साहिबी ।
देखा दिलदार यार बात प्यार की ॥

दीदा दिल लहर मेहर सहर आसिकी।
पहुँचे कोइ समझ सूर नूर बास की॥
जिसका यह हाल सोई आसिक न्यारा।
खिलकत का खेल झूठ जक्क पसारा॥
ऐसे कोइ अलख लोग बूझ बिचारै।
तुलसी दरवेस सोई मन को मारै॥

(६)

रोजा तीसों निवाज बंग पुकारै।
कर हलाल कुफ़र रोज मुरगी मारै॥
मुरगी का खुदा खोज पूछे भाई।
रोजा निवाज बंग बाद गँवाई॥

(७)

रोजा पच्चीस पाँच तीस निकारा।
मन का कुल कुफ़र सोई मुरगी मारा॥
रूह को असमान बीच अंदर लावै।
तुलसी खुद यार रोज रोजा भावै॥

(८)

अंदर असमान बीच आलम अल्ला।
करते कोइ मूल मुकर चालिस चिल्ला॥
रोजा निवाज बंग अंदर माहीँ।
आसिक मासूक मिहर दीदा साईँ॥

(९)

अंदर पच्चीस पाँच तीन बीच मेँ।
चिल्ले चालीस चसम रोसन मन मेँ॥
दिल का दरियाव देख प्यारी प्यारा।
बेचूँ चिन्ह ना नमून सब से न्यारा॥

(१०)

पूजा और सेवा कर घंट बजावै।
कर कर पाखंड लोग बहुत रिझावै॥

अरधे और उरधे बिच कर ले मेला।
तुलसी मुस्ताक मेहर अद्भुत खेला॥

(११)

कर कर परसाद भोग ठाकुर लावै।
पाहन बेहोस कहूँ ठाकुर खावै॥
चेतन आतम बरम्ह सब के माहीं।
पावै परसाद देख दीदा जाई॥

(१२)

जैनी जोइ जैन नैन अंधे भाई।
आतम को छाड़ि पुजे पाहन जाई॥
कर कर पूजा विधान अष्टक गावै।
भादौं विधि मंदिर सब स्रावग आवै॥
चावल रँग माँड़ि मँड़ै मन से आप का।
नंदेसुर पूज दीप करै बाप का॥
और अढ़ाई दीप माँड़ि करते पूजा।
अंदर आतम बरम्ह नाहीं सूझा॥
करते कल्यान पाँच कामधेन की।
पूजै बेहोस फूटि हिये नैन की॥
जिन ने तन साज किया जानो भाई।
वा की विधि भूल भाव पाहन लाई॥
तुलसी ये फंद कीन्ह काल पसारा।
धरमन की टेक बाँधि बूड़े सारा॥

(१३)

ढूंढ़त गिरनार सिखर आबू जाते।
सतगुरु बिन मेहर नहीं काबू पाते॥
बूझै सतसंग संग संतन माहीं।
अंदर पट खोल बोल देत दिखाई॥

जिन के बड़ भाग सोई निरख निहारा ।
रहते जग बीच बीच जग से न्यारा ॥
उन की वोही चाल हाल घट में देखै ।
पूछै कोइ चीन्ह नहीं बात बिसेखै ॥
खोजत पाहार सिखर मूरत माहीं ।
तुलसी नौकार जपैं अंधे भाई ॥

(१४)

तन हबूब जैसे ज्यों फूटै बुल्ला ।
पढ़ि किताब भूले दोउ काजी मुल्ला ॥
तन मन महजीत बीच बंग निवाजा ।
बूझो हर दमहि नित्त उठै अवाजा ॥

(१५)

मक्का महजीत कोऊ हज्ज को जाते ।
बदन खूब महजित में मन नहिं लाते ॥
तन मन महजीत खुद खुदाइ बनाई ।
तुलसी ईमान नहीं लावै भाई ॥

(१६)

तन के तत मंदर को देखो जाई ।
आतम सा देव जाहि पूजो भाई ॥
पाहन की मूरत का झूठ पसारा ।
तुलसी पूजै बेहोस जन्म बिगारा ॥

(१७)

तेरा है यार तेरे तन के माहीं ।
कहते सब संत साध सास्तर भाई ॥
पूजन आतम आदि सब ने गाई ।
भूखे को देख दीन देना जाई ॥
तुलसी यह तत्त मत्त चीन्हे नाहीं ।
चीन्हे जिन भेद पाइ बूझे साईं ॥

(१८)

बिंदाबन बिंद कीन्ह सोई साचा।
गो सोई गोपिन के साथ बन बन नाचा॥
गो में मन बिधा सोई गोबिँद भाई।
मनुवाँ गोपाल मूढ़ इंद्रिन माहीँ॥

(१९)

इंद्री बसुदेव भेव सेवै मन को।
नाद सोई नंद फंद जानै तन को॥
जिन ने तन सोध लिया सोई जसोधा।
पंडव तत पाँच और झूठा सोदा॥

(२०)

करते ईमान हसन हुसन ताजिया।
बाँस पंच[1] छोल कागदोँ से मढ़ि लिया॥
मुहर्रम दस रोज बाज गाज मतलबी।
नौमी तारीख चाँद रात कतल की॥
भ्याने उठ फेर सहर पानी डारैँ।
रोवैँ सिर कूट कूट छाती मारैँ॥
बाँसोँ का बना बूत कागद केरा।
करते चालीस रोज सोग घनेरा॥
ऐसे बेहोस बात बूझैँ नाहीँ।
कागद सँग पंच रंग रोवैँ भाई॥
तुलसी यह तरक तुरक जानैँ नाहीँ।
काजी और मुल्ला दोऊ अंधे भाई॥

(२१)

तन में नूर हुसन बदन किया ताजिया।
हंस सोइ हुसन जीव ता में धर दिया॥

---

(१) फराटा।

मोह की रम[1] राह सोई मुहरम भाई ।
भूले ईमान हुसन कीना जाई ॥
खुद खुदाय आप बदन ताजिया किया ।
है हसन हंस बदन हुसन बध लिया ॥
माया की मकड़ी ने जाल बिछाया ।
गो के जो गिरगिट ने सैन सुनाया ॥
भूला दिल रूह राह याद यार की ।
तुलसी तन हसन हुसन मार कतल की ॥

(२२)

बाम्हन दसरथ का पूत राम को गावै ।
कह कह भगवान वोहू जक्त सुनावै ॥
माता सुत पूत कौसिला का कहाई ।
भरत चत्र लछमन का कहिये भाई ॥
ये तो जग जीव बीच कर्म बिचारा ।
बाम्हन जेहि भाख कहै ब्रह्म अपारा ॥
पढ़ पढ़ कर तत्त तोर सूझै नाहीं ।
अंधे से अंध राह क्योंकर पाई ॥
तुलसी सब जक्त भिष्ट बाम्हन कीन्हा ।
मालिक मग छाड़ लोभ मारग लीन्हा ॥

(२३)

रमता है राम तेरे तन के माहीं ।
घट घट में खोज कहूँ अंतै नाहीं ॥
जो जो ब्रह्मंड तेरे पिंड पसारा ।
अंदर में देख कहूँ है नहीं न्यारा ॥
कीन्हा बैराट रूप माया घेरा ।
भव में भगवान राम जम का चेरा ॥

---

(१) बिहार करना, बिचरना ।

चाँद और सूर नैन ताही केरा।
राहू और केत देत पीर घनेरा॥
अपनी जो आप पीर भोगै भाई।
ता से तैं मुक्ति कहो कैसे पाई॥
भूला बैराट मुक्ति उनकी नाहीं।
आये औतारी की कौन चलाई॥
पत्थर की मूरत का राम बनाया।
साचे जो राम काल घर घर खाया॥
सीता और राम कहूँ बन के जोगा।
कर्मन के बंद बीच करते भोगा॥
जड़ सँग और चेतन की गाँठ बँधानी।
ता ते बेहाल राम चारो खानी॥
कहते तुम सब में सब माहिँ बिराजा।
रहता जग बीच खान सब में साजा॥
जहँ लग यह अंड खंड कीन्ह पसारा।
पिंडा चौरासी लख तुलसी सारा॥

(२४)

कहिये बैराट राम मन को भाई।
संत मता सोई भिन कहते गाई॥
मन लस दस इंद्रिन में मैं रत आया।
रहिया दस इंद्रिन में दसरथ गाया॥
भव में रित भरत नाम मन को भाई।
चाहे तिरगुन्न चतुरगुन्न कहाई॥
कौसिलाय संग कौसिला को गाई।
छः रसों की लार लाग लखन कहाई॥
तुलसी परिवार राम मन को गाई।
बाम्हन बेहोस अंध अंत लगाई॥

(२५)

संतन का प्यारा यार न्यारा भाई।
जहँ नहिँ बैराट खोज निर्गुन नाहीँ॥
ब्रह्मा और बेद नहीँ जानै भेवा।
संकर और सेस नहीँ पावै देवा॥
जोगी और रिसी मुनी पहुँचै नाहीँ।
सिम्रत और सास्तर की कौन चलाई॥
जहँ जोती निज निराकार कोऊ न जावै।
संत पंथ राह सोई अगम कहावै॥
बाम्हन पंडित्त जक्क जीव बिचारा।
जानै कहा भीख माँगि पेट सँवारा॥
जग का मल मैल माँगि जनम बिगारा।
बह बह सब बैल भये भव की धारा॥
निर्गुन और सर्गुन का नाहीँ खेला।
संत पंथ तुलसी कहै अगम अकेला॥

(६)

ऐ बेहोस प्यारे तैँ यार बिसारा।
खिलकत का खेल जान सबै झूठ पसारा॥
इक पल में फना होत देख जक्क असारा।
यह नैनोँ से देख तेरा को है प्यारा॥
तेरी तू आदि देख कहँ से आया।
उस यार को बिसार के लौ कहँ को लाया॥
हम ने दिल बीच यार अंदर पाया।
उस बिरहिन के तन में रोम रोम में छाया॥
वह मरती बेहाल पिया पिया पुकारै।
तन मन में नहिँ होस नहीँ बदन निहारै॥
ऐसी बेहोस सूल सहै कटारी।
जैसे तन बीच सेल तेगा मारी॥

ऐसी बिरहिन के बीच बिरह सँवारी ।
सोई बिरहिन तो लगी पिउ को प्यारी ॥
जिसका यह हाल सोई अधर सिधारी ।
तुलसी सो नारि भई जग से न्यारी ॥

ककहरा

कक्का कहूँ परथम गुरु साध आद सब संत बखानी ।
जुगन जुगन की बात कहूँ उतपति बिधि बानी ॥
अंड नहीं ब्रह्मंड पिंड नहिँ रचना ठानी ।
अरे हाँरे तुलसी हता नहीँ बैराट नहीँ चौरासी खानी ॥ १ ॥
खख्खा खुज़ी कहूँ टकसार काल जग रचना कीन्हा ।
वो दयाल सतपुरुष तास कोउ भेद न चीन्हा ॥
तीन लोक के पार सार सतलोक है ।
अरे हाँरे तुलसी चौथा पद परमान छान स्तुति को कहै ॥ २ ॥
गग्गा गगन नहीं आकास भास भया सुन्नि से ।
सुन्नि धुन्नि से सब्द सब्द से गुन्नि है ॥
निरंकार जम जोति जाल जग डारिया ।
अरे हाँरे तुलसी ब्रह्मा रचिया बेद कैद करि मारिया ॥ ३ ॥
घघ्घा घर भूले सब बाट घाट घट ना मिलै ।
आद पुरुष पद छाँड़ि काल घर को चलै ॥
तिर देवा पट पार काढ़ि कहो को सकै ।
अरे हाँरे तुलसी सिम्रत सास्तर वेद भेद मेँ सब पकै ॥ ४ ॥
नन्ना नहीँ रूप नहिँ रेख भेप ढूँढत फिरै ।
भरमै चारो धाम काम इक ना सरै ॥
पत्थर पानी साथ हाथ कछु ना लगा ।
अरे हाँरे तुलसी पिया रहे घर माहिँ ताहि सँग ना पगा ॥ ५ ॥
चच्चा चले जात नर भूल सूल ता से सहै ।

सतसँग मिलै न अंत संत बिन को कहै ॥
सतगुर मिलैं दयाल भेद कहैं मूर को ।
अरे हाँरे तुलसी कर्म काल को मेट करैं जम दूरि को ॥ ६ ॥
छछ्छा छिन छिन सुरति सँवार लार दृग के रहो ।
तन मन दर्पन माँज साज स्रुति से गहो ॥
लगन लगै लख पार सार तब पाइया ।
अरे हाँरे तुलसी संत चरन की धूर नूर दर्साइया ॥ ७ ॥
जज्जा जिन जिन सुरति सँवारि काल डर ना रही ।
चढ़ी गगन पर धाय पाय पति पै गई ॥
लिया अगमपुर धाम जाइ पिउ भेंटिया ।
अरे हाँरे तुलसी जन्म जन्म भ्रम भाव दाव दुख मेटिया ॥ ८ ॥
झझ्झा झलकत नूर जहूर हरष हिये में भई ।
निरखा रबि उजियार द्वार पच्छिम गई ॥
सूरत चीन्हा भेद भरम तजि भागिया ।
अरे हाँरे तुलसी सब्द सुरति भया मेल खेल खुलि त्यागिया ॥९॥
टट्टा टोइ लिया सतसंग रंग गुर ने दिया ।
जुगन जुगन तजि भूल आदि घर को लिया ॥
सिव ब्रह्मा और बेद बिस्नु नहिं आ सकै ।
अरे हाँरे तुलसी निरंकाल[1] सोइ काल जोति नहिं जा सकै ॥१०॥
ठठ्ठा ठौर ठिकाना ठाँव गाँव पिया को कही ।
निरंकार के पार तहाँ तुलसी रही ॥
सत्तनाम सुख धाम अमरपुर लोक है ।
अरे हाँरे तुलसी चौथा पद जद जाय संत सोई कहै ॥ ११ ॥
डड्डा डगर संत का पंथ अंत कहो को लखै ।
जग पंडित और भेष भूल भव में पकै ॥

(१) निराकार ।

तीरथ नेम अचार भार सिर पर लिया ।
अरे हाँरे तुलसी कर्म धर्म अभिमान जानि करि ये किया ॥१२॥
ढढ्ढा ढिँग ही पूरन बस्त कस्द कोइ ना करै ।
गुरू संत बिन भेद पार कैसे परै ॥
पढ़ि पढ़ि बेद पुरान ज्ञान करि करि मुए ।
अरे हाँरे तुलसी कथा सुने सोइ जोनि पौन भूतै भये ॥ १३ ॥
णणा नीच ऊँच नहिँ देख पेख सब एक पसारा ।
नहिँ बाम्हन नहिँ सूद्र नहीं छत्री कोउ न्यारा ॥
नहीँ वैस की जाति सकल घट एक पसारा ।
अरे हाँरे तुलसी जो करि जानै दोइ खोइ जिन जनम बिगारा ॥१४॥
तत्ता तुरत तत्त को खोज रोज रच दरस दिखावै ।
अगम निगम का भेद घाट घट में जब पावै ॥
बिना तत्त नहिँ मूल भूल चौरासी आवै ।
अरे हाँरे तुलसी तत मत सूरत साच सब्द में जाय मिलावै ॥१५॥
थथ्था थिर होइ सुरति लगाव थोब थिर मन को राखौ ।
इंद्री चलै न जाय पाय गुन को नहिँ भाखौ ॥
प्रकृति पचीसौं बास महल से काढ़ निकारौ ।
अरे हाँरे तुलसी जब लग है कुछ हाथ संत की टहल बिचारौ ॥१६॥
दद्दा देखो दृष्टि पसारि सार कुछ जग में नाहीँ ।
दिना चार का रंग संग नहिँ जावै भाई ॥
धन संपत परिवार काम एको नहिँ आवै ।
अरे हाँरे तुलसी दीपक संग पतंग प्रान छिन में चलि जावै ॥१७॥
धध्धा ध्यान धरो घट माहिँ सुरति को काढ़ि निकारी ।
उलटि चलो असमान हिये बिच होत उजारी ॥
ता उजियारे बैठि लखो ब्रह्मंड पसारा ।
अरे हाँरे तुलसी जो अंड बिच जीव निरखि भिनि भिनि बिध सारा ॥१८॥

पप्पा पड़े जगत के माहिँ भक्ति सुपने नहिँ भावै ॥
बाम्हन पंडित भेष सबै पुनि दान करावै ॥
जिन कीन्हा तन साज ताहि से नेह न लावै ।
अरे हाँरे तुलसी जब जम पकरै बाँह पूत को कौन छुड़ावै ॥१६॥
फफ्फा फूले फूले फिरैँ देखि धन धाम बड़ाई ।
तन फुलेल और तेल चाम को चुपरैँ भाई ॥
दिना चारि का खेल मिलै फिर खाक मेँ ।
अरे हाँरे तुलसी पकरि फिरिस्ते करैँ सलाई आँखि मेँ ॥२०॥
बब्बा बड़ा जगत जंजाल जाल जम फाँसी डारी ।
ज्योँ धीमर जल माहिँ पकर करि मछरी मारी ॥
निकरि जाय जब प्रान काल चोटी धर खींचा ।
अरे हाँरे तुलसी परिहौ जम मुख माहिँ डाढ़ चक्की ज्योँ पीसा ॥२१॥
भभ्भा भगी सुरति घट माहिँ जाय जो देखा भाई ।
सुखमनि सेज सँवारि सुन्नि मेँ सुरति लगाइ ॥
मुकरि माहिँ दीदार दरस कीन्हा सोइ जानै ।
अरे हाँरे तुलसी ज्योँ स्वाँती की बूँद सीप बिरहिन पहचानै ॥२२॥
मम्मा मुसकिल होइ आसान जानि कोइ ना करै ।
करै तत्त को खोज काज घट मेँ सरै ॥
बाहर है सब झूँठ लूटि जम लेइँगे ।
अरे हाँरे तुलसी तन छूटै बेहाल बहुत दुख देइँगे ॥ २३ ॥
यय्या या को चीन्ह बिचार कहो ये को न है ।
बोलै सब घट माहिँ परख कित पौन है ॥
धरती अगिनि अकास नीर कोउ कौन था ।
अरे हाँरे तुलसी रचा नहीँ बैराट बोलता कहँ हता ॥२४॥
ररा राति दिवस कर खोज रोज रस ज्ञान सुनावै ।
घट घट उठै अवाज तासु कोउ भेद न पावै ॥
पिंड माहिँ ब्रह्मंड सकल बिधि रहा समाई ।
अरे हाँरे तुलसी खोलि हिये की आँख संत दीन्हा दरसाई ॥२५॥

लल्ला लोभ लोग पचि मरे कहो को खोज लगावै ।
इन्द्री रस सुख स्वाद भोग नीके करि भावै ॥
राम राम की टेक भेष सब जगत पुकारा ।
अरे हाँरे तुलसी जीवत मिलै न मुक्ति मुए को कहै लबारा ॥२६॥
वव्वा वा को खोज गँवार सार जिन किया पसारा ।
रोम रोम ब्रह्मंड कोटि छबि रबि उजियारा ॥
अजर अमर वह लोक सोक सब दूर बहावै ।
अरे हाँरे तुलसी राम कृस्न अवतार दसौं नहिँ जाने पावै ॥२७॥
सस्सा सोच करो मन माहिँ पिंड कहो कौन सँवारा ।
आदि अंत का खेल किया किन बिधि बिधि सारा ॥
निरंकार नहिँ हता नहीँ तब जोति रहाई ।
अरे हाँरे तुलसी ब्रह्मा बिस्नु न बेद नहीँ अवतारी भाई ॥२८॥
हहा हक हजूरी संत पंथ कोइ रहे न भाई ।
सत साहिब सिरदार और कोइ दूजा नाहीँ ॥
कागद स्याही कलम रहे नहिँ लिखनेहारा ।
अरे हाँरे तुलसी आदि अंत नहिँ हता नाहिँ सत असत पसारा॥२९॥
अआ अष्ट कँवल दल फूल मूल मारग तब पावै ।
सहस कँवल दल छाँड़ि कँवल दल दुइ पर आवै ॥
लखे चार दल कँवल ताहि पर सुरति चढ़ावै ।
अरे हाँरे तुलसी तिरबेनी के पार सार सतलोक दिखावै ॥३०॥
ईया इतना भेद अभेद गुरन से मिलै ठिकाना ।
कहैँ अगम की राह सुरति से फोड़ निसाना ॥
गई सिंध के पार यार लख पुरुष पुराना ।
अरे हाँरे तुलसी ज्योँ सलिता जलधार सिंध धस जाय समाना॥३१॥
ऊवा उलटि चले दरबार पार घर अपना पावै ।
बुंद सिंध का मेल खेल खुद आप कहावै ॥

भूली बस्त मिलाप आप अपना दरसावै ।
अरे हाँरे तुलसी जिन चीन्हा यह भेद सोई सत संत कहावै ॥३२॥
अरल ककहरा अंक बंक बत्तीस बखाना ।
संत पंथ अज अमर आदि घर अपना जाना ॥
जो कोइ करै बिबेक एक सब घट पहिचानै ।
अरे हाँरे तुलसी सतगुर मिलै दयाल काल गत भिन भिन छानै॥३३॥

अरियल

(१)

हंसन का इक देस जहाँ हंसनी बियानी ।
ता सुत भयो मराल काग की बोलै बानी ॥
नीर छीर दोउ छानि जान करि डारै पानी ।
अरे हाँरे तुलसी जो कोइ न्यारा करै प्रान होय ता की हानी ॥

(२)

साधो करो बिबेक कहौ कह करिये भाई ।
सरप छछूँदर निगल उगल नहिं खावै जाई ॥
या को करौ बिचार बिना गुर मिलै न बाटी ।
अरे हाँरे तुलसी तिरबेनी की राह संत सब उतरैं घाटी ॥

(३)

करि प्रयाग असनान अगम गम तुरत लखावै ।
काग गवन बुधि छाँडि हंस का हंस कहावै ॥
चोँच छीर में डारि नीर की सुधि बिसराना ।
अरे हाँरे तुलसी चलै हंस की चाल मानसर अपना जाना ॥

(४)

पुरुष परे दरबार हंस होइ चलै अगारी ।
सुति जहाज पर बैठि दृष्टि भव उतरै पारी ॥
जहँ संतन का देस भेष घर अपना पावै ।
अरे हाँरे तुलसी बिन सतगुर नहिं भेद खेद खुलि फिरि फिरि [illegible] ॥

(५)

ज्योँ घूघर[१] मति संत दिवस को दिखै न भाई ।
  निसा[२] दृष्टि को खोलि चोल[३] जब चरने जाई ॥
बैरी ताकै काग दिवस चोरी से खोवै ।
  अरे हाँरे तुलसी उड़ै रात अँधियार मौज से सब कुछ जोवै ॥

(६)

कमठ गगन पर चढ़ै मच्छ अँड उड़ै अकासा ।
  गिरा गुहा के पास स्वाँस सुखमनी निवासा ॥
जरत जोति अस होत दृष्टि पर दीपक बारा ।
  अरे हाँरे तुलसी बिन बाती बिन तेल फैल चहुँ दिसि उँजियारा ॥

(७)

सिंध पौलि के पार झार नित उठि उठि आवै ।
  जहाँ उरधमुख कूप धूप बिन रबि दरसावै ॥
सुरति सिरोमन सील लील गिरि परै निसानी ।
  अरे हाँरे तुलसी जहँ नित उठै अवाज साज करि सुरति समानी ॥

(८)

सब्द सब्द सब कहैं सब्द का सुनो ठिकाना ।
  सार सब्द है न्यार पार निरसब्द कहाना ॥
सुन्न सहर से सब्द आदि नित उठै अवाजा ।
  अरे हाँरे तुलसी निरसब्दी धुन सुन्नि सुन्नि से न्यारा गाजा ॥

(९)

निरसब्दी बिन सब्द लिखन पढ़ने में नाहीँ ।
  लिखन पढ़न में भया सब्द में आया भाई ॥
अच्छर जहाँ लगि सब्द बोल में सभी कहाया ।
  अरे हाँरे तुलसी निःअच्छर है न्यार संत ने सैन बुझाया ॥

(१०)

निःअच्छर पद पार अच्छर उतपति में आया ।
  सोइ अच्छर है काल जाल जग बीच बिछाया ॥

---

(१) घुघुआ, उल्लू । (२) रात । (३) चुहल से, मगन ।

ाद नेत कर ताहि ब्रह्म कर कहत बखाना ।
अरे हाँरे तुलसी संत मता कछु और और कछु संत न जाना ॥
(११)
रूप रेख नहिँ नाम ठाम नहिँ कहत अनामी ।
नाम रूप से भिन्न भिन्न सोइ कहत बखानी ॥
त्त नाम सतलोक सोक सब दूर बहावै ।
अरे हाँरे तुलसी तीन लोक में काल ताहि निर्गुन करि गावै ॥
(१२)
निर्गुन कहिये ब्रह्म बेद परमातम गावा ।
पाँच तत्त गुन बँधा जीव आतमा कहावा ॥
आतम इंद्री बास फाँस बिच रहा फँसाई ।
अरे हाँरे तुलसी जड़ चेतन की गाँठ ठाठ मन जग उपजाई ॥
(१३)
मन है पूरा दूत मूत से रचना ठानी ।
ब्रह्मा कियो बनाइ रजोगुन ता को जानी ॥
तम संकर सत बिस्नु तीन मन ही उपजाया ।
अरे हाँरे तुलसी मन आया गुन माहिँ ताहि सरगुन करि गाया ॥
(१४)
आदि अंत सब संत सत्त कर कहत सुनाई ।
अगम निगम का भेद देत घट में दरसाई ॥
संत बिना नहिँ पार सार को कहै ठिकाना ।
अरे हाँरे तुलसी सूरत चढ़ी अकास फोड़ कर गई निसाना ॥
(१५)
संत मता है सार और सब जाल पसारा ।
परम हंस जग भेष बहे सब मन की लारा ॥
संत बिना महिँ घाट बाट एको नहिँ पावै ।
अरे हाँरे तुलसी भटकि भटकि भ्रम खान संत बिन भव में आवै ॥
(१६)
सरन संत जो जीव जिन्हन धोखा नहिँ खाया
बेद भेद सन मेल पेल घानी में आया ॥

भटकि भटकि भव माहिँ बहुरि चौरासी पावै ।
अरे हाँरे तुलसी सतगुर सरन निवास सुरति चरनन पर लावै ॥

(१७)

भव जल अगम अथाह थाह नहिँ मिलै ठिकाना ।
सतगुर केवट मिलै पार घर अपना जाना ॥
जग रचना जंजाल जीव माया ने घेरा ।
अरे हाँरे तुलसी लोभ मोह बस परै करै चौरासी फेरा ॥

(१८)

देखा जगत पसार लार कछु चलै न भाई ।
धाइ धाइ सब मरैँ धनहिँ को धावैँ जाई ।
प्रान निकर जब जाय नहीँ सँग खरची लीन्हा ।
अरे हाँरे तुलसी अँधरा जग अँधियार संत सँग कबहुँ न कीन्हा ॥

(१९)

जम बड़ जबर कराल चाल कोइ लखै न भाई ।
जब कर बाँधै हाथ संत बिन कौन छुड़ाई ॥
बड़े कहैँ भगवान ताहि को मारि गिराया ।
अरे हाँरे तुलसी राम कृस्न औतार दसोँ नहिँ बचने पाया ॥

(२०)

ब्रह्मा बिस्नु महेस सेस सब बाँधे तानी ।
नारद सुखदेव ब्यास फाँस कर डारे खानी ॥
हनूमान और जनक भभीपन बचे न भाइ ।
अरे हाँरे तुलसी ऋषी मुनी को गनै काल धर सब को खाई ॥

(२१)

संत सरन जो पड़े ताहि का लगा ठिकाना ।
और कहूँ नहिँ कुसल सकल बैराट चबाना ॥
काल संत से डरै सीस चरनन पर डारा ।
अरे हाँरे तुलसी बिना संत नहिँ ठौर और कहुँ नाहिँ उबारा ॥

(२२)

परमहंस कहैँ ब्रह्म झूँठ सब कर्म फसाना ।
जड़ चेतन की गाँठ ब्रह्म कहो कैसे जाना ॥

चेतन चढ़ै अकास फोड़ ब्रह्मंड निहारा ।
अरे हाँरे तुलसी बिना पिंड ब्रह्मंड कहन नहिं ता की सारा ॥

(२३)

जग पंडित और भेष भेद जोगी नहिं जानै ।
जग इंद्री रस भोग जोग इंद्री नहिं मानै ॥
संग्रह त्यागन झूँठ सकल यह मन को खेला ।
अरे हाँरे तुलसी संग्रह त्यागन कर्म भर्म दोउ फिर फिर पेला ॥

(२४)

सास्तर बेद पुरान पढ़े ब्याकरन अठारा ।
पढ़ि पढ़ि मुए लबार संत गति नाहिं बिचारा ॥
घर घर कथा पुरान जान कर लोभ बढ़ाई ।
अरे हाँरे तुलसी कुटँब काज पच मरे पेट भर साँच न आई ॥

(२५)

इंद्री रस सुख स्वाद बाद ले जन्म बिगारा ।
जिभ्या रस बस काज पेट भया बिष्टा सारा ॥
टुक जीवन के काज लाज मन में नहिं आवै ।
अरे हाँरे तुलसी काल खड़ा सिर उपर घड़ी घड़ियाल बजावै ॥

कुंडलिया

(१)

सतगुर दीन दयाल बिन जुग जुग मारे जायँ ॥
जुग जुग मारे जायँ खायँ फिर जम की लाती ।
ऐसे मूरख लोग चलैं वाही के साथी ॥
सुन सुन कथा पुरान जान कर जनम बिगारा ।
सिम्रित सास्तर बेद काल ने किया पसारा ॥
तुलसी सतसँग संत बिन फिर फिर खेही खायँ ।
सतगुर दीनदयाल बिन जुग जुग मारे जायँ ॥

(२)

तीन लोक के बीच में बंझा गऊ बियाय ॥
बंझा गऊ बियाय खाय दधि माखन सारा ।
बच्छा बड़ा अयान जान रहे ता की लारा ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस दूध से बचे न भाई ।
नर पंछी सुख चैन लेन को नित नित जाई ॥
तुलसी बूझ बिचार बिन दुनिया दधि को जाय ।
तीन लोक के बीच में बंझा गऊ बियाय ॥

(३)

गुरू महरमी संत बिन जग गैया चरि जाय ॥
जग गैया चरि जाय पाय रस रसरी काढ़ी ।
बच्छा चलै न साथ हाथ से बाँधै गाढ़ी ॥
त्रिन बच्छा नित चरै दूध के निकट न जावै ।
जब होवै हुसियार सार[1] करि हर में लावै ॥
तुलसी सूरत सैल से नित नित केल कराय ।
गुरू महरमी संत बिन जग गैया चर जाय ॥

(४)

जुग जुग देखो खेत में काला बैल जुताय ॥
काला बैल जुताय जाय घर अपने नाहीं ।
मालिक करै अवाज फेर करि चितवै नाहीं ॥
ऐसा बड़ा अयान ज्ञान मन में नहिं लावै ।
उलटि चलै असमान आदि घर अपना पावै ॥
तुलसी तत मत चीन्ह कर गति मति भिन्न लखाय ।
जुग जुग देखो खेत में काला बैल जुताय ॥

(५)

देखो फूल गुलाब का सब कोइ गुलकँद खाय ॥
सब कोइ गुलकँद खाय चहै सोइ मिसरी डारै ।

(१) जोत कर ।

वा का लगै सवाद जान कर कोऊ न टारै ॥
जग है बड़ा बेहोस भेद को बूझै नाहीं ।
गुलकँद बिधि है और बूझि ले संतन माहीं ॥
तुलसी सीतल रोगिया सो नगीच नहिँ जाय ।
देखो फूल गुलाब का सब कोइ गुलकँद खाय ॥

(६)

देखो पूत कलार का मद मैया को देय ॥
मद मैया को देय रोज पिये भरि भरि प्याला ।
भट्ठी उतरै जाय करै नित मद से ख्याला ॥
रैन दिवस नित जाय करै नहिँ घर हुसियारी ।
जोरू बड़ी बिचार चार से लखै न पारी ॥
तुलसी फूल निहार के पिया कहै सोइ लेय ।
देखो पूत कलार का मद मैया को देय ॥

(७)

देख जगत की रीति से मन मैला हो जाय ॥
मन मैला हो जाय बिधी अपनी नहिँ लागै ।
करि करि देख बिचार ताहि से दूरहि भागै ॥
सब जग भया अयान बेद की साख बिचारै ।
बाम्हन पंडित भेष चलै ताही की लारै ॥
तुलसी चीन्है भेद को बकि बकि मरै बलाय ।
देख जगत की रीति से मन मैला हो जाय ॥

(८)

जग बेहोस बूझै नहीं संत मते की बात ॥
संत मते की बात लात जम ता तें मारै ।
चोटी धरि धरि काल पकड़ि चौरासी डारै ॥
मद माया के माहिँ बात चित नेक न लावै ।
ऐसा बड़ा अयान जान कर ज्ञान न भावै ॥

तुलसी बूझ बिचार ले अंत किया नहिं साथ ।
जग बेहोस बूझै नहीं संत मते की बात ॥

(९)

जग जग कहते जुग भये जगा न एको बार ॥
जगा न एको बार सार कहो कैसे पावै ।
सोवत जुग जुग भये संत बिन कौन जगावै ॥
पड़े भरम के माहिं बंद से कौन छुड़ावै ।
जो कोइ कहै बिबेक ताहि की नेक न भावै ॥
तुलसी पंडित भेष से सब भूला संसार ।
जग जग कहते जुग भये जगा न एको बार ॥

(१०)

सतसँग सतसँग सब कहैं जग पंडित और भेष ॥
जग पंडित और भेष लखै नहिं का को कहिये ।
छल इंद्री रस भोग बहुरि कैसे कर पैये ॥
सुत त्रिय सपन पसार लार नहिं जावै आई ।
छिना चार का संग रंग ज्यों पतँग उड़ाई ॥
तुलसी जिभ्या स्वाद से गही न सतगुर टेक ।
सतसँग सतसँग सब कहैं जग पंडित और भेष ॥

(११)

तीन लोक कोठी भई पाप पुन्न भया माल ॥
पाप पुन्न भया माल काल जग लादद[1] कीन्हा ।
लदी भर्म की गोन[2] जोन चौरासी दीन्हा ॥
नित नित आवै जाय मुक्ति बिन भई खराबी ।
अंध अंध का संग कहो को करै दराबी ॥
तुलसी बेद पुरान से करी करम की जाल ।
तीन लोक कोठी भई पाप पुन्न भया माल ॥

---

(१) बैल । (२) टाट का बोरा ।

(१२)

जग अजान उलटा चलै ठग ठगिया के साथ ॥
ठग ठगिया के साथ हाथ में कछू न आवै ।
फिरि फिरि मारे जायँ भूलि सब गोता खावैं ॥
करते इष्ट उपास राम से नेह लगावैं ।
कोइ कोइ कृस्न बिचार काल को मर्म न पावैं ॥
तुलसी सतसँग भेद बिन नर तन दुर्लभ जात ।
जग अजान उलटा चलै ठग ठगिया के साथ ॥

(१३)

यह तन दुर्लभ देव को सब कोइ कहत पुकारि ॥
सब कोइ कहत पुकारि देव देही नहिं पावैं ।
ऐसे मूरख लोग स्वर्ग की आस लगावैं ॥
पुन्न छीन सोइ देव स्वर्ग से नरकै आवैं ।
भर्मैं चारो खान पुन्न कहि ताहि रिझावैं ॥
तुलसी तन मन तत लखै स्वर्ग पै करै खखारि ।
यह तन दुर्लभ देव को सब कोइ कहत पुकारि ॥

(१४)

तन पाये तत ना लखा चखा न गुरपद सार ॥
चखा न गुरपद सार पार कहो कैसे पावै ।
जम के हाथ बिकाय लिये चौरासी धावै ॥
जुग जग भरमत जाय काल से बाजी हारा ।
ऐसा जगत अचेत भरम में किया पसारा ॥
तुलसी सतगुर संत बिन करम न काटनहार ।
तन पाये तत ना लखा चखा न गुरपद सार ॥

(१५)

गगन मँडल के बीच में झिलिमिलि झलकत नूर ॥
झिलिमिलि झलकत नूर सूर कोइ बिरला पावै ।
करै तत्त का खोज नहीं चौरासी आवै ॥
सतगुर मिलैं दयाल भेद सब उन से पावै ।
करै संत की टहल महल की खबर लखावै ॥

तुलसी मुरदा जब बनै तब पावै गुर पूर ।
गगन .मँडल के बीच में झिलिमिलि झलकत नूर ॥

(१६)

लखि अकास औंधा कुआ हुआ नूर का तेज ।
हुआ नूर का तेज जोति में झलक दिखावा ॥
भया प्रकास उजार झलक आतम दरसावा ।
मानसरोवर घाट बाट सोइ निरखि निहारा ॥
सुखमन लगी समाधि साधि करि उतरै पारा ॥
तुलसी जिन जिन लख लिया उन बाँधी पति पैज[1] ।
लखि अकास औंधा कुआ हुआ नूर का तेज ॥

(१७)

गगन बृच्छ के बीच में पंछी पवन चुगाय ॥
पंछी पवन चुगाय जाय सोइ भेद लखावै ।
बंक नाल के पार पवन के भवन समावै ॥
इंगल पिंगल दोउ राह करै जोगी सोई जानै ।
तत अकास के बीच मूल मन से पहिचानै ॥
मन सूरत और पवन को तुलसी दीन लखाय ।
गगन बृच्छ के बीच में पंछी पवन चुगाय ॥

(१८)

सुति चढ़ गई अकास में सोर भया ब्रह्मंड ॥
सोर भया ब्रह्मंड अंड में धधक चढ़ाई ।
जब फूटा असमान गगन में सहज समाई ॥
सुन्न सहर के बीच ब्रह्म से भया मिलापा ।
परमातम पद लेख देख कर भया हुलासा ॥
तुलसी गति मति लखि पड़ी निरख लखा सब अंड ।
सुति चढ़ गई अकास में सोर भया ब्रह्मंड ॥

---

(१) प्रण ।

(१९)

सुरति सब्द चीन्हे बिना यह सब झूठा खेल ॥
यह सब झूठा खेल सैल सुति सहज समावै ।
दर्पन माँजै राख भाख सतगुर अस गावै ॥
सतसंग करे बनाय लखै तब सुरति निसाना ।
भवन गवन कियो बास सरति घर अपना जाना ॥
तुलसी झमक चढ़ाय के पति से कीन्हा मेल ।
सुरत सब्द चीन्हे बिना यह सब झूठा खेल ॥

(२०)

सब्द सब्द सब कहत हैं और सब्द सुन्न के पार ॥
सब्द सुन्न के पार सार सोई सब्द कहावैं ।
पच्छिम द्वार के पार पार के पार समावै ॥
दो दल कँवल मँझार मद्ध के मधि में आवै ।
संतन दिया लखाय सार सोइ सब्द कहावै ॥
तुलसी सत सतलोक से कहूँ कुछ भेद निनार ।
सब्द सब्द सब कहत हैं सब्द सुन्न के पार ॥

(२१)

सब्द सुरत जिन की मिली कर ब्रह्मंड नित सैल ॥
कर ब्रह्मंड नित सैल केल सत साहब चीन्हा ।
अगम निगम का भेद भेद भिन भिन लख लीन्हा ॥
पहुँचे देस मँझार सार का बरनि बषाना ।
पिया पद पदम मँझार पार का कहें ठिकाना ॥
तुलसी सुहागिन पीव की पल पल पति प्रति खेल ।
सब्द सुरत जिन की मिली कर ब्रह्मंड नित सैल ॥

(२२)

यह गत बिरले बूझियाँ चौथे पद मत सार ॥
चौथे पद मत सार लार संतन के पावै ।
कोटिन करैं उपाव लखन में कबहु न आवै ॥

लख अलक्ख और खलक खोज कोइ चीन्ह न
सतगुर मिलैं दयाल भेद छिन में दरसावैं ॥
तुलसी अगम अपार जो को लखि पावे पार ।
यह गत विरले बूझियाँ चौथे पद मत सार ॥

(२३)

जो कोइ सतगुर चीन्हिया जिन का अगम बिचा
जिन का अगम विचार मारि उन काल निकारा ।
वे कहुँ होयँ दयाल और का काज सँवारा ॥
जुगन जुगन की भूल सूल सब काढ़ि निकारी ।
दीना पंथ लखाय सार कर सुरत सुधारी ॥
वे दयाल जुग जुग कहैं तुलसी नीच नकार ।
जो कोइ सतगुर चीन्हिया जिन का अगम बिचा

(२४)

वार वार बिनती करूँ सतगुर चरन निवास ॥
सतगुर चरन निवास बास मोहिं दीन्ह लखाई ।
नित नित करूँ बिलास पाय घर अपने आई ॥
मैं अति पति मति हीन दीन देखा मोहिं साँई ।
लीन्हा अंग लगाय कहूँ अस कौन बड़ाई ॥
तुलसी मैं अति हीन हूँ दीन्हा अगम अवास ।
वार वार बिनती करूँ सतगुर चरन निवास ॥

(२५)

मैं अति कुटिल कराल हूँ वार वार सरनाय ॥
वार वार सरनाय चरन घर धारूँ धूरी ।
सतगुर की बलिहारि दीन सत गत मत पूरी ॥
आदि अंत गत मूल फूल पत कँवल लखाई ।
कीन्हा अगम निवास पाय घर अपने आई ॥
तुलसी निरख निहाल होय परखा निज घर पाय ।
मैं अति कुटिल कराल हूँ वार वार सरनाय ॥

झूलना

(१)

अरे देख निहार बजार है रे, जग बीच न काम कोइ आवता है ॥
सुत मात पिता नर नार त्रिया, देख अंत कोउ संग न जावता है ॥
तुलसी बिचार जम फाँस है रे, बिधि बाँधि के काल चबावता है ॥

(२)

हाय हाय जहान में मौत बुरी, काल जाल से रहन नहिँ पावता है ॥
दिन चार संसार में कार करले, फिर जाल के खाक मिलावता है ॥
तुलसी करख्वाब का ज्वाब दूरी, लख लाभ जो यार को पावता है ॥

(३)

लख लख खलक कुल ख्याल है रे, धन माल में काल झुलावता है ॥
हजूर हिसाब में ज्वाब पड़े, जम बाँध जंजीर में डालता है ॥
तुलसी जम फाँस की जाल है रे, सोई अंत अदालत आवता है ॥

(४)

अरे देख निहार बिचार करो, जग जार न पार कोई पावता है ॥
भव कूप असार का प्यार किया, भ्रम भूल के भार उठावता है ॥
तुलसी को जान के सूझ परा, सोइ आदि अनादि को गावता है ॥

(५)

गाफिल बेहोस गरूर है रे, मगरूर मनी दिल भावता है ॥
दिन चार बदन फिर खाक फना, भूल ख्वाब के खेल में आवता है ॥
तुलसी बिलास में सूल है रे, बिन मूल न सूल नसावता है ॥

(६)

नैना निहारि के देखि ले रे, तेरा कौन सा यार कहावता है ॥
जिन तन मन और बदन किया, सोई यार का प्यार भुलावता है ॥
तुलसी तलास करतार है रे, जूतियाँ जब जम ले मारता है ॥

(७)

इस जग में बूझ बिचार ले रे, नहिँ साथ तेरे कछु जावता है ॥
अरे देख उलफत का मत झूँठा, यहि ख्वाब का खेल कहावता है ॥
तुलसी यह दम से स्वास है रे, सोई गम का गोल चलावता है ॥

(८)

इस जहान में मौत ने मार लिया, कोइ सोत के पोत से आवता है ॥
पंछी गुलेल ज्यों काल मारे, कर जाल में डाल के लावता है ॥
तुलसी तलास कर पास पिया, गुर बिन नजर नहिं आवता है ॥

(९)

संसार सराय का बास हैरे, दिन बीस बसेरा पावता है ॥
रावन बिक्रम और भीम सोई, तज माल मुलक कुल जावता है ॥
तुलसी बिनास ने घेर मारा, नहिं पास के बास को पावता है ॥

(१०)

घट घट में रचना होय रही, स्रति सैल से संत निहारते हैं ॥
सत मत का अंत लखाव लखै, सो पकाय के पार सुनावते हैं ॥
तुलसी जो दास का दास कहिये, गुर बैन के चैन से पावते हैं ॥

(११)

निँद्या साध और संत की नित्त करै, काला मुँह कर काल घुमावता है ॥
जुग जुग नरक की खान पड़ै, जम जाल जँजीर फिर पावता है ॥
तुलसी कुबास बेहाल मरें, दर हाल का स्वाल कहावता है ॥

(१२)

सुन ज्ञान के मान से खान पड़े, मन दासता होय सोइ पावता है ॥
पढ़ जान के नीच निहार लखै, सोइ ज्ञान का मूल कहावता है ॥
तुलसी जग आस को दूर करै, सोइ संत की बात को मानता है ॥

(१३)

सतसंग का रंग अपंग हैरे, मन टूट सोइ तार निहारता है ॥
सतगुर दयाल की मेहर मिलै, जब टुक सी लहर कूँ पावता है ॥
तुलसी निहार के पार लखै, सोई लख खलक दुरावता है ॥

(१४)

पानी तुन की आस को दूर करै, जब पास का तत्त निहारता है ॥
स्रुति सैल की टहल से महल लखै, सोइ यार का खेल विचारता है ॥
तुलसी पत पास की पीर टरै, सोइ भास के भेद को पावता है ॥

(१५)

बेदांत में ब्रह्म बखानि कहैं, बिन संत कुछ हाथ नहिं आवता है॥
जड़ चीन्ह चेतन्न का भेद लखै, जड़ गाँठ खुलै तब पावता है॥
तुलसी अकास के पार चढ़ै, सोइ पूरन ब्रह्म कहावता है॥

(१६)

कोइ ज्ञान से ब्रह्म बखान कहै, नहिं ब्रह्म के भेद को जानता है॥
कागदों की साख से भाख कहै, लख ब्रह्म का भेद न पावता है॥
तुलसीदास अजान जो मान लेवै, बिन ज़ान के जनम गँवावता है॥

(१७)

जिन देखि निहारि दीदार किया, सुति सैल से लख बरहक है रे॥
गगन गुमठ के पाट खुलैं, चढ़ि चाल चटक में लखि परे॥
तुलसी दीदम दम पाय पिया, पदम्म के पार अदीद है रे॥

(१८)

अरे संत सो पंथ का अंत लखै, जोग ज्ञान में ध्यान नहिं आवता है॥
अलख-खलक की गम्म नहीं, झलक पलक में पावता है॥
तुलसी लखै कोइ सूर प्यारा, सुत सब्द सिहार निहारता है॥

(१९)

अरे संत और साध की आदि न्यारी, उपाधि में जग नहिं पावता है॥
अंदर जाहर के नैन नहीं, सुख चैन की चाह को धावता है॥
तुलसी जग आस की फाँस बड़ी, घूम घूम चित चेत के लावता है॥

(२०)

दिन रात धनी धन धावता है, बिन यार धनी धन धूर है रे॥
जिन नाम लिया तिन खूब किया, सोइ काल को जाल को दूर धरै॥
तुलसी वो भूल पछतावता है, अभूल बिन मूल से सूल है रे॥

(२१)

माया बाँध के संग ले कौन चला, देख मर मिटै सब खाक मिले॥
दुरन[1] करन जरजोधन[2] को, धर काल ने जाल में बाँध डारे॥
तुलसी मैं थूक के मूल मिला, लख फूल कँवल के पार है रे॥

---

(१) द्रोण (२) दुर्योधन।

(२२)

अकास कँवल की केल कहूँ, कोइ सैल करै सोइ जानते हैं ॥
असमान को जान के दूर चले, जहँ तेज चंदा कोटि भान कहैं ॥
तुलसी पिव प्यास की आस कहूँ, कँवल के पार पहिचानते हैं ॥

(२३)

भूल चेत अचेत में सोवता है, दिन रात मंजिल कुल जात है रे ॥
उस साह से बोल करार किया, सोइ बोल का तोल बिचार ले रे ॥
तुलसी साह हिसाब कूँ जोवता है, बिन साह के सूत[1] सुन मार पड़े ॥

(२४)

पूंजी साह ने दीन्ह ब्योपार को रे, बेहोस निहार तू खोवता है ॥
विन साख प्रतीत के माल दिया, बिचार भव जाल में बोवता है ॥
तुलसी यह जान न कान करे, बिन दाम नहिं छूटने पावता है ॥

(२५)

टुक जीवना देख दिन चार है रे, हुसियार होय यार का सोध करना॥
मन मान ब्योपार को बूझ ले रे, असार संसार में नित मरना ॥
दिलदार जो सेठ की टेक करे, इस प्यार से पैर छुड़ाय लेना ॥

दोहा

दिना चार का खेल है, झूँठा जक्त पसार ।
जिन विचार पति ना लखा, बूड़े भौजल धार ॥ १ ॥
जिन सुर्ति सैल सँवारिया, पती पिया सत रीत ।
तुलसिदास कर्म काट के, गये जो भौजल जीत ॥ २ ॥
पदम पार पद लख पड़ा, जानत संत सुजान ।
तुलसिदास गति अगम की, सुरत लगी असमान ॥ ३ ॥
सुरति सैल असमान की, लख पावे कोइ संत ।
तलसी जग जाने नहीं, अति उतंग पिया पंथ ॥ ४ ॥

---

(१) ब्याज ।

संत चरन गत मत लखै, और पकै सरन के माहिँ ।
तुलसी सो जन बाचि है, और सब को काल चबाय ॥ ५॥

सवैया

(१)

यह मन काल रची भ्रम जाल ।
सो जिव फरफंद के फंद में आयो ॥ १ ॥
यह रस रीति बिषय बसि प्रीति ।
सो गोह गुना गुन तीन में गायो ॥ २ ॥
पाँच पचीस भया मन ईस ।
सो कर्म के कार से सार भुलायो ॥ ३ ॥
जीव चराचर भूलि परा ।
सोइ बेद के भेद से खान में आयो ॥ ४ ॥
ब्रह्म सनाथ बँधे तन साथ ।
सो जीव अनाथ से ब्रह्म बँधायो ॥ ५ ॥
ब्रह्म की भास कहूँ तन बास ।
सो किरन अकास रवी जिव आयो ॥ ६ ॥
सोई जिव जाल भया मन काल ।
सो इच्छा की नाल कुचाल चलायो ॥ ७ ॥
अब ब्रह्म की आदि अनादि कहूँ ।
सो भया बिधि आदि बिख्यात बताऊँ ॥ ८ ॥
गावत बेद निखेद जो नेति ।
सो कहत न जाने निरंजन नाऊँ ॥ ९ ॥
निरगुन काल रचा जम जाल ।
सो पुरुष दयाल को भेद सुनाऊँ ॥ १० ॥
तीनु हिँ लोक रहा मन सोक ।
सो चौथे के पार पुरुष को ठाऊँ ॥ ११ ॥

ताही पुरुष को जस्स कहूँ।
जा से सोलहि ब्रह्म बने हैं बताऊँ ॥ १२ ॥
पुरुष के पार निअच्छर सार।
सो संत निहारि बसे तेहि ठाऊँ ॥ १३ ॥
नाम अनाम को ठाम न गाम।
सो बाइस सुन्न के पार बताऊँ ॥ १४ ॥
संतहि सैल करैं नित केल।
सो देस अपेल का चैन चिताऊँ ॥ १५ ॥
उहाँ नहिँ अकास चंदा रबि भास।
अगिन न स्वास का बास न नाऊँ ॥ १६ ॥
नहिँ निराकार न जोति की जार।
दसो औतार बैराट न ठाऊँ ॥ १७ ॥
ब्रह्मा न बिस्नु नहीँ सिव कृस्न।
सो वेद बिधी जहँ खोजि न पाऊँ ॥ १८ ॥
तुलसी वोही धाम को नाम नहीँ।
सो बसैँ सब संत महूँ पुनि जाऊँ ॥ १९ ॥

(२)

नर को यही ठाठ वैराट बनो।
अस श्रीमत में कह्यो व्यास बखाना ॥ १ ॥
दुतिया असकंध में बूझ विचार।
नहीँ कह्यो पूजन काठ पषाना ॥ २ ॥
गीता मेँ भाख कही भगवान।
सो धरम तजा जिन मोहिँ पिछाना ॥ ३ ॥
पूरन ब्रह्म वेदांत कहे।
तुही आप अपनपौ आप भुलाना ॥ ४ ॥
पाहन पूजत जन्म गयो।
कुछ सूझि परी नहिँ लाभ न हाना ॥ ५ ॥

आसा जाइ बसे जड़ में ।
जब अंत समय जेहि माहिँ समाना ॥ ६ ॥
बेद की प्रीति की रीति करी ।
कर्म कांड रचे भव जन्म सिराना ॥ ७ ॥
यह तत ज्ञान कहै तुलसी ।
तैँ पत्थर में परमेसुर जाना ॥ ८ ॥

चितावनी स्रुति सार शब्द

(१)

अरे भर्म भेखं अरे द्रग्ग देखं । यह मन नर तन जात बह्यो ॥टेक॥
पानी पवन भवन रच लीनं । बिनसै तन तजि बिष रस पीनं ॥१॥
औसर आस बास बस कीनं । चीनं कर्म लिलेखं लेखं ॥ २ ॥

॥ सवैया ॥

ये दिन चार कुटंब सोँ लार, सो झूठ पसार के संग बँधानो ।
मात पिता सुत दार निहारि, सो सार बिसारि कै फंद फँदानो ॥१॥
पानी से पिंड सँवारि कियौ, नर ताहि बिसारि अनंद सो मानो ।
तुलसी तब की सुधि याद करौ, उलटे मुख गर्भ रह्यौ लटकानो ॥२॥

॥ कड़ी ॥

ये जग जाल काल कुल छायं । खायं खलक खानि बिच आयं ॥
जम जुलमी भव में भरमायं । माया मरम न पेखं पेखं ॥

॥ सवैया ॥

अरे देख निहारि बिचार करौ, गुरु गैल बिना कोई बाट न पावै ।
सतसंग के संग में रंग मिलै, स्रुति सैल निवास अकास दिखावै ॥१॥
दीप बिलास की आस करै, सोइ संत बिना कोई काम न आवै ।
तुलसी छिन में तन छार मिलै, सोइ द्वार गुरू घर पास बतावै ॥२॥

॥ कड़ी ॥

माया गुन मिलि मन मत रातं । पाँच पचीस संग मद मातं ॥
सुख संपत दुइ दिन सँग साथं । दिल बिच देख बिबेकं लेखं ॥

॥ सवैया ॥

सूरत सार भई नभ लार, रची मन नाल की चाल पिछानी।
सूर सती के बसी मध में, लख केल कँवल्ल के बीच समानी ॥१॥
लखी जिन साख सो भाखि कही, सो गई पिया देस के बैन बखानी।
तुलसी तत तोल के बोल बसी, सो फँसी रस केल पिया सोई जानी २

॥ कड़ी ॥

भौ सुख मूल सूल सब हारं। उपजत बिनसत बारं बारं॥
तपत कुंड लै जम जिव जारं। बंधन जगत बिलेकं लेकं॥

॥ सवैया ॥

नर को तन साज न काज कियौ, सो भये खर कूकर सूकर खाना।
जानी न बात किया सँग साथ, सो हाथ से लात जो खात दिदाना १
बूझी न ज्ञान की गैल गली, सो अली अघ पाप से होत अज्ञाना।
तुलसी लख लार से चीन्ह पड़ी, सोइ साल को खेत पयाल से जाना २

॥ कड़ी ॥

ये मन मौज खोज हिये माहं। काया में सुधि बुधि दरसायं।
जाना जिन सतसँग सँग पायं। छाड़ौ टेक अनेकं नेकं॥

॥ सवैया ॥

अरे संत के साथ में हाथ लगै, यहि भाँति पिया घर सोधि कै हेरो।
सारो पतो जो मतो उन पै, सोइ देवै दवा दुख दोख निबेरो ॥१॥
केवल ज्ञान दियो गुर ध्यान, सो मानि लियो जिन कीन्ह न फेरो।
तुलसी तजि कै सोइ बात लखै, सो पकै गुर मारग के मत चेरो ॥२॥

॥ कड़ी ॥

यहि विधि रमक राह रस जानं। संत कृपा सतगुर परनामं॥
सूरत सैल खेल दरसावं। जुग जुग जीव विसेखं लेखं॥

॥ सवैया ॥

अरे आदि अनादि की याद करौ, खल बास पिया घर कौन निवासा।
सूरत धार सो वार भई, सोइ पार पिया घर खेल विलासा ॥१॥
प्रीतम यार से प्यार करौ, सो कटै जम जाल जो काल की फाँसा।
देस बिदेस में भेस भई, सो गई तुलसी घर घाट अकासा॥२॥

॥ कड़ी ॥

ये संतन रस रीत बखानी। तुलसी चरन सरन रति मानी ॥
मन मराल ज्ञानं पाय पानं। जाना लेख अलेखं लेखं ॥

कवित्त

(१)

संत मोर प्यारा मैं संत का दुलारा।
सदा संत चरन लारा नित निकट लार फिरत हूँ ॥ १ ॥
भाखा भगवान मुख अपने बखान।
कहे संत को पिछान भव भार पार करत हैं ॥ २ ॥
पल पल मन मोर यही रहूँ सदा संत माहिं।
दिवस रैन खोज वही कहूँ और नहीं ठौर है ॥ ३ ॥
जो निंद्या संत की करत सदा नीच नरक में परत।
काल कोप करि धरत धाय धाय कुटिल करत है ॥ ४ ॥
तुलसी भव कूप जार संतहि से होत पार।
प्रभु संत को निहार दीन देख दया करत हैं ॥ ५ ॥

(२)

साध संत से उपाध रहत बेसवा के साथ।
बड़े कुटिल हैं कुपाथ चलैं पंथ-ना निहारि के ॥ १ ॥
कर्मन के मैले और बिष रस के पेले।
सो ऐसे हरामखोर दोजख में परत हैं ॥ २ ॥
देखत के नीके और करनी के फीके।
सो काढ़ि काढ़ि टीके उपद्रव को खड़े हैं ॥ ३ ॥
खोट मोट मानी आठों गाँठ के हरामी।
सो ऐसे कुटिल कामी काम राग हू में भरे हैं ॥ ४ ॥
देखत के ज्ञानी कूर खान की निसानी।
अधम ऐसे अभिमान सो जानी हानि करत हैं ॥ ५ ॥

साचे संसार लार संतन से फेर फार ।
तुलसी सुख परत छार छली छिद्र भरे हैं ॥ ६ ॥

(३)

अंध बूझ ना बिचार नहीं संधि को सिहार ।
मति मंद के अपार फंद फाड़ ले निहारि के ॥ १ ॥
कर्म करत हैं अचार सार समझ ना सम्हार ।
आदि अंत को बिसारि भार कार फिरत करत हैं ॥ २ ॥
कर अलख को अधार खूब खलक को बिसार ।
जार जुलम को निकार लार लार जुगन फिरत हैं ॥ ३ ॥
राम कृस्न हैं निकाम सरै संतन से काम ।
वे देत अगम धाम तुलसी तुरत ही जो तरत हैं ॥ ४ ॥

(४)

संत अगम आदि अंत लोक अधर है अतंत ।
समुँद सात पार पंथ कंत कँवल में दीदार है ॥ १ ॥
तीन लोक सोक पार चौथा चार लोक सार ।
आदि अधर के अधार साध संतहि अगार हैं ॥ २ ॥
अगुन सगुन सुरत वेद नेत नेत कहत भेद ।
भर्म मुनिन के उमेद खेद खानि में दीदार है ॥ ३ ॥
भव भव भगवान खान चारो जुग जुगन जान ।
तुलसी विदित है प्रमान संत करैं तौ निरवार है ॥ ४ ॥

(५)

साध संत हैं अगाध जीव जन्म जात बाद ।
काल कर्म की उपाध साध सुरति को लगाइ के ॥ १ ॥
कृस्न कड़ोरन औतार राम कोटिन भये छार ।
वेद ब्रह्मा नहिं पार मार मार लिये खाइ के ॥ २ ॥
देवन में महादेव बिस्नु नहिँ जाने भेव ।
करत काल जाल सेव बाँधे जम धाइ के ॥ ३ ॥
संतन के बिना साथ उबरे नहिँ कोटि भाँत ।
मारे जम जुगन लात तुलसी तरसाइ के ॥ ४ ॥

छंद

(१)

तत्वं रबि भास निवास बिभू ।
सो अकास न स्वास भषा नभयं ॥ १ ॥
कृत कौतुक ठाठ बैराट बिधं ।
सो सिंघ सिधान्त बने बिसवं ॥ २ ॥
इंद्री सुर स्वाद जो बाद बहं ।
बिष भोग भविष्य भया भ्रमयं ॥ ३ ॥
निरनं गुन पीत तके प्रबृतं ।
सो पके रज सत्त तमा ततमं ॥ ४ ॥
मन मंद मुदाम पियं मदरा ।
सो जुरा जम जाल जड़े जवनं ॥ ५ ॥
त्रय लोक जो नाथ अनाथ भयं ।
सो सहं भव भार निहार निहंग ॥ ६ ॥
इच्छा छल छीर बसे प्रभुवं ।
सो फँसे गउ लोक लखा न पदं ॥ ७ ॥
तुलसी तत मूल तजे तकतं ।
सो सजे सठ सूल जो भूल भवं ॥ ८ ॥

(२)

नहिँ सोच सिहार बिचार नरं ।
सो छरं जग जुग कृत मुक्ति मनं ॥ १ ॥
सुत मात पिता फँस पोढ़ प्रियं ।
अंतै सँग त्याग न पुत्र त्रियं ॥ २ ॥
सुपना जग जान अजान जियं ।
पल मेँ नित नास प्रिथी पवनं ॥ ३ ॥
बाजी नर आज भली भवनं ।
दुर्लभ तन साज सो आज बनं ॥ ४ ॥

फिर काज निवाज गुरू गवनं ।
मन मीत जो चीत चढ़ो नभयं ॥ ५ ॥
सो भया भ्रम दूर दया दवनं ।
घर हेर हिया जी दिया धरकं ॥ ६ ॥
सो पिया परे सुन्न तको तनकं ।
सुति सूर जहूर लखा गगनं ॥
जो चखा तुलसी सो अकह अलखं ॥ ७ ॥

बारहमासा लावनी

आली असाढ़ के मास बिरह उठ बादल घहराने ।
चहुँ दिस चमकै बीज बिकल पिया के बिन हैराने ॥
खबर बिन धीरज नहिँ आवै ।
तन मन बदन बेहाल बिपत में नहिँ कोइ कुछ भावै ॥
कहूँ नहिँ दिल दारुन अटकै ।
हर दम पिया की पीर दरस बिन मन मोरा भटकै ॥१॥
सखि सावन के मास सोक में सुन्दर घबरानी ।
रिमझिम बरसै मेघ मोर दादुर की सुन बानी ॥
जिगर अन्दर जिव लहरावै ।
तड़पै तन के माहिँ हाय पिया खोजै कहाँ पावै ॥
रही हिये में पिया को रट कै ।
हर दम पिया० ॥ २ ॥
भर भादोँ झड़ मेघ अखंडित बरसै जल धारा ।
आवै पिया की पीर नीर नैनोँ बहै चौधारा ॥
सुरख सब अँखियन में लाली ।
मारे गोसा तानि तीर हिये ज्योँ कसकै भाली ॥
कलेजे अन्दर में खटकै ।
हर दम पिया० ॥ ३ ॥

ऋतु कुआर के मास आस कागा सँग सुध बिसरी ।
हंस सिरोमनि मूल भूल से तज मेवा मिसरी ॥
मरम संगत बिन कहँ पाऊँ ।
बिन सतगुरु के बाट घाट घर चढ़ कैसे जाऊँ ॥
सुरत मन क्यों करके लटकै ।
हर दम पिया० ॥ ४ ॥
कातिक तिल के माहिँ जाय सोइ सुध बुध दरसावै ।
अष्ट कँवल दल द्वार पार पद हद सब समझावै ॥
सरन होय सतगुर की चेली ।
मैली बुद्धि निकार सार पावै जब लख हेली ॥
चाँदनी हियरे में छिटकै ।
हर दम पिया० ॥ ५ ॥
अघ अगहन के मास पाप पुन सब जब जरि जावै ।
निर्मल नीर बनाय जाय सोइ तिरबेनी न्हावै ॥
करम का भोग भरम छूटै ।
बिन बेनी असनान पकड़ जम धर धर के लूटै ॥
बचै नहिँ कोइ सब को पटकै ।
हर दम पिया० ॥ ६ ॥
पूस पुरुष की आस बास बिन नहिँ जिव निस्तारा ।
सतगुरु केवट गैल गवन कर जब जावै पारा ॥
मिलै जब पिउ परसै प्यारी ।
सुन्दर सेज बिछाय पिया सँग सोवै कर यारी ॥
अरज कर प्रीतम से हटकै ।
हर दम पिया० ॥ ७ ॥
माघ मनोरथ प्रीत परम पद की सुधि सम्हारी ।
ऐसी होय कोइ नारि जगत तज तन मन से न्यारी ॥
सुरत की डोरी लौ लावै ।
मूल मुकर की राह दाव करि सहजहि चढ़ जावै ॥

कुमति कुनबे को बांध झटके ।
हर दम पिया० ॥ ८ ॥
फागुन फरक निकार यार सँग खेलै खुल होली ।
आस अबीर उड़ाय गुनन की भर मारै झोली ॥
अरगजा घिस चन्दन लेपै ।
नील सिखर की राह सुरत चढ़ि सुन्दर में चेपै ॥
चरन में हित चित से ठग के ।
हर दम पिया० ॥ ९ ॥
चतुर सहेली चेत हेत हियरे से मन लावै ।
पल पल पालै प्रीति रीति पिया को जो रस चावै ॥
अमल करि होवै मतवारी ।
नसा नैन के माहिँ बिसर गइ सुध बुध सब सारी ॥
गरक डोरी बाँधै बट कै ।
हर दम पिया० ॥ १० ॥
बुन्द बैसाख की साख सिन्ध गत सन्तन ने गाई ।
सुन के सज्जन होय समझ कर छोड़ै चतुराई ॥
दीन दिल दुरमत को छोड़ै ।
मन मकरन्द को जान मान तन मन का सब तोड़ै ॥
लहर सतसँग की जब चटकै ।
हर दम पिया० ॥ ११ ॥
जबर जेठ की रीत करै कोइ किंकर जब होवै ।
मन के विषम विकार काढ़ि के तुलसी सब धोवै ॥
भरम तजि भक्ति भजन करना ।
मन मूरख को बाँधि पकड़ कर जीवतही मरना ॥
निकस घट न्यारी होय फटकै ।
हर दम पिया की पीर दरस बिन मन मोरा भटकै ॥१२॥

लावनी

पिया दरस बिना दीदार दरद दुख भारी ।
बिन सतगुरु के धृग जीवन संसारी ॥ टेक ॥
क्या जनम लिया जग माहिँ मूल नहिँ जाना ।
पूरन पद को छाड़ि किया जुलमाना ॥
जुग जुग में जीवन मरन आज नर देही ।
सुख सम्पति में पार पुरुष नहिँ सेई ॥
जग में रहना दिन चार बहुरि मरना री ।
बिन सतगुरु के धृग जीवन संसारी ॥ १ ॥
यह नर तन दुरलभ माहिँ हाय नहिँ लाई ।
जाले अँखियों में पड़े करम दुखदाई ॥
पिया है हर दम हिये माहिँ परख नहिँ पाई ।
बिन सतगुरु के कौन कहै दरसाइ ॥
खोजत रही री दिन रात ढूँढ कर हारी ।
बिन सतगुरु के० ॥ २ ॥
अरी यह मट्टी तन साज समझ बिनसैगा ।
छिन में छूटै बदन काल गिरसैगा ॥
आसा बंधन जग रोज जनम धरना री ॥
दुख सुख बेड़ी बिषम भोग करना री ।
भुगतै चौरासी खान जुगन जुग चारी ।
बिन सतगुरु के० ॥ ३ ॥
सुत मात पिता नर पुरुष जगत का नाता ।
यह सब संसय का कोट कुटँब दुख दाता ॥
टुक जीवन है जग माहिँ काल की बाजी ।
इन बातों में परम पुरुष नहिँ राजी ॥

पिउ परमारथ सँग साथ सहज तरना री ।
बिन सतगुरु के० ॥ ४ ॥
कोइ भेंटै दीन-दयाल डगर बतलावैं ।
जेहि घर से आया जीव तहाँ पहुँचावैं ॥
दरसन उनके उर माहिँ करै बड़भागी ।
उनके तरने की नाव किनारे लागी ।
कहिँ वे दाता मिल जायँ करैं भव पारी ।
बिन सतगुरु के० ॥ ५ ॥
सतसँग करना मन तोड़ सरन संतन की ।
अंदर अभिलाषा लगी रहै चरनन की ॥
सूरत तन मन से साच रहै रस पीती ।
कोइ जावै सज्जन कुफर काल को जीती ॥
अमृत हर दम कर पान चुवै चौधारी ।
बिन सतगुरु के० ॥ ६ ॥
सतसँग मारग की प्रीति रीति जिन जानी ।
उन सज्जन पर वार वार कुरबानी ॥
निस दिन लौ लागी रहै रमक रस राती ।
मतवारी मज्जन मुकर मनोरथ माती ॥
ऐसे जिनके सरधान सुरति बलिहारी ।
बिन सतगुरु के० ॥ ७ ॥
अली जो समरथ के साथ सरन में आई ।
सो सूरत परम बिलास करै घट माहीँ ॥
पिउ प्यारी महल मिलाप रहै दिन राती ।
तुलसी पट भीतर केल करै पिया साथी ॥
सुख सम्पति क्या कहूँ चैन चरन पर वारी ।
बिन सतगुरु के धृग जीवन संसारी ॥ ८ ॥

रेखता

(१)

नर का जनम मिलता नहीं। गाफिल गरूरी ना रखो ॥
दिन दो बसेरा बास है। आखिर फना मरना सही ॥१॥
बेहोस मौत सिर पै खड़ी। मारै निसाना ताक कै ॥
हर दम सिकारै खेलता। जम से रहे सब हार के ॥ २ ॥
घेरा पड़ा है काल का। कोई बचन पावै नहीं ॥
जग में जुलम तोबा पड़ी। इन से पनह देवै दई ॥ ३ ॥
चलने के दिन थोड़े रहे। हर दम नगारा कूच का ॥
नहिं तू तेरा संगी भया। तुलसी तवक्का[1] ना किया ॥४॥

(२)

मरदूद तुझे मरना सही। कायम अकल करले कही ॥
मामूल जो अव्वल हुआ। अपनी हकीकत पै रहो ॥ १ ॥
बंदे खुदा की रीति क्या। खिलकत फना खोवै खुदी ॥
आलम तुझे दुनिया से क्या। सुहबत सराबी न करो ॥ २ ॥
जिसमें उधर का फायदा। हर दम जिगर बंदे वफा ॥
बिलकुल जो दिल उसकी तरफ। पल पल न रूह होवै जुदी ॥३॥
हर वक्त हाजिर जो खड़ी। मुहब्बत इसक आसिक असल ॥
तुलसी तखत के सुहबती। उन पै करूँ कुरबान जी ॥४॥

(३)

मानो बचन मुरसिद कहै। बेहोस उधर तकते रहो ॥
तन में जो अंधा कूप है। वोही तुम्हारा रूप है ॥ १ ॥
सोई सकल बैराट की। जिसमें डगर पिया घाट की ॥
माँजै मुकर को चैन से। दरसै हिये के नैन से ॥ २ ॥
नाहीं नमूना नूर है। बेचिन्ह बिना जहूर है ॥
उसके न रेखा रूप है। हिंदू हकीकत में कहै ॥ ३ ॥

---

(१) आशा, भरोसा।

नेत बेद कहता सही । सिफतें किताबों में कही ॥
बेदों कितेबों में नहीं । मुहब्बत अरस आसिक लई ॥४॥
आसिक उसी के इस्क के । दिल में दिवाने हो रहे ॥
महबूब से मुहब्बत करी । ला[1] में जो रूह रब में भरी ॥५॥
उनकी हकीकत क्या कहूँ । हर दम हिये बिच रोसनी ॥
घायल पिया के दरस के । तुलसी सुनारे हर बखत ॥ ६ ॥

(४)

अलबत बजुरगों ने कही । आलम अकल मानै नहीं ॥
अपनी अरामी के सबब । मानै इबादत का मभब ॥ १ ॥
परदे पैगम्बर की सुनी । कायम करी साबुत सरै[2] ॥
परदे के अंदर ना गये । गाफिल गवाही क्या कहै ॥ २ ॥
खाविंद खुदा से ना मिले । मुहब्बत मेहर मालुम नहीं ॥
उनको अव्वल की क्या खबर । कहते किताबों की कही ॥ ३ ॥
तारीफ तौ सब ने कही । महबूब से महरम नहीं ॥
खुद यार से मुहब्बत करी । उनकी असल बातैं खरी ॥ ४ ॥
रौला मुकामों में रहै । वोही खबर खुल खुल कहै ॥
माकूल बजुरगों के बचन । जिन्ने कही सारी सनद ॥ ५ ॥
हिंदू हरामी की कहूँ । कुफरान बुत पूजै नकल ॥
उनकी असल जानै नहीं । दिल दर बदर ढूँढै कुफर ॥ ६ ॥
रमता बदन के बीच में । अंदर अमल आदम वही ॥
खोजे खलक नहिँ आप में । नाहक नदामत को सहै ॥ ७ ॥
आदम बदन बैराट में । तीनों भवन का ठाठ है ॥
पढ़ भागवत को देख ले । भाखा बिबेकी व्यास ने ॥ ८ ॥
पिंड में कहा ब्रह्मंड को । लानत नकल को सेवते ॥
तन में जतन सारा भरा । बेहोस बदन खोजै नहीं ॥ ९ ॥
फहमीद[3] तुर्क हिंदू नहीं । भूले अपनपौ आप में ॥
रोजा निमाजों में तुरक । हिंदू बरत तीरथ करै ॥ १० ॥

(१) अनामी । (२) शरअ । (३) समझ ।

दोनों दीद बंद देखते। अंदर अलिफ चीन्हा नहीं ॥
बेफ़हम[1] फिराकों में फिरै। हासिल मुरादें ना भई ॥ ११ ॥
बंदे तलासी में रहे। बातिल[2] मुरीदी जिन करी ॥
महरम जिन्हें आसान है। मुस्किल मुकरबे पै अमल ॥१२॥
कारिम[3] करम बखसी करै। दिल के रहम रहबर मिलै ॥
तुलसी अधर पै ले चढ़ै। मुरसिद मँजिल फाजिल फजल ॥१३॥

(५)

जगत गाफिल पड़ा सोता। रैन दिन खाब में खोता ॥
अवादा आन कर पहुँचे। खौफ जम का नहीं सोचै ॥१ ॥
फिरै अलमस्त माया में। पारधी काल काया में ॥
गऊ सिँघ बाट में घेरै। डगर जिव काल जो हेरै ॥ २ ॥
बचै कोइ संत की सरना। अमर होवै मुकत चरना ॥
और कहुँ ना कुसल भाई। कही सब संत गोहराई ॥ ३ ॥
बिना उनके जनम मरना। भटक भव सिंध में पड़ना ॥
जुगन जुग करम से खाना। बढ़ै अघ पाप अभिमाना ॥ ४ ॥
जुलम के हेत हलकारे। मनी मगरूर मतवारे ॥
पकड़ जम जूतियाँ मारे। बहुर बिलकुल नरक डारे ॥ ५ ॥
देख यह तन नहीं मिलता। कुटँब परिवार में पिलता ॥
समझ सुहबत बड़ी खोटी। घसीटे काल धर चोटी ॥ ६ ॥
मोह की फाँस में फंदे। जनम बीते बिब्रस गंदे ॥
बदन ज्यों ओस का पानी। अगर यों जान जिंदगानी ॥७॥
तेरे संग ना कोई जावै। मार हर वक्त क्यों खावै ॥
कहै तुलसी जनम बीता। खलक जावै हाथ रीता ॥ ८ ॥

(६)

जगत मद मान में माता। खुदी का खौफ नहिं लाता ॥
कज़ा सिर पर खड़ी द्वारे। फिरिस्ते तीर तक मारें ॥ १ ॥

---

(१) बेसमझ। (२) झूठी। (३) करीम, दाता।

(८)

अरे हम ना किसू के हैं। अगर कोइ ना हमारा है ॥
जिकर हर दम वही उसके। जिन्हों की लै करारी है ॥१॥
जिन्हन मजबूत से डोरी। पकर लै को सुधारी है ॥
लगन दिलदार में दिल से। सनेही सो हमारा है ॥२॥
फकत पुखती परखने को। सबद करिके दिखाया है ॥
मुरीदी मिहर मुरसिद की। किया जिनने किनारा है ॥३॥
फजल फहमीद करने को। बुजुरगों ने पुकारा है ॥
अगर कोइ अकल में लावै। निगह दस्तों गुजारा है ॥४॥
अगर अकसीर बिन रोगी। दरद कबहूँ न जावैगा ॥
दफा जब रोग रोगी का। निखालिस हो सिहारैगा ॥५॥
अमन होना ऐन माहीं। तरक तुलसी सिखाई है ॥६॥

(९)

करम ईसुर मिमांसा में। बरन बाम्हन सुनाते हैं ॥
उसे परमातमा थापे। सुनो गजबों की बातें ये ॥१॥
ब्रह्म बेदांत कहता है। आतमा रूप समझावै ॥
अँदर की आँख बिन देखे। ज्ञान बुधि से बताता है ॥२॥
कहैं इस्थिर आतमा कूँ। बँधा मन गुन दसो इंद्री ॥
पलो पल सुभ जाग्रत में। अगर दिन रैन धाता है ॥३॥
उसी को ब्रह्म बतलावै। बँधा जड़ साथ चेतन के ॥
खुले बिन गाँठ के भाई। ब्रह्म नहिं वो कहाता ॥४॥
ब्रह्म दस द्वार के माहीं। गगन नौ पार में पावै ॥
कँवल दल आठ के अंदर। सहसदल में दिखाता है ॥५॥
प्रथम बैराट में आया। आतमा अंस अपने में ॥
अंस की आद कहो कहँ से। बुंद सिंध में से आता है ॥६॥
करी उस बुंद ने काया। लगी तत पाँच से माया ॥
छुटे बिन भेद नहिं पाया। सिंध की याद बिसराया ॥७॥

अलख की कहन से भाखा। सकल यह झूठ अभिलाखा ॥
अमल तुलसी बिना छूछी। समझ कोइ साध से पूछी ॥१०॥

(११)

द्वार परदा दूसरे का। सब्द करके दिखाता हूँ ॥
सुरख रँग में मिला जरदा। मढ़ा यहि भाँति का परदा ॥१॥
अगर कहे राह पहचानी। द्वार पर कौन सहदानी ॥
कहे को जो करे मेला। परखि आचरज का खेला ॥२॥
तले असमान नीचे को। पृथी वहि देस ऊँचे को ॥
सुरज व्हाँ से दिखे कैसा। नीर प्रतिबिंब रबि जैसा ॥३॥
गगन रबि चंद और तारा। उलट मानो अंड को डारा ॥
अंड ऐसा नजर आया। उलट कोइ बाँधि लटकाया ॥४॥
पृथी लग क्या कहूँ नभ में। जलामई हो गई सब में ॥
अधर चढ़ सिस्त से देखा। अनेकन अंड का लेखा ॥५॥
अंडे अंड में त्रिलोकी है। कही जिन जो बिलोकी है ॥
मकर के तार सूरति की। लखे भूमी अपूरब की ॥६॥
कबूतर ज्यों लका लखता। उलटि गरदन भूमि तकता ॥
कोड़िला[1] सिस्त से बुड़की। थिरक सुत ज्यों लखे धुर की ॥७॥
चोंच मछरी लटक लेखा। सुरति यों धाय धस देखा ॥
वहाँ की भूमि कहूँ कैसी। मृदंग आकार ज्यों जैसी ॥८॥
पदम पर पुरुष के पासी। सकै नहिं जाय अबिनासी ॥
अगर पद घाट गुर गैली। करै कोइ साध सुख सैली ॥९॥
कहूँ क्या कहन में नाहीं। सैन सब संत समझाई ॥
तुरत तुलसी कहैं ओछे। बरन कहैं भेद जो पहुँचे ॥१०॥

(१२)

हद से बेहद पार का। परदा परख ले कर कहूँ ॥
द्वारे चौहट्टे चौक के। गर नाल इक आगे बनी ॥१॥

---

(१) एक चिड़या जो डुबकी लगाकर मछली को पकड़ती है।

जबै दरियाव से छूटा। बुँद जल में रहाया है॥
बुंद की लहर बुंदों में। उलट बुँद में समाती है॥८॥
सिंध का खोज नहिँ पावै। बुंद को सिंध बतलावैं॥
उसी बुंद की लहर माहीँ। तरंगैं जा समाती हैं॥९॥
अगर सिँध के ठिकाने की। खबर खोय देख दिखलावे॥
तलासी होय तुलसी को। साच अलबत्त आती है॥१०॥

(१०)

सबद पढ़ क्या सुनाता है। भेद सब से इलादा[1] है॥
अबे यह अमल अलफानी। तेरी मत मूल बौरानी॥ १ ॥
स्रवन कहुँ भेद सुन पाया। नैन पर नैन अरथाया॥
दृगन पर सुरति लखवाई। मद्ध में सुन्न समझाई॥ २ ।
दोय य्हाँ व्हाँ के दीदे हैं। खोपड़ी के सुनीदे हैं॥
पछिम परदे तीन तेरे। बिलग भिन देख नहिँ हेरे॥३॥
पहल परदा फरक फूटै। चेतन जड़ कौन बिधि छूटै॥
मुकामी सैल समझावैं। करसमा[2] देखि दरसावैं॥४॥
कहैं उस भूम का लेखा। सैल करि जौन जिन देखा॥
जरै व्हाँ जोत दिन राती। रोसनी तेल बिन बाती॥५॥
कूप से दूर के पासी। कहाँ भई भेँट अबिनासी॥
अछर अँड में कहाँ रहता। सब्द सुन में से क्या कहता॥६॥
बोल क्या खोल बतलावैं। फरक कोइ मद्धक समझावैं।
बिधी बिधि बोल वे बैना। संत बिन को कहै सैना॥७॥
सोहँग ओंकार कह डारा। सब्द इन भेद से न्यारा॥
पैठ कर सैल जिन कीन्हा। सब्द सुन मद्ध में चीन्हा॥८॥
मधी के मद्ध में जावै। कहन उसकी समझ आवै॥
अजब इक बात अनतोली। लखै को सत की बोली॥९॥

---

(१) अलग। (२) करामात।

अलख की कहन से भाखा । सकल यह झूठ अभिलाखा ॥
अमल तुलसी बिना छूछी । समझ कोइ साध से पूछी ॥१०॥

(११)

द्वार परदा दूसरे का । सब्द करके दिखाता हूँ ॥
सुरख रँग में मिला जरदा । मढ़ा यहि भाँति का परदा ॥१॥
अगर कहे राह पहचानी । द्वार पर कौन सहदानी ॥
कहे को जो करे मेला । परखि आचरज का खेला ॥२॥
तले असमान नीचे को । पृथी वहि देस ऊँचे को ॥
सुरज व्हाँ से दिखे कैसा । नीर प्रतिबिंब रबि जैसा ॥३॥
गगन रबि चंद और तारा । उलट मानो अंड को डारा ॥
अंड ऐसा नजर आया । उलट कोइ बाँधि लटकाया ॥४॥
पृथी लग क्या कहूँ नभ में । जलामई हो गई सब में ॥
अधर चढ़ सिस्त से देखा । अनेकन अंड का लेखा ॥५॥
अंडै अंड में त्रिलोकी है । कही जिन जो बिलोकी है ॥
मकर के तार सूरति की । लखे भूमी अपूरब की ॥६॥
कबूतर ज्यों लका लखता । उलटि गरदन भूमि तकता ॥
कोड़िला[1] सिस्त से बुड़की । थिरक स्रुत ज्यों लखे धुर की ॥७॥
चोंच मछरी लटक लेखा । सुरति यों धाय धस देखा ॥
वहाँ की भूमि कहूँ कैसी । मृदंग आकार ज्यों जैसी ॥८॥
पदम पर पुरुष के पासी । सकै नहिं जाय अबिनासी ॥
अगर पद घाट गुर गैली । करै कोइ साध सुख सैली ॥९॥
कहूँ क्या कहन में नाहीं । सैन सब संत समझाई ॥
तुरत तुलसी कहैं ओछे । बरन कहैं भेद जो पहुँचे ॥१०॥

(१२)

हद से बेहद पार का । परदा परख ले कर कहूँ ॥
द्वारे चौहट्टे चौक के । गर नाल इक आगे बनी ॥१॥

(१) एक चिड़या जो डुबकी लगाकर मछली को पकड़ती है ।

उसके दाहने दमदमा। बायें उसी के बंब है॥
बँब के ढिंग घरिआ बनी। गिनती कहूँ सब सात से॥२॥
इक एक घरियन में कहूँ। टोटी लगीं बेअंत हैं॥
टोटी के मुख ऊपर जड़े। दुरबीन द्वारे के सबै॥३॥
गर नाल के परदे खुले। ऐसे खुले हैं बंब के॥
द्वारे तके दो ताक हैं। जा में जुगल फाटक बने॥४॥
फाटक की बैठक से दिखै। इत में इती की सैल है॥
उत में उती की जो खुमी। करते उते खुस खेल है॥५॥
परथम इते के खेल की। बरनन कहूँ भिन भिन सबै॥
फाटक से बँब घरिया तलक। सिस्ती से देखन की कहूँ॥६॥
चारो मुकामों की सनद। इक एक की न्यारी बरन॥
फाटक से बंबे तक लखन। सिस्ती सनद कर देखते॥७॥
पदमं पुरुष आनंत है। कछु अंत का लेखा नहीं॥
सतलोक सत साहिब कहें। यह वह ठिकाने का लखन॥८॥
बंब से निकरि बाहर गई। घरिया में जा दाखिल भई॥
घरिया में सिस्ती से तके। अँड में ब्रह्मँड बेअंत है॥९॥
लखते सुरत की सैर से। टोंटी के जद मध में धसी॥
दुरबीन की करते सैल। किरनी असंखन हो गईं॥१०
सूरत का लछ ऐसा भया। कहूँ क्या अनेकन एक से॥
टोंटी से दर दुरबीन लों। सब ही सबन में हो रही॥११
जैसे आरसी का मभ्भन्न। फूटे खंड बहुतक भये॥
उसमें देखे चिहरे घने। ऐसे परख पहिचान ले॥१२॥
चारो खान लेखा लखे। भिन जीव चारो जाति के॥
उपजे मरे विनसे बने। ऐसे सभी सब लख परे॥१३॥
अब सुन उते की सैरकी। बाकी रही सो भाखता॥
उत के इलाके की कहूँ। समझे सबब कोइ क्या कहे॥१४॥

द लग अमल है काल का। सुन से सबद जहँ लग उठे ॥
|दद्द में महाकाल है। सोई महासुन में रहे ॥ १५ ॥
|हद्द हद की यह मँज़िल। सुन ले इसी के पार की ॥
जेतने कहे यह ठहाँ नहाँ। ठहाँ की अजब कुछ और हैं ॥१६॥
ंतों का यह जाना सबै। भेदी जो वे वहि देस के ॥
उनकी मेहर से वे मिलें। सब जो अगत गाई जिन्हन ॥१७॥
संतों के मत मकान का। इनसे परे घर दूर है ॥
इतनी कहन कह कर कही। फिर भी बरन न्यारी रही ॥१८॥
पहुँचे परख देखी डगर। सैनों में सुधि सारी कही ॥
तुलसी अकह अर्थंत की। भाखी बरनि बानी सबै ॥१९॥

(१२)

समुँद सुख सहर इक आली। नृपति सत सील महिपाली ॥
नगर सब लोक सुख चैना। ज्ञान गति भगति के बैना ॥१॥
दया दिल सील संतोषा। बिबिध बैराग सम लोका ॥
बिमल जग जोग बिन जोई। बिगर बीबेक नहिँ कोई ॥२॥
नृपति घर नार सुख रूपा। कहूँ कन्या परम भूपा ॥
परन जुग पुत्र उन केरी। ताहि बिच एक अस हेरी ॥३॥
चुगल और चोर मद मूला। चले नित चाल बद सूला ॥
अली अति अधम अभिमानी। कहूँ क्या काल सम जानी ॥४॥
लखे जग लोक दुखदाइ। नगर तोबा हाय हाई ॥
साध और संत नहिँ माने। बिप्र बिधि देखि रिसियाने ॥५॥
नगर बिच बाट नहिँ चाली। पकरि सब करत बेहाली ॥
दिवस निस जीव जग छेड़ा[१]। त्रास बन बीच जस भेड़ा ॥६॥
अली मद मास और मछरी। खाय मृग मुरग और बकरी ॥
बनी और पंथ के सारे। पकरि सब जीव धरि मारे ॥७॥
करे अनरीत अधमाई। निडर सब जीव चरि खाई ॥
गला जोइ काटि के लेवे। बहुरि पुनि दाव फिरि देवे ॥८॥

(१) छोड़ा।

उसके दाहने दमदमा । बायेँ उसी के बंब है ॥
बँब के ढ़िँग घरिया बनी । गिनती कहूँ सब सात से ॥२॥
इक एक घरियन मेँ कहूँ । टोटी लगीँ बेअंत हैँ ॥
टोटी के मुख ऊपर जड़े । दुरबीन द्वारे के सबै ॥३॥
गर नाल के परदे खुले । ऐसे खुले हैँ बंब के ॥
द्वारे तके दो ताक हैँ । जा मेँ जुगल फाटक बने ॥४॥
फाटक की बैठक से दिखै । इत मेँ इती की सैल है ॥
उत मेँ उती की जो खुसी । करते उते खुस खेल है ॥५॥
परथम इते के खेल की । बरनन कहूँ भिन भिन सबै ॥
फाटक से बँब घरिया तलक । सिस्ती से देखन की कहूँ ॥६॥
चारो मुकामोँ की सनद । इक एक की न्यारी बरन ॥
फाटक से बंबे तक लखन । सिस्ती सनद कर देखते ॥७॥
पदमं पुरुष अानंत है । कछु अंत का लेखा नहीँ ॥
सतलोक सत साहिब कहेँ । यह वह ठिकाने का लखन ॥८॥
बंब से निकरि बाहर गई । घरिया मेँ जा दाखिल भई ॥
घरिया मेँ सिस्ती से तके । अँड मेँ ब्रह्मँड बेअंत है ॥९॥
लखते सुरत की सैर से । टोँटी के जद मध मेँ धसी ॥
दुरबीन की करते सैल । किरनी असंखन हो गईँ ॥१०॥
सूरत का लछ ऐसा भया । कहूँ क्या अनेकन एक से ॥
टोँटी से दर दुरबीन लौ । सब ही सबन मेँ हो रही ॥११॥
जैसे आरसी का मझब । फूटे खंड बहुतक भये ॥
उसमेँ देखे चिहरे घने । ऐसे परख पहिचान ले ॥१२॥
चारो खान लेखा लखे । भिन जीव चारो जाति के ॥
उपजे मरे विनसै बनै । ऐसे सभी सब लख परे ॥१३॥
अब सुन उते की सैरकी । बाकी रही सो भाखता ॥
उत के इलाके की कहूँ । समझे सबब कोइ क्या कहे ॥१४॥

हद लग अमल है काल का । सुन से सब्द जहँ लग उठे ॥
बेहद्द में महाकाल है । सोई महासुन में रहे ॥ १५ ॥
बेहद्द हद की यह मँज़िल । सुन ले इसी के पार की ॥
जितने कहे यह व्हाँ नहाँ । व्हाँ की अजब कुछ और है ॥१६॥
संतों का यह जाना सबै । भेदी जो वे वहि देस के ॥
उनकी मेहर से वे मिलें । सब जो अगत गाई जिन्हन ॥१७॥
संतों के मत मकान का । इनसे परे घर दूर है ॥
इतनी कहन कह कर कही । फिर भी बरन न्यारी रही ॥१८॥
पहुँचे परख देखी डगर । सैनों में सुधि सारी कही ॥
तुलसी अकह अथंत की । भाखी बरनि बानी सबै ॥१६॥

(१३)

समुँद सुख सहर इक आली । नृपति सत सील महिपाली ॥
नगर सब लोक सुख चैना । ज्ञान गति भगति के बैना ॥१॥
दया दिल सील संतोषा । बिबिध बैराग सम लोका ॥
बिमल जग जोग बिन जोई । बिगर बीबेक नहिँ कोई ॥२॥
नृपति घर नार सुख रूपा । कहूँ कन्या परम भूपा ॥
परन जुग पुत्र उन केरी । ताहि बिच एक अस हेरी ॥३॥
चुगल और चोर मद मूला । चले नित चाल बद सूला ॥
अली अति अधम अभिमानी । कहूँ क्या काल सम जानी ॥४॥
लखे जग लोक दुखदाइ । नगर तोबा हाय हाई ॥
साध और संत नहिँ माने । बिप्र बिधि देखि रिसियाने ॥५॥
नगर बिच बाट नहिँ चाली । पकरि सब करत बेहाली ॥
दिवस निस जीव जग छेड़ा[1] । त्रास बन बीच जस भेड़ा ॥६॥
अली मद मास और मछरी । खाय मृग मुरग और बकरी ॥
बनी और पंथ के सारे । पकरि सब जीव धरि मारे ॥७॥
करे अनरीत अधमाई । निडर सब जीव चरि खाई ॥
गला जोइ काटि के लेवे । बहुरि पुनि दाव फिरि देवे ॥८॥

(१) छोड़ा ।

जनम नित मरन चौरासी । होयँ नित नरक के बासी ॥
पड़े रहैं कल्प कलपांतर । बचैं नहिँ कोटि यग फल कर ॥९॥
तिरथ और बरत कर हारे । पकरि जम जूतियों मारे ॥
नेम आचार करि पूजा । परैं नित नरक नहिँ दूजा ॥१०॥
देख जग रैन का सुपना । देह धन माल नहिँ अपना ॥
मनी अभिमान में भूला । माया मद मोह बस फूला ॥११॥
बिषय रस रीत मद माता । तिमर तन तोर में राता ॥
सूझ बिन बूझ जग अंधा । परे बस काल के फंदा ॥ १२ ॥
कुटिल बुधि साध से चोरी । रैन दिन मोर और तोरी ॥
परे झकझोर के ख्याला । पिये भ्रम भूल के प्याला ॥१३॥
रात दिन जात तन बीता । चलै मद मान मन चीता ॥
खबर नहिँ काल की जाना । पकरि करि बंद बिच खाना ॥१४॥
कठिन जमराय की रीती । जबर वोहि जाल जग जीती ॥
फूट तन जात जस बुल्ला । कुटम परिवार बिच भूला ॥१५॥
बिनसि हबूब जस पानी । पौन बिच गाँठि गँठियानी ॥
बदन तन हाड़ बिच लोहू । बचे नहिँ काल से कोऊ ॥१६॥
बिनसि तन जात ज्यों बारू । उड़त बंदूख बिच दारू ॥
घड़ा जस नीर का फोड़ा । अनल रंजक बीच तोड़ा ॥१७॥
यही बिधि बदन बिनसावे । निकर करि प्रान जब जावे ॥
तृया सुत पुत्र और माता । कहूँ कोइ काम नहिँ आता ॥१८॥
मुलक धन माल से माना । हाथी हथसार सुतरखाना ॥
चले नहिँ जोर और ज्वानी । तजै घरबार सुख रानी ॥१९॥
हकूमत हुकम और जोरा । रहत नहिँ राज मद तोरा ॥
घोड़ा घुड़सार वृप बैला । छुटे रथ बाज सब खेला ॥२०॥
तजे नारी रूपवंता । द्वार सँग साथ पिउ कंथा ॥
निकरि जब बाहरे कीन्हा । सभी सिर कूट रो दीन्हा ॥२१॥

जाय तन तिकट पर डारा। बदन बन बीच ले जारा॥
फूँकि तन खाक सम कीन्हा। पुत्र सिर बाँस को दीन्हा॥२२॥
पकड़ि जम जाल में डाला। बिकट बस काल बिकराला॥
करम सोइ नाक करि पाया। भरम बस बास भरमाया॥२३॥
सुनो सब जक्क की रीती। नगर नर नारि की प्रीती॥
नहीं कोइ संग के साथी। जक्क कुल जाति नहिँ पाँती॥२४॥
परे जम जाल के घेरा। करे छिन काल नित फेरा॥
अरी बिष बास जम लूटे। बंध बस काल नहिँ छूटे॥२५॥
सखी जम जाल बिरतंता। कहूँ कहि खोल सब संता॥
सखी सब संत गोहरावैँ। नेक दिल बीच नहिँ आवैँ॥२६॥
हँसी बस बात नहिँ मानैँ। निंदकर संत को जानैँ॥
नास्तिक कहैँ संत को ख्याली। नीच बुधि करम कुचाली॥२७॥
सखी नृप पुत्र की बाता। दुखी सब बंधु पितु माता॥
सहर सब लोग दुखियारी। नृपति जब दीन्ह नीकारी॥२८॥
चले सुत स्यामपुर आये। रहे सब जगत करि पाये॥
मुलक सोइ सहर संजाबा। पार पट पास पंजाबा॥२९॥
अटक बिच अटकि सब जावैँ। बिकट बिच बाट नहिँ पावैँ॥
निकट नद नीर की धारा। जाय कोइ साध पद पारा॥३०॥
साह के सहर में बासा। जुगल कहूँ स्या जगत फाँसा॥
नग्र नौ द्वार बंद कीन्हे। कोई दस द्वार नहिँ चीन्हे॥३१॥
मिलै सतसंग गुरु केरा। करै सुत राह से फेरा॥
चरन सुत संत से जोड़ै। अटक की भटक सब तोड़ै॥३२॥
बिषय बस बोक मद माता। करै अली ऐँठ की बाता॥
सहर घर घेर सब लीन्हा। जुलम सब नग्र में कीन्हा॥३३॥
साह सुत नारि सहजादी। लीन सब राज औ गादी॥
सहर सब घेरि के लूटे। बंध बस बाद नहिँ छूटे॥३४॥

कढ़ै कोइ साध संधन से । भगै भव बीच बंधन से ॥
अरी जिन साध को चीन्हा । सब्द सुन होय लौलीना ॥३५॥
राह जब नग्र की पावे । पिता पद खोज दरसावे ॥
अललपच्छ पच्छिम को जावे । उलटि जब राह को पावे ॥३६॥
कोयल चित चीन्हि चतुराई । अंड दिये काग घर जाई ॥
पालि जिन कीन्ह तन काया । कोयल सुत सब्द सुनि आया॥३७॥
कोयल सुत शब्द को चीन्हा । उलटि जब जाय लौलीना ॥
सुने सतसंग की बोली । सब्द बिच राह सब खोली ॥३८॥
अरी गुरु गैल से पावै । सुरत घर आदि अपनावै ॥
जिनैं सतसंग नहिँ कीन्हा । जुवा बस हारि तन दीन्हा ॥३९॥
जगत बिच जीवना थोरा । सहे बिन संत यम घोरा ॥
सखी सुन बाप को भूला । सहे कृत बंद के सूला ॥४०॥
भटक भ्रम खान चौरासी । परे बस काल की फाँसी ॥
मिला तन मुक्ति करि खोजा । उड़ै कृत करम का बोझा ॥४१॥
बड़ी नर देह सब गावैं । देव देही नहीँ पावैं ॥
दुर्लभ तन हाथ मैँ आया । निरख तन जात है काया ॥४२॥
बहुरि फिर दाव नहिँ पावै । चेत चित हाथ से जावै ॥
जन्म सब जात है बीता । करो सुत संत से प्रीता ॥४३॥
इंद्री सुख स्वाद रस रंगा । विषय बस बास के संगा ॥
खान और पान पोसाका । इसक बदबास दुख स्त्रासा ॥४४॥
तृया रस भोग मैँ राजी । फिरत बेफहम बस पाजी ॥
सेज नित साज करि सोता । काल नित स्वास को जोता ॥४५॥
बड़ाई मान को चाहै । विषय विष रैन दिन खावै ॥
सुकृत की बात नहिँ भावे । कुंफर दिन रैन रस जावे ॥४६॥
जिभ्या जस जहर की बानी । कुटिल कुबिचार मनमानी ॥
सुनत सूसंग उठि भागे । निरखि कूसंग सँग लागे ॥४७॥

कहे जोइ बात बिधि नीकी । अधम अघ करम बस फीकी ॥
सुलट कोइ राह बतलावै । उलट जेहि खोट कर भावै ॥४८॥
नीच तन नीच की बाता । ऊँच सुन समझ नहिँ लाता ॥
करे कोइ ऊँच से संगा । कुबुधि बस मान कर भंगा ॥४९॥
गहै भव सिंध का भारा । बहै भव कूप की लारा ॥
नीक कोइ गैल बतलावै । ताहि की नेक नहिँ भावै ॥५०॥
सुनो कोइ संग साधन का । करै कहैँ संग बादिन का ॥
हँसी बिच हाट मेँ लावै । बदी सब जाति मेँ गावै ॥५१॥
आस अस अधम अन्याई । कुटिल सतसंग दुखदाई ॥
चीन्ह चित नीच ना निरखै । ऊँच की बात नहिँ परखै ॥५२॥
करम अपने समझ देखै । नीच तन आपको लेखै ॥
खोटाई और की कहना । करम सिर पाप गहि लेना ॥५३॥
हिये नहिँ साँच का बासा । होत जेहि जन्म का नासा ॥
परै भौ भार चौरासी । करम बस नरक की फाँसी ॥५४॥
भूप महिपाल सुन बाता । जुलम जम रीति की साथा ॥
पुत्र नृपराय का छोटा । पेट भर खलक मेँ खोटा ॥५५॥
सहर बिच साध इक आये । नृपति सुत खबर सुनि पाये ॥
नगर किया बास बस आसन । हाथ तूँबी नहीँ बासन ॥५६॥
कुँवर अस बात सुन पाये । नगर बिच साध कोउ आये ॥
चला सब सहर दरसन को । कहत सब करन भोजन को ॥५७॥
कहन कोइ बात नहिँ मानी । बीति दिन तीन अन पानी ॥
भया सब नग्र मेँ सोरा । कुंवर सुन भूप का दौरा ॥५८॥
चले सोइ संत ढिँग आये । पूछ परसाद नहिँ पाये ॥
ज्वाब सुन संत ने दीन्हा । नगर नृप धान आलीना ॥५९॥
दुष्ट सुन सहर का राजा । किया परसाद न यह काजा ॥
कहन सुन साध नहिँ माना । नगर का धान नहिँ खाना ॥६०॥
भूप सुत नग्र पचि हारे । बहुत समझाय सब सारे ॥
अड़ी इक संत ने डाली । करन नित यज्ञ की आली ॥६१॥

करै यग रोज लौलीना । खायँ जेहि हाथ का कीन्हा ॥
और नहिँ अन्न को खावैँ । कहन कोइ लाख समझावैँ ॥६२॥
कहेँ यग रोज करवावैँ । किया तेहि हाथ का खावै ॥
नगर के छोट और मोटे । कहन कहि हार सब बैठे ॥६३॥
नग्र मेँ इक रहे बनियाँ । नारि घर नाम सुखमनियाँ ॥
ताहि घर साध नित आवै । करै सेवा संत भावै ॥६४॥
खबर कहुँ बात उन पाई । दौड़करि आप चलि आई ॥
चरन पर सीस जिन दीन्हा । कहै परसाद नहिँ कीन्हा ॥६५॥
दास दिल दीन की अरजी । दया करि कीजिये मरजी ॥
रसोई चालिकर पइये । दास घर जायकर खइये ॥६६॥
कहै सोइ साध निज बानी । बिना यग ना पिऊँ पानी ॥
नारि प्रति उत्तर सोइ दीन्हा । दयानिधि दीन को चीन्हा ॥६७॥
कहूँ परसंग सतसँग का । सुना सँग साथ संतन का ॥
दरस जोइ साध को जावै । पाँव पर यग्य फल पावै ॥६८॥
पाँव पर पाँव फल यग के । महातम कहत सब मिलके ॥
पाँव चल बहुत मैँ आई । भया यग पाँव पर पाई ॥६९॥
वचन यह सत्त परमानी । चलो घर मोर पियो पानी ॥
अड़ी यग एक के हेता । भया दर पाँव यग केता ॥७०॥
समझि सोइ साध चलि आये । जाय परसाद घर पाये ॥
मद्द मन मान नृप सुत का । भास भया ज्ञान तन बुत का ॥७१॥
नारि की बूझ को बूझा । सोच हिये माहिँ जब सूझा ॥
संत से करत आधीना । संत गति ज्ञान नहिँ चीन्हा ॥७२॥
मोर मन मोट है स्वामी । करम किये खोट अभिमानी ॥
चरन मेँ राखिये चेरा । नजर कुछ मोहिँ पर हेरा ॥७३॥
कृपानिधि संत दयाला । दया करि कहत हवाला ॥
सुनो नृपराय के पूता । बड़ा जम जाल मजबूता ॥७४॥

जबर जमराय दुखदाई । निकरि जिव जात जब भाई ॥
बाँधिकर लेत वोहि ठामा । छूटि जब जात है जामा ॥७५॥
तपत सिल बीच ले जारै । बहुरि फिरि नरक लै डारै ॥
काढ़ि फिरि नरक से बाँधै । कठिन जम जाल में फाँदै ॥७६॥
बहुरि भ्रम खानि बिच जोनी । बिपत कहुँ क्या होत होनी ॥
जुगन जुग नर्क में बासा । कहूँ क्या काल की फाँसा ॥७७॥
हतन जोइ जीव को मारा । ब रि नहिँ होत निरवारा ॥
बदन बदला नहीं छूटै । पकरि जम जोनि में लूटै ॥७८॥
मधू मन समझ सुन ज्ञाना । बहुत जम करत हैराना ॥
भया बहु सोच मन माहीँ । मधू मन हाय तन आई ॥७९॥
भये सोइ सिष्य साधू के । बहे जल नैन भादों के ॥
कहो निरवार बिधि मोरी । चरन सरना भयो तोरी ॥८०॥
छाँड़ि सब दीन्ह फरफंदा । भये अब साध के बंदा ॥
साध कहे कुँवर सुन बाता । उलटि घर जाय सुत साथा ॥८१॥
जतन कोइ और नहिँ भाई । रात दिन काल घर खाई ॥
बिकल बेहाल जब देखा । दयानिधि बाट का लेखा ॥८२॥
ऐन बिच नगर घर पावै । अललपक्ष उलटि के जावै ॥
करै सुत सैल से फेरा । निरखि नित द्वार को हेरा ॥८३॥
हुआ उजियार घट माहीँ । देख सुन बीच के ठाईँ ॥
सब्द इक होत है न्यारा । फोड़ असमान निरधारा ॥८४॥
सुरति और सब्द का मेला । कटे गर्भ काल भ्रम खेला ॥
गैल जब नगर की पाई । मिटा दुख दुंद दुखदाई ॥८५॥
भेँट जब बाप से कीन्ही । मात पित बहिन की चीन्ही ॥
बंधु सत सहर के लोगा । करत सुत सब्द सुख भोगा ॥८६॥
तुलसी यह बरन बिधि कीन्हा । समझ कोइ साध लौलीना ॥
नृपति सुत राज नहिँ गाई । अगम गम समझ दरसाई ॥८७॥

(१३)

नृपति इक थे परन धारी। नगर में पैंठ गुलजारी ॥
सभी आवैं दिसावर के। बेचने माल ब्योपारी ॥ १ ॥
पैंठ में जो कछु आवे। मठी से न माल फिर जावै ॥
टेक दृढ़ भूप ने धारी। नेम नृप ने लिया भारी ॥ २ ॥
बिकै जोइ बेच करि जावे। रहै सोइ राय मँगवावे ॥
दाम देवै तुरत डारी। पैंठ के भाव बीचारी ॥ ३ ॥
बरस ऐसे कई बीते। बचन के राय मजबूते ॥
मुलक मुलकों में चरचा री। करै सब देस दरबारी ॥ ४ ॥
एक दिन पैंठ के माहीं। बिकन को मूर्त्ति इक आई ॥
बनी बहु भाँति छबि न्यारी। लुभे दिल देखि अधिकारी ॥५॥
सभी पूछे कारीगर पै। मूरत कहो कौन की थरपै ॥
कही उनने बरनि सारी। सनीचर रूप बिस्तारी ॥ ६ ॥
सभन सुनि के लिया रस्ता। बड़े दुख दुंद का करता ॥
कहो को लेइ उपकारी। बिपत जग जिंद अधिकारी ॥७॥
सुनै कोइ पास नहिँ आवै। दरस को चित्त नहिँ चावै ॥
नगर सब देइँ हँस तारी। अगर को ले बिषम जारी ॥८॥
भूप कहे पैंठ के माहीं। बिका कहो क्या बिका नाहीं ॥
करिंदे और कोठारी। माल लेव जाय सम्हारी ॥ ९ ॥
भूप के हुकम से आये। सनीचर देख मुसकाये ॥
राय के कान पर डारी। माल सगरा बिका भारी ॥१०॥
मुरत इक है सनीचर की। हुकम बिन ना खरीदी की ॥
नृपति यों कहे प्रनधारी। होयगी जो होनहारी ॥ ११ ॥
खरीदी जाय के लावो। परन मोरा नेम चावो ॥
करिंदे कहत कोठारी। नृपति की मति गई मारी ॥१२॥
सनीचर को खरीदे यह। बुरा हो कौन कह करके ॥
गये जब पैंठ मंझारी। मुरत ले महल बैठारी ॥ १३ ॥

... रात का सुपना। सभी कहैँ महल लेव अपना॥
नहीँ है रहन हम्मारी। नृपति नहिँ बात बीचारी॥१४॥
सुपन सत सुकृत ने दीन्हो। राय भनकार को चीन्हो॥
अब दसा कीन्ह तैयारी। दलिद्दर ने दसा धारी॥१५॥
कई दिन बाद के बीते। घोड़े घुड़साल सब रीते॥
सनीचर चरित बिस्तारी। घोड़ा बना रूप कंधारी॥१६॥
पैँठ मेँ बिकन को आया। खरीदी राय करवाया॥
नृपति जब कीन्ह असवारी। एड़ देते उड़ा भारी॥ १७॥
भूप को सुध नहीँ अपनी। गगन चढ़ते लगी कपनी॥
दिया असमान से डारी। चोट मन चूर अधिकारी॥१८॥
घोड़ा नृप डार करि भागा। बड़ा बनखंड जेहि जागा॥
पड़े नृप सोच भइ भारी। बदन सब होस बिसारी॥१९॥
अगर वह देस का राजा। चोर कोइ माल ले भाजा॥
फौज तल्लास करि हारी। आये जहँ भूप बेजारी॥२०॥
और नहिँ देख जहँ कोई। चोर अलबत्त यहि होई॥
नृपति की थाप धर मारी। उठे चल संग आगारी॥२१॥
उसी को चोर कर कपड़ा। ऊँट पर बाँध कर जकड़ा॥
भूप वहि देस के द्वारी। पड़े रहे जुगन जुग चारी॥२२॥
कहैँ तुलसी बिना बूझे। नैन बिन ना कछू सूझे॥
मिलैँ कोइ संत उपकारी। नंदि करैँ काटि निरवारी॥२३॥
कहे हिरदे अरज स्वामी। रेखते मेँ बरन बानी॥
बिना अर्थंत क्या जाने। नहीँ कोइ भेद पहिचाने॥२४॥
कही तुम ने गोप गाई। गूढ़ गति गुप्त गोहराई॥
मूढ़ जग जीव क्या समझैँ। संत सुख सैल की रमजैँ॥२५॥
नृपति कहो को परन राखा। सनीचर कौन को भाखा॥
पैँठ कहो को नगर माहीँ। भूप कहो नाम समझाई॥२६॥
करिंदे कौन कोठारी। खरीदे माल सब झारी॥
सनीचर महल मेँ कीन्हा। उदासी ज्वाब किन दीन्हा॥२७॥

घोड़ा कहो कौन कंधारी । नृपत असमान चढ़ डारी ॥
भूप कहो भूम का राजा । माल को चोर ले भाजा ॥२८॥
कौन बन भूम बनखंडा । कहाँ नृप सैज का टंटा ॥
फौज कहो कौन असवारी । बँधे नृप कौन से द्वारी ॥२९॥
कहो बिरतंत बिधि बैना । होय सुन बैन सुख चैना ॥
कहै हिरदे बरन कीजे । अरज मोरी मानि के लीजे ॥३०॥
कहैं तुलसी बरन बूझै । हृदे हिये माहिँ जब सूझै ॥
नैन से तिमर जब जावै । समझ सतसंग से पावै ॥३१॥
अमल अमली करैं खोजा । कही करि बिमल मत मौजा ॥
जमीं असमान से अंतर । पढ़ै जब मौन का मंतर ॥३२॥
जिनन भाखी बरन बानी । कही उन भेद सहदानी ॥
अगर यह समझ को पावै । बिना गुरु ज्ञान नहिँ आवै ॥३३॥
अरथ अंदर मरम माहीँ । कही जिन तोप के गाईं ॥
सुनो अब भेद निरवारा । कहूँ सब कहन बिस्तारा ॥३४॥
बरन जड़ मूल से भाखूँ । कहन में नो कछू राखूँ ॥
कथन कथनी रूप माहीँ । अरूपी आद समझाई ॥३५॥
पाँच तत से भया अंडा । अरूपी ब्रह्म ब्रह्मंडा ॥
बसे सब माहिँ तन धारी । रवि किरन भूल बिस्तारी ॥३६॥
कदम के वृच्छ पर बैठे । गगन गोलोक में पैठे ॥
केल कीन्हा बहुत भारी । ग्वाल गोपी समझ धारी ॥३७॥
भये नृपराय मन भूला । भँवर तन धार अस्थूला ॥
कहन उनकी बरन भाखी । करन कृत धुंध की आँखी ॥३८॥
नगर भुँइ लोक के राजा । पँठ के करम उपराजा ॥
यही भर माल भुमी में । परन नित नेम कुंभी में ॥३९॥
आवा ओर गवन कंधारी । घोड़े चढ़ि बैठि असवारी ॥
सनीचर चार खानी में । बड़े अभिमान मानी में ॥४०॥
सुमत सुग्रीव सम सूरत । गये जब महल बस मूरत ॥
फौज जमराय की धाई । पकड़ि मनराय बँधवाई ॥४१॥

ऊँट तन छूटि के जकड़ा। चोर सुख स्वाद में पकड़ा ॥
करम का माल चोरी में। नृपति डारे अघोरी में ॥४२॥
काल के द्वार दरवाजे। कुमति मन मूढ़ नहिँ ताजे ॥
कामना कूप कारिंदा। कोठारी कोट में फंदा ॥४३॥
निकसि नहिँ गैल को पावै। काल जंजीर चढ़वावै ॥
कुलफ दीन्हा बहुत भारी। भोग भोखान में डारी ॥४४॥
असल यह जाबता कीन्हा। फसल बहु खान रस लीन्हा ॥
सुनो हिरदे अरथ बानी। परख लेव पैँठ पहिचानी ॥४५॥
भरम भौसिंध यह पैँठा। बाँध जम ने दिया ऐँठा ॥
कहैँ तुलसी तनक गाई। कहा हम हेर गोहराई ॥४६॥

(१४)

भक्त हा साध जब जाने। बीजक बिरतंत पहिचाने ॥
सब्द पढ़ ज्ञान नहिँ बूझे। अगम गति कौन बिधि सूझे ॥१॥
साढ़े छः से बचन बानी। चौरासी राम रामैनी ॥
सब्द कहे एक सै तेरा। बारह सब देख ले कहरा ॥२॥
द्वादस बसंत दरसाई। बिरोली बरन समझाई ॥
कक्‍हरा कहन की बानी। बिप्र मति की कथा आनी ॥३॥
तीन से साठ हैँ साखी। बीजक बिरतंत सब भाखी ॥
सब्द साखी बहुत गावै। समुझ नहीँ सार पै लावै ॥४॥
आतमा ज्ञान बुधि बानी। सिषन को दीन्ह सहदानी ॥
जीवन नहिँ मरन बतलावैँ। भास आकास समझावैँ ॥५॥
तत्त पाँचो पाँच माहीँ। आवा नहिँ गवन ठहराई ॥
यही बिधि बात बतलावैँ। सुनै सिष मूर्ख मन भावैँ ॥६॥
अगम गति संत ने भाखी। बिना सतसंग नहिँ आँखी ॥
गुरू सिष ज्ञान के गंदे। हिये दृग देख बिन अंधे ॥७॥
नहीँ घर खोज पहिचाने। सभी भव खान भरमाने ॥
ब्रह्मँड सब पिंड के माहीँ। सुरति चढ़ देख दिखलाई ॥८॥

चराचर खान लख चारी। ब्रह्म मन जीव जग भारी ॥
अगम गति याहि सोँ न्यारी। कही सब संत निरवारी ॥९॥
चढ़ै कोइ गगन की घाटी। रवी ससि मद्धि में बाटी ॥
सुखमना बंक इंगल पिंगला। स्वास दहने बायें बदला ॥१०॥
चाँद और सुरज स्वासा को। नाक जोगी निरासा को ॥
रवी ससि रहत गगन में। सुरत घर घाट है जा में ॥११॥
चंद नहिं सुरज और पावना। अधर अकास नहिं भावना ॥
जुगत जोगी नहीं जानी। अगिन पिरथी नहीं पानी ॥१२॥
बदन बैराट तत तारी। संत गति याहि से न्यारी ॥
जुगत जब राह दरसावैं। अगम गुरद्वार से पावैं ॥१३॥
पिया पद अधर की राही। संत कछु और विधि गाई ॥
दया दिल संत से पावैं। परम पद पार दरसावैं ॥१४॥
आतमा ज्ञान अपने की। कहैं सब बात सुपने की ॥
करम बस बंध विधि धारे। जभी जम लात धरि मारे ॥१५॥
अरथ बिन बूझ बानी के। भये जग जीव खानी के ॥
कहा कब्बीर कछु औरी। समझ बिन सृष्टि भइ बौरी ॥१६॥
तुलसी कोइ तोल के बूझै। अगम अरथन्त में सूझै ॥
पंथ और भेष में नाहीं। गुप्त मत संत के माहीं ॥१७॥

(१५)

टुक जीवने के कारने। काजी जुबाँ नहिं भरदा वे ॥टेक॥
नद पुलाव पका सब खाना। कलिया किया कहो जरदा वे ॥
सरदा सीर बिरंज सीरमाल। खुस खाना ये खर दा वे ॥१॥
तन मन बदन बनाया जिन्ने। सोई यार सँग परदा वे ॥
जिबराईल[१] जबर नहिं जाना। मान मिट्टी तन गरदा वे ॥२॥
खान पान खुस खेल खुसी में। मस्त भया मन मरदा वे ॥
तेल फुलेल तवाजा तन की। करत सैल क्या फिरदा वे ॥३॥

---
(१) जमराज।

जड़ ज़ुबान सब जेर किया ज़ोई। इसक संग रस करदा वे ॥
तुलसी तौल तमासा तन का। खोज किया नहिँ घर दा वे ॥४॥

(१६)

यह भव भृङ्गी भूल में। मन तन तबाह होत रे गुन ॥टेक॥
साम सुबह जब तक वक्त जम जी। जुलुम दम खोत रे तन ॥
दिल्ल दवा मुरसिद के प्याले। पी पिया लख जोत रे जिन ॥१॥
रूह रवाँ जे कर मुरीदी। जाग पड़ा क्या सोत रे सुन ॥
फक हवा जावे बदन से। सो समझ सुन मौत रे मन ॥२॥
सो तमामे जगत में कोई। यह न मानी बहुत रे किन ॥
बेसमझ तूँ मुँह पै खावै। मल में मल क्या धोत रे पुन ॥३॥
तुलसी तवक्के कर कहूँ। यह बेवफा में थोत रे चुन ॥
खाब खिलकत खान में तू। हू हवा सुन सोत रे धुन ॥४॥

(१७)

यह अचेती चेत मन। यह क्या फिरे बन बन में रे तूँ ॥टेक॥
ख्याल कर उस वक्त के बिन। दिन तबाही होत रे नूँ ॥
जूँ जटा के बीच रे सुन। कड़क गई या तेल रे घूँ ॥१॥
काल जबर जब ले खबर कर। बंद बस ना नूर पै मूँ ॥
फूँ करावत मत के मारे। जाल जब्बर जम की रे जूँ ॥२॥
बस बिना बेबस बेहोसी। दोजखी दुनिया में रे थूँ ॥
हू हवा की कर दवा दिल। भिस्त पावे पिंच रे छूँ ॥३॥
मौज मुरसिद जब जनावैं। ला इलाह असमान रे रूह ॥
चूँच ले अबर से पानी। तुलसी पियाला भर के रे पिउ ॥४॥

(१८)

दिल मिल दिवाने दोस्त को। बेहोस बदन पेखो खुसी ॥टेक॥
सुन ये जमाने बीच से। भिन भिन भको मन में फँसी ॥
फहम फाके की फिकरवँद। फंद मिल फिर मिल भुसी ॥१॥
चोर पाँचो ने मुकर कर। यह पचीसन घर मुसी ॥
तूँ खुसी सँग मिल इनों के। जिनकी सुहबत में घुसी ॥२॥

अब समझ कर याद करले । को अमर कर को नसी ॥
मुरशिद के दस्तोँ दिल दवा । पावै रमज जब लौ लसी ॥३॥
तुलसी तबक चौदह चमन । मन मूल मिल दिल के उसी ॥
रूह की रमज करके समझ । सो खोज कर कोऊ ना हँसी ॥४॥

(१९)

याद प्यारे की इसम पर । प्यार कर दोनोँ चसम ॥ टेक ॥
तन बदन आदम किया । कर खोज खाविँद रे खसम ॥
खाक तन मट्टी मिलेगा । गोर कोइ अगनी भसम ॥१॥
हक्क बातैँ हैँ इमानी । मान के कहूँ खा कसम ॥
फिर फना होती बखत । जब जम की क्या पकड़ै पसम ॥२।
हिन्दू के बेदोँ चार से । नहिँ पार पंचम है सुसम ॥
वेअंत अंत संत हैँ म्याँ । उन से पावे पिव रसम ॥३।
तुलसी तलासी जिन करी । तिन तन तबह मिट्टी जिसम ॥
जम राज रस्ते से अलग । करके बिलग मिल बेबसम ॥४॥

(२०)

दिन चार है बसेरा । जग मेँ नहीँ कोइ तेरा ॥
सबही बटाऊ लोग हैँ । उठ जाइँगे सबेरा ॥१॥
अपनी करो फिकर । चलने की जो जिकर ॥
यहँ रहन का नहिँ काम है । फिर जा करो नहिँ फेरा ॥२॥
तन मेँ पवन बसेई । जावे हवा नस देही ॥
टुक जीवने के कारने । दुख सहत क्योँ जम केरा ॥३॥
सुख देख क्योँ भुलाना । कुछ दिन रहे पर जाना ॥
जैसे मुसाफिर रात रह । उठ जात है कर डेरा ॥४॥
क्या सोवता पड़ा । जम द्वार पै खड़ा ॥
तुलसी तयारी भोर कर । फिर रात को अँधेरा ॥५॥

(२१)

क्या फिरत है भुलाना । दिन चार मेँ चलाना ॥
काया कुटम सब लोग यह । जग देख क्योँ फुलाना ॥१॥

धन माल मुल्क घनेरे। कहि कर गये बहुतेरे ॥
कितने जतन कर कर बढ़े। घट तंत ना तुल़ाना ॥ २ ॥
हुसियार हो दिवाने। चलना मँजिल बिहाने ॥
बाकी रहे पर आवता। जमराय का बुलाना ॥ ३ ॥
लिखते घड़ी घड़ी। कागज कलम चढ़ी ॥
तुलसी हुकम सरकार का। कहे देत हूँ उलाना ॥ ४ ॥

(२२)

गुर ज्ञान में कही। घट बोल ब्रह्म यही ॥
सब माहिँ आतम एक है। कहो कहाँ छूत रही ॥ १ ॥
चारो बरन भये। बाम्हन बैस कहे ॥
छत्री सूद्र सब एक हैँ। जग जाति पाँति नहीँ ॥ २ ॥
बैराट ब्रह्म बदन। कोई जाति ना बरन ॥
सब मेँ खिलाड़ी खेलता। बिन भेद भूल भई ॥ ३ ॥
हिन्दू नहीँ तुरक। कोई सेत ना सुरख ॥
अपने मेँ चेतन चीन्ह ले। लख मंदर मूल वही ॥ ४ ॥
कोइ जान छूति करै। यहि भाँति नरक पड़ै ॥
अद्वैत ब्रह्म बेदांत में। निरदोष कहत सही ॥ ५ ॥
साधन बिचार लीया। आचार दूर कीया ॥
घर घर से माँग मधूकरी। जब एक दृष्ट लई ॥ ६ ॥
तुलसी ने टेर कही। जग भेष टेक ठई ॥
अज्ञान धरम अचार मेँ। नर डगर डिंभ दई ॥ ७ ॥

(२३)

ढुलना सुनो धधकारी। महलोँ उठ झनकारी ॥
लागी लगन आली मन को। लहरँ उठीँ चलीँ बन को ॥ १ ॥
पूछा पंथ सब झारी। ढूँढा जग भेष भिखारी ॥
कहूँ ना निसाँ दिलदारी। खोजे पिया पिउ प्यारी ॥ २ ॥
सभी सतगुर संत बतावैँ। कहुँ सतसँग से लख पावैँ ॥
बूझा सुना धुनि बानी। कोइ भाखै न भेद बखानी ॥३॥

अली अस अस बैस बितावा । कहुँ खोजत खोज न पावा ॥
कंजा गुर गैल लखाई । धुनि सुनि सत सुरति लगाई ॥४॥
तुलसी तन तपन बुझाई । सुन सुत अपने घर आई ॥
सिंधा बुँद समुँद समाना । लख सूरति सब्द ठिकाना ॥५॥

(२४)

हिये में पिया लख पावा । गगना गुमठ दरसावा ॥
सारँग सुरति से छूटा । कलसा करम का फूटा ॥१॥
सुन की धुन दरसानी । पौढ़ी पिया पहिचानी ॥
सुन में सब्द लख पावा । मन से सुरति दौड़ावा ॥ २ ॥
फूला कँवल दल माहीं । सुरती सब्द में धाई ॥
नाली निरख नभ द्वारा । देखा ब्रह्मंड पसारा ॥ ३ ॥
गुर से गली लख पाई । प्यारी पिया घर आई ॥
वेनी बिबिध बिध देखा । आखा अगम का लेखा ॥ ४ ॥
बूझैं कोइ संत बिचारी । निरखा निज नैन निहारी ॥
तुलसी चरन का चेरा । पावन रज कीन्ह निवेरा ॥ ५ ॥

पस्तो

(१)

आसिक विना वेहोस खाक बदन होइ लटा ॥ टेक ॥
अरी देखिये सखी री होस में जिगर फटा ।
तन मन बसै बेचैन झमक चमक चढ़ अटा ॥ १ ॥
आवै जो अवर जोर घुमँड घुमँड के घटा ।
बिलखत बदन बेखबर जवर बाँधि सिर जटा ॥ २ ॥
सम्हाल सुरति सैल खेल ख्वाब ज्यों मिटा ।
पल में पच्छिम के द्वार पाय वार ना हटा ॥ ३ ॥
रोसन दिलों के बीच भक्ति ज्यों झटापटा ।
माखन लिया मनसूर दूर काढ़ि दे मठा ॥ ४ ॥

(२)

देखो खलक के बीच कोई अमर आज है।
खिलकत फना बेहोस जिबरईल साज है॥ १॥
रोसन रबी रूह राह चाह चेत काज है।
आसिक इसक इलाह लाह खोज लाज ले॥ २॥
अंदर दिलौं के बीच चाह राह रब्ब है।
मुरसिद मिलैं मुरीद मेहर पीर जब कहै॥ ३॥
चीन्है अलिफ की आद बाद जात है बहा।
मनसूर मूर पूर तन में जात है कहा॥ ४॥

(३)

लैलै लहर की क्या कहूँ मजनूँ बेहोस है।
अंदर दिलौं में दर्द गर्द गजब सोस में॥ १॥
आवे औ अजब आय लाय हाय क्या कहूँ।
दोनौं चसम से दूर मूर लाख कोस पै॥ २॥
होवे हिये के बीच दहन दाह जो दगिन।
जर जर उठे ज्यौं लपट झपट झार ज्यौं अगिन॥ ३॥
हालत बदन के बीच हाल ख्याल ना रहै।
कहुँ क्या कलेजे बीच लैलै लहर को कहै॥ ४॥
मजनूँ मियाँ फकीर लैलै लगन में हुआ।
तुलसी बिना मिलाप हाय हाय करि मुवा॥ ५॥

(४)

मजनूँ लगन की लाग लैलै लटक में मुवा।
अंदर जिगर में खटक आसिक ऐन में हुवा॥ १॥
खुदी खुद मिले महबूब खलक ख्याल कर जुवा।
हालत हवाल हुसन होस सोस सब धुवाँ॥ २॥
रूह की रमज के बीच समझ बुंद सा चुवा।
जबरईल जब्बर पीर पैर बाँधि के सुवा॥ ३॥

दिल की दिलों में सैल सुलटि उलटि कर कुवा ।
हर दम उठे अवाज तुलसी कहे तुवा तुवा ॥ ४ ॥

(५)

क्या पी की लगन लै मुझे दरसावने लगी ॥ टेक ॥
मोरा हिया कठोर प्रेम नेक ना पगी ।
अरी ये सखी अभाग सुरति सोवति ना जगी ॥ १ ॥
सखि कहन सुबह साम समझ नेक ना चँगी ।
जैसे बेहोस बहि न बुझी अगिन ना जगी ॥ २ ॥
मेरे करम के दाग भाग भरम ना भगी ।
सतगुर दयाल मेहर मरज अरज ना मँगी ॥ ३ ॥
तुलसी बिना तलास आस अंग ना सँगी ।
हिन्दू तुरक पै जबर लाग जम की जो जगी ॥ ४ ॥

(६)

महबूब से मिलाप आप अरज यह करूँ ॥ टेक ॥
हर दम कदम के पास सीस चरन पै धरूँ ।
बिन बिन दिदार यार प्यार पेन्न बिन मरूँ ॥ १ ॥
हर वक्त जक्त बीच जुलम जार में जरूँ ।
मेरा उबार बार बार कदम से तरूँ ॥ २ ॥
होवे रहम की रमज समझ सुरति को भरूँ ।
सतगुर दयाल हुकम जोर जुलम से लडूँ ॥ ३ ॥
तेरी तवक्के[1] ही में बेफहम से फिरूँ ।
ताकत बिना हवास होस तुलसी मैं मरूँ ॥ ४ ॥

बसंत

(१)

अलख अधर घर लख निहार । कोइ साध संत बिन अगम पार ॥टेक॥
सतगुर से गुर मूर चीन्ह । उलटि अलल जल चढ़त मीन ।
सत मत मारग तत विचार । तब लख पावे सुरति सार ॥१॥

(१) आशा ।

ज्ञान ध्यान पद निरखि नैन । पदम आदि पर अंत सैन ।
संत घाट तिरबेनी धार । मन मलीन सब धोइ निकार ॥२॥
मंजन करि करि देख देस । पिया पद परसत एक भेष ।
कर्म काल करि काट जाय । लै लख डोरी पद सिहार ॥३॥
तुलसी तज सब तरक बाँध । सतगुर से लख पावै आदि ।
साध सुरति सँग कर दिदार । लखन सैल करि करि सिधार ॥४॥

(२)

संत सिरोमन खेलैं फाग । जहँ अनहद मुरली उठत राग ॥टेक॥
जगत आस अध उड़ै अबीर । गुन गुलाल धरि मारै धीर ।
सुरति निरति नित नैन जाग । अलल पच्छ उड़ि उलटि भाग ॥१॥
ऋतु बसंत जहँ बिमल ठौर । कंथ पंथ पर अंत और ।
हंस भवन अज अमर लाग । संग सखी सज सुरति पाग ॥२॥
जहँ काल करम करता नसाय । रज सत तम जम जहँ न जाय ।
निरगुन सरगुन टूटि ताग । नहिँ पाँच तत्त तन पौन आग ॥३॥
अजर लोक सतपुरुष धाम । सोइ संत सुझावत सत्त नाम ।
तुलसी तत मत मरम त्याग । जहँ पिंड ब्रह्मंड न अगम थाग ॥४॥

(३)

सतगुर संत बसंत बास । जहँ पोहमी पवन नहिँ जल अकास ॥टेक॥
छाँह धूप नहिँ चंद सूर । कंज कँवल पद पार मूल ।
मान सरोवर दीप चास । जहँ होत जोत जगमग प्रकास ॥१॥
कोटि भान भल भूम धाम । अली अलीक लख ले निदान ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस नास । जोगी जती नहिँ जग निवास ॥२॥
साध आदि कोइ संत जाय । पंथ अगम घर में समाय ।
यह कोइ बूझै परम दास । भाव भगति जग से उदास ॥३॥
सतसँग कर लखि पावे सोय । काल करम सब डारे धोय ।
धरन धार सूरत बिलास । सो पद गावे तुलसीदास ॥ ४ ॥

(४)

कहुँ कहन सखी सुन सीख मान । सतसँग कर हो करम हान ॥टेक॥
जग बिच बंधन काल जाल । दुरलभ तन मन जन्म हार ।
दिना चार सुख कर निदान । अंत पकड़ि जम डारै खान ॥१॥
मात पिता सुत नारि अंग । यह नहिँ तेरे साथ संग ।
करम कीन्ह सोइ भोग जान । समझ बूझ तज टेक ठान ॥२॥
परमारथ की राह चीन्ह । तन छूटे जब जम अधीन ।
सत सत भाखूँ गुर की आन । धरत काल नहिँ करत कान ॥३॥
बिन जाने तुलसी बिहाल । परख पिया नित खात काल ।
सतगुर सूरत निरत ध्यान । संत साख लख समझ ज्ञान ॥४॥

(५)

लख ले री मोरी बौरी बात । ऋतु बसंत तजि कहँ को जात ॥टेक॥
तन भीतर इक अजब मूल । बन बँगला पच रंग फूल ।
जरद सुरख लख सेत साथ । करिया हरा रँग पाँच भाँत ॥१॥
जल पवना पिरथी अकास । अगिन तत्त बस बदन बास ।
इन सँग बंधन बिषे खात । लै सतसँग कर आवे हाथ ॥२॥
सुरति सिरोमनि संत गैल । चढ़ो री अधर घर निरत सैल ।
पुरइनि घट पट परदे पात । लखन खेल बिन बदन गात ॥३॥
तुलसी तज भज आज काज । फिर दुरलभ तन अस न साज ।
आज मिलो गुर पुरुष तात । पिया घर बिन जम मारे लात ॥४॥

(६)

लख आतम अंदर परस पास । और सकल तज जग की आस ॥टेक॥
गज मन मकरँद फंद डार । फिरत पाँच पचवीस लार ।
क्रोध काम बस लोभ बास । इन सँग रँग रस परत फाँस ॥१॥
कर यह दूर सखी मूर जान । सुरति अधर नभ लखे न भान ।
सुखमनि सुनि धुनि कर अकास । इँगल पिंगल बिच बिमल बास ॥२॥
जोग ध्यान धर जोत देख । आतम तत अली अलख लेख ।
मंदर में अली दीप चास । सब ब्रह्मंड तक लख निवास ॥३॥

संत गैल सखी अंत रीत । अगम गुरू कर पावे प्रीत ।
तुलसी जोगी लखे न तास । मनमत सूरत होत नास ॥४॥

(७)

निस दिन बीति बसंत जात । नर तन तेरे फिर न हाथ ॥टेक॥
पल पल धावत चारो ओर । कहुँ बैठक नहिँ कीन्ह ठौर ॥
चलामान चंचल सनाथ । नहिँ अंदर कोइ पकरि पात ॥१॥
बहु तरंग भूमी के भूप । तैँ भुलान अपनो सरूप ॥
भरमत जुग जिव जन्म जात । अब गुर का कर संग साथ ॥२॥
दिना चार मेँ बदन खाक । बिन बिबेक नहिँ सूझि आँख ॥
बन बन डोलत पात पात । रस सुगंध तज तोल बात ॥३॥
काया अंकुर करम काग । अब इन से तैँ निकरि भाग ॥
तुलसी तत बरतन बिलात । करम असुभ सुभ करत घात ॥४॥

(८)

मन अपंग अम्बर रसान । ताँबा कंचन होत जान ॥टेक॥
ताँबा तमक औटँ करि डाल । भट्ठी तन घरिया मेँ गाल ॥
सुमति सुहागा दे निदान । सतगुर बूटी ले पहिचान ॥१॥
ब्रह्म अगिन अंदर जराव । अघ ईंधन दे खूब ताव ॥
रस निचोय ले पीसि पान । होत कीमियाँ जोत ध्यान ॥२॥
निरख निसाने नैन घाट । हर दम हरखित हिये की बाट ॥
अगम आदि गुर सब्द भान । सुरज किर्न मिलि लख्ख समान ॥३॥
कर्म काटि काया मेँ पूर । आप अपनपौ परख मूर ॥
सुरत डोर ले डगर छान । तुलसी तन मन ब्रह्म बखान ॥४॥

(९)

घट बसंत जहँ पिया को पंथ । तैँ कहँ खोजत अंत अंत ॥टेक॥
दीप नगर लखि बाट चीन्ह । सुन्न सिखर पर सुरति लीन ॥
सतगुर मारग अति अतंत । नित पहुँचे जहँ अगम संत ॥१॥
कुंभ कुरम पर अधर घाट । बिमल लोक लख पावे बाट ॥
जहँ इक साहिब अज अचिंत । वे मिलि तोड़ैँ जम के दंत ॥२॥

आदि अंत टूटै बिखाद। ये कोइ बूझै बिरले साध ॥
चढ़ प्रयाग पद भये निचिंत। न्हावत निरमल सुरतवंत ॥३॥
पदम पुरुष बेनी बिलास। बंधन टूटे भये निरास ॥
जग दुख पावत जीव जंत। तुलसी निरख कहि आदि अंत ॥४॥

(१०)

कोइ खेलै खोज बसंत चीन्ह। पद जद पावै होय अधीन ॥टेक॥
तजि माया बंधन बिकार। तब सतगुर से पावै सार ॥ ॥
ज्यों जल बिन रहै तड़प मीन। आठ पहर रहै बिरह लीन ॥१॥
सो सखि सूरत पावै खोज। पुरुष पलँग पर मारै मौज ॥
सो अस भाखै भेद चीन्ह। तन मन दरपन माँज कीन्ह ॥२॥
मूर मता सतगुर लखाय। सो सूरत नित आवै जाय ॥
जब मतंग मन होत दीन। पिय रस प्याला अमर पीन ॥३॥
अजर लोक में कर निवास। मुक्ति जुक्ति जोनी निरास ॥
सुख इंद्री गुन त्याग तीन। तुलसी लखा जब अज अमीन ॥४॥

(११)

कोइ होरी बसंत न तोली तंत। बिमल बचन बोली बेअंत ॥टेक॥
पोथी में देखो निहार। पढ़ने में नहिं परम सार ॥
सतसँग से कोइ पावै पंथ। गुर खिड़की खोली अतंत ॥१॥
ज्ञान ध्यान बैराट जोग। ये सब काया करम भोग ॥
माया बंधन भागवंत। करनी कीन्ह सो ली लिखंत ॥२॥
साँच समझ जग सुवा समान। परमारथ की कीन्ह हान ॥
प्रलय काल सब जीव जंत। जनम भोग भोली परंत ॥३॥
सास्तर कहै आतम बिचार। सोई सनातन धरम सार ॥
ऋषी राज मुनि तप तपंत। जग विषई छाड़ो ली अंत ॥४॥
संध्या तरपन कर अचार। इष्ट नेम नहिं पैहो पार ॥
नकल नीत भूले अनंत। असल बिना जम तोड़ै दंत ॥५॥
झूठ साँच पद को पिछान। सज्जन जोइ जिन लीन्ह छान ॥
नहिं निरधार बिन सरनि संत। तुलसी सुरति घो लीन्हो कंथ ॥६॥

मंगल

(१)

सुन सुन सखी सुजान ज्ञान गति गाइये ।
यह जग अगम अपार पार कस पाइये ॥ १ ॥
ज्यों समुद्र की लहर कहर अस आइये ।
ज्यों सलिता को नीर थीर ठहराइये ॥ २ ॥
जल अति बहै अथाह थाह तट ना मिलै ।
केहि बिधि उतरूँ उतंग संग कोइ ना चलै ॥ ३ ॥
है कोइ केवट यार पार मोहिं कीजिये ।
जहँ मोरे पिय को देस भेद तहँ लीजिये ॥ ४ ॥
देखूँ महल मिहराब ज्वाब पिय से करूँ ।
छाड़ी देस बिदेस लार पिया के लरूँ ॥ ५ ॥
पिय मेरे चतुर सुजान जान सब लेइँगे ।
तुलसी अचल सुहाग भाग मोहिं देइँगे ॥ ६ ॥

(२)

अगम गली गम सार पार चढ़ि पेखिये ।
जहँ सतगुर के बैन नैन नित देखिये ॥ १ ॥
चल सतगुर के महल टहल तहँ कीजिये ।
जीवन जनम सुधारि सार करि लीजिये ॥ २ ॥
सखि सुखमनि घर घाट बाट पिय की लखो ।
तोड़ो जम के दंत संत सरना तको ॥ ३ ॥
पिय बिन ध्रिग संसार जार जग जोर है ।
ध्रिग जीवन बिन बास पास पिया को कहै ॥ ४ ॥
सतगुर संत दयाल जाल जम काटिहैं ।
करिहैं भव जल पार ठाठ सब ठाटिहैं ॥ ५ ॥
सूरत संध सुधार पंथ पिय पाइया ।
तुलसी तत मत सार सुरति गति गाइया ॥ ६ ॥

(३)

सेता जोगी जान जुगत जिन गाइया।
कँवल कंज के पास स्वास दरसाइया ॥ १ ॥
स्वास सेत के मद्धि सुन्न सोइ द्वार में।
बंक नाल के वार निकरि भइ जार में ॥ २ ॥
छः से इक्किस हजार दिवस रजनी कही।
जोगी भाखे भेद समझ सोई सही ॥ ३ ॥
सब स्वासा उनमान करोड़ छानव कहूँ।
बिधि बिधि बिधि बरतंत भेद ता को देऊँ ॥ ४ ॥
भोजन अधिक सोहाय स्वास ता से घटे।
और मैथुन मन भाव स्वास जा से बढ़े ॥ ५ ॥
चटक चलन की चाल अधिक जा से गई।
जस जस जिनकी रीत घटन तैसे भई ॥ ६ ॥
सुख सोवै सोइ स्वास नींद में जात है।
छिन्न अवध यहि भाँति जाय सोइ घात है ॥ ७ ॥
सोइ हबूब तन बूझ फूट फटका गया।
सेता जोगी जानि जुगत ऐसी कहा ॥ ८ ॥
करते प्रानायाम स्यास के पार है।
सेता जोगी नाम धाम सोइ लार है ॥ ९ ॥
तुलसी तत मत वंध बँधा वहि द्वार को।
सेत स्याम की गाँठ गया नहिं पार को ॥ १० ॥

(४)

सेता जोगी सहज समाध लगाइया।
उनमुनि तत्त अकास सेत तहँ पाइया ॥ १ ॥
दरपन द्वारे जोति होत झिलिमिलि भई।
भयो प्रकास उजियार चंद्र तारा-मई ॥ २ ॥
मुद्रा थिर करि थोब निरखि जहँ देखिया।
आतम तत्त अकास सेत सोइ लेखिया ॥ ३ ॥

अंडा घट भयो नास भास मिटि जाइगी।
बिनसै चंद अकास जोति नसि जाइगी ॥ ४ ॥
अंदर अंधा कूप रूप मध में भया।
उनमुनि छूटि समाधि काल मुख में गया ॥ ५ ॥
सेत स्याम के घाट सुरति वारे रही।
सेता जोग समाधि बादि भव में बही ॥ ६ ॥
तुलसी आखा भेद पेख अस गाइया।
संत मता कछु और भिन्न दरसाइया ॥ ७ ॥

(५)

देखो नर की भूल सूल ता से सहै।
जीवत मारै जीव प्रान उसके लहै ॥ १ ॥
देवी बकरा काट सीस उस पै धरै।
बूझै न अंध अचेत जिवत जिव जो मरै ॥ २ ॥
पूत पराया मारि दरद नहिँ लावही।
कुसल कहाँ से होइ जनम दुख पावही ॥ ३ ॥
वा का भच्छै मास मौत बिन वो मरै।
जनम भूत की जोनि जुगन जुग में धरै ॥ ४ ॥
वो बकरा भयो भूत दुक्ख सोइ देत है।
चढ़ि छाती पर बैर आनि सोइ लेत है ॥ ५ ॥
मछरी मास मलीन अधम जिव खात है।
सो प्रानी भये भूत नरक में जात है ॥ ६ ॥
जनम जनम भये भूत भ्रमत ही रहत है।
पवन जोनि से नरक संत अस कहत है ॥ ७ ॥
तिरिया मछरी खाई चुड़इल सो भइ।
होत पुत्र मरि जाइ जनम बाँझिनि रही ॥ ८ ॥
जैसे बाँझिनि भैंस जनम लादत गयो।
ऐसी हैं वे नारि पुत्र सुख ना भयो ॥ ९ ॥

वह औरत निरवंस जुगन जुग में रहै ।
प्राछित हत्या पाप पुत्र काजे सहै ॥ १० ॥
देवी दुरगा सूट भवानी पूजती ।
काटि गला बलि देइ आँखि नहिं सूझती ॥ ११ ॥
छवन[1] सुवरी केर नौतिया[2] से कहा ।
मारे जाइ चढ़ाइ नहीं उसके दया ॥ १२ ॥
नाउत[2] नीची जाति जिसै[3] करते रहे ।
सुअरी पुत्र सराप जनम कोढ़ी भये ॥ १३ ॥
जो कोइ नारि निकाम हटक माने नहीं ।
पूजि भवानी भूत भटकि भूतिनि भई ॥ १४ ॥
घर घर पवन बयार लगे यहि भाँति से ।
अपने करम निहारि किया जोइ हाथ से ॥ १५ ॥
तुलसी कहै पुकारि जीवत जिनि मारि हो ॥
सब में आतम राम सुनो नर नारि हो ॥ १६ ॥

साखी

(१)

प्रथम सरन सतगुरु गहो, निरखो नैन निहार ।
वार पार परखत रहो, गुरु पद पदम अधार ॥ १ ॥
संत चरन चित हित करो, सूरति संध सँवार ।
आदि अंत घर लखि परै, सूझै पिउ दरबार ॥ २ ॥
अब जग की गति मति कहूँ, बिन सतसँग अँधियार ।
मन इंद्री गुन लोभ में, बिन सतनाम अधार ॥ ३ ॥
यह भव सिंध अगाध है, बूड़े भवजल धार ।
बिन सतगुरु भरमत फिरै, कैसे उतरै पार ॥ ४ ॥
सुरत सहर घर आदि है, पावै सुरजन[4] साध ।
दुरजन दुख सुख में रहै, करम बंद बहै बाद ॥ ५ ॥

---

(१) बच्चा । (२) ओझा । (३) हज्जाम । (४) सज्जन ।

जग रचना जम काल की, फँसि फँसि मुए अजान ।
ज्ञान गली चीन्हे बिना, भरमत सकल जहान ॥ ६ ॥
पिउ परचे पाये बिना, निस दिन फिरत बेहाल ।
जुगन जुगन भटकत फिरै, निज घर सुरति न चाल ॥ ७ ॥
पिय की सेज सूनी पड़ी, कीन्ह और लगवार[1] ।
तासु पुरुष घर ना मिले, भयउ करम भव पार ॥ ८ ॥
जिन पिय की बिरहा बसै, छिन छिन छीन सरीर ।
नैन नीर ढुरि ढुरि बहै, कसकै तन मन पीर ॥ ९ ॥
प्रेम प्रीति नदिया बहै, सावन भादो मास ।
राति दिवस लागी रहूँ, बरसै झड़ि निस बास ॥ १० ॥
पिय की पीर पल पल बसै, सूरति अंत न जाइ ।
जैसे चंद्र चकोर को, निरखत नाहिँ अघाइ ॥ ११ ॥
गरज घुमर बदरी बहै, चमकै चमचम बीज ।
मोर सोर पिउ पिउ करै, तड़फ तड़फ तन छीज ॥ १२ ॥
धुन सुनि धीर न आवही, पाति लिखूँ पिय पास ।
मन सूरत कासिद करूँ, पहुँचै अगम निवास ॥ १३ ॥
खबर खुसी पिय की सुनूँ, हरखत हिया हित मोर ।
तुलसी तलब पिय की लगी, जग तिनका अस तोर ॥ १४ ॥

(२)

सतगुर गति मति सार है, दीन्हा अगम लखाइ ।
सुरति चढ़ी सतद्वार को, लीला गिर गम पार ॥ १ ॥
नित नित सैल सँवारही, सेत स्याम के घाट ।
बाट लखी सखि संग में, चढ़ि करि निरखि निहार ॥ २ ॥
पिय का नूर लखि थक भई, छिन छिन लौं सौ बार ।
लार लार लागी रहै, तन मन बदन बिसार ॥ ३ ॥
आदि अंत पिय पट खुले, चढ़ि महलन पर धाइ ।
तिरबेनी घर घाट पै, न्हावत बिपति नसाइ ॥ ४ ॥

(१) देमना, आशना ।

पिय परचै जब से भई, कहिया तुलसीदास।
बास बिधी बिधि महल की, पहुँची पति पिउ पास॥ ५॥

(३)

पिय बिन सावन सुख नहीँ, हिये बिच उठत हिलोर।
बोल बचन भावै नहीँ, तन मन तड़पि अतोल॥ १॥
पिय बिन बिरहिन बावरी, जिय जस कसकत हूल।
सूल उठै पति पीर की, धन संपत सुख धूल॥ २॥
इत बैरी बदरा भये, गरजि घुमरि घनघोर।
घुमरि घुमरि घर द्वार में, कूकै दादुर मोर॥ ३।
बीज कड़क कस कस करूँ, सुधि बुधि रहत न हाथ।
साथ मिलै पिया पंथ को, मारग चलौं दिन रात॥ ४।
सुरति निरति डोरी करूँ, मन मत खंभ गड़ाइ।
लै की लहर ऊपर मिली, झूली सुरति चढ़ाइ॥ ५।
ये सावन तुलसी कहै, खोजो सतसँग माहिँ।
गाइ गवन सज्जन करै, बूझै सत मति पाइ॥ ६।

(४)

सावन सुर्ति सीतल भई, अनहद सुनत सिरान।
परम पुरुष आगे चली, पहुँची निज घर धाम॥ १
सब संसय जम जाल की, काटी दीनदयाल।
ख्याल हिये हरखत भई, निरखि लखा पिय हाल॥ २॥
चढ़ि गगना गाढ़ी भई, सुरति गई घर माहिँ।
पाय पुरुष सुख सेज पै, बिलसी पति सुख जाइ॥ ३॥
आदि अंत सब सुधि भई, भाखी सत मत पाइ।
जाइ जोई तुलसी कहै, सतगुर पदहिँ समाइ॥ ४॥

(५)

मोरे पिय छाड़्यो बिदेस में, सइयाँ सँग भयो री बिछोह॥टेक॥
बैरन नीँद न आवही, सखि सुख भोर न होइ।
रोइ रैन अँखिया बही, सखि भरि साँसो साँस॥ १॥

लहर नागिन डसै, बिन सइयाँ तड़प उचाट ।
उठै जस बीजुली, छतियन धड़क समात ॥ २ ॥
अगिनि हिय में उठै, एरी धूँआ प्रगट न होइ ।
अकेली सेज पै, पूरब लिख्यो री बिजोग ॥ ३ ॥
(खोज का से कहौं, पतिया लिखौं केहि देस ।
भभूति रमाइहौं, करि हौं मैं जोगिनि भेस ॥ ४ ॥
गुर सोधि सरने रहौं, गहौं पिय डगर निवास ।
(मनोरथ सुरति से, तुलसी मिलन मिलाप ॥ ५ ॥

(६)

या बिन बिरहिनि बावरी, दइ दुख दियो री कठोर ।
।रि खबर सुधि ना लई, ज्यों बिन चंद चकोर ॥ १ ॥
।कवा चकई बिछोह की, बरनौं कौन बयान ।
।दिया पार चकवा रहै, चकई वार बिलाप ॥ २ ॥
रैन बिलग सुनती हती, मोरे हिये बरतत आज ।
बिलग पिय से मरिबो भलो, यह दुख सह्यो न जात ॥ ३ ॥
सब सिँगार फीका लगै, पिय बिन कछु न सोहाइ ।
हाय हाय तलफत रहूँ, कहो केहि जाइ सुनाइ ॥ ४ ॥
लोग बटाऊ री बिदेस के, नहिँ पर पीर पिछान ।
चरन बिना चहुँ दिस फिरी, नहिँ कछु जियरा जुड़ान ॥ ५
कल्प कल्प कलपत भये, जुग जुग जोवत बाट ।
कोइ री सोहागिनि ना मिली, पूछौं पिया घर घाट ॥ ६
नर तन नगर डगर मिलै, कहैं सब संत सुजान ।
फिरि पसु पंछिन में नहीं, जड़वत[1] जीव भुलान ॥ ७
बिन सतगुर ब्याकुल हिये, जियरा धरत न धीर ।
पीर पिया बिन को हरै, तुलसी गगन गँभीर ॥ ॥ ८

---

[1] ... ... में ।

बारहमासा

सत सावन बरखा भई, सुरति बही गँग धार।
गगन गली गरजत चली, उतरी भवजल पार॥ १॥
भादों भजन बिचारिया, सब्दहि सुरति मिलाप।
आप अपनपो लखि परै, छूटे छलबल पाप॥ २॥
कुसल क्कार सतसंग में, रंग रँगो सत नाम।
और काम आवै नहीं, तिरिया सुत धन धाम॥ ३॥
कातिक करतब जब बनै, मन इंद्री सुख त्याग।
भाग भारम भव रस तजै, छूटै तब लव लाग॥ ४॥
अगहन अमी रस बसि रहो, इमरित चुवत अपार।
पाँइ परसि गुर को लखो, होइ परम पद पार॥ ५॥
पूस ओस जल बुंद ज्यों, बिनसत बदन बिचार।
तन बिनसे पावै नहीं, नर तन दुरलभ छार॥ ६॥
माह[1] महल पिया को लखो, चखो अमर रस सार।
वार पार पद पेखिया, सत्त सुरति की लार॥ ७॥
फिरि फागुन सुन में तको, सब्दा होत रसाल।
निरखि लखो दुरबीन से, ज्यों मन मीन निहाल॥ ८॥
चैत चेत जग झूठ है, मत भरमो भव जाल।
काल हाल सिर पै खड़ा, छूटै तन धन माल॥ ९॥
सुनो साखि बैसाख की, भाखि गुरन गति गाइ।
सब संतन मति की कहूँ, बूझै सत मति पाइ॥ १०॥
जबर जेठ जग रीत है, प्रीत परस रस जान।
आन बात बस ना रहो, सत मति गति पहिचान॥ ११॥
जो असाढ़ अरजी करो, धरो संत स्तुति ध्यान।
ज्ञान मान मति छाड़ि कै, बूझो अकथ अनाम॥ १२॥

(१) माघ।

बारह मास मत भाखिया, जानै संत सुजान ।
तुलसिदास बिधि सब कही, छूटै चारौ खान ॥ १३ ॥

चाचरी

(१)

तुलसिदास परन सरन चरनन पर वारी ।
संत प्रिये प्रेमन तन मन बलिहारी ॥ टेक ॥
हित चित धर धरन घूप पग पग मग मेघडमर[1] ।
छिन छिन छाया निवास तिरगुन निरवारी ॥
फाड़े फरफंद दूर गुनन की गाँठ तोड़ि ।
ममता मरदन मरोड़ि छोड़ि छल निकारी ॥ १ ॥
सुकृत बरत सुरति भाव अंकृत परत परन पाल ।
लै की लख लटक लाह घस कर धर धारी ॥
प्यारी पल पल बिलास बाँधे बस बसन गात ।
गवना गढ़ गगन साथ सत मत द्दग द्वारी ॥ २ ॥
सैली सुंदर बिलास लीलम गिरि गिरी पास ।
सागर तट पट के पदम भल भल भलकारी ॥
जगमग जोती दिखात दीपक मंदिर अनूप ।
दिरगन चक धरत धीर मिरगा मन मारी ॥ ३ ॥
थिरता गति नज गँभीर संत पीर हर दयाल ।
द्रव निहाल जबर जंग सागर सम समा री ॥
किरपिन कीन्हे निरास सतगुर के चरन बंद ।
निरखा पद पूर चंद पंकज चढ़ चारी ॥ ४ ॥

(२)

तुलसिदास चढ़ अकास फाड़ा पट जाई ।
धनुवाँ धर अधर चाँप सूरति लौ लाई ॥ टेक ॥

---

(१) बड़ा छाता जो साधुओं की जमाअत मे खड़ा कर दिया जाता है ।

नील चक्र निकर सिखर स्यामा धसि घोर घमक।
नाली निज नगर पार जोती झलकाई ॥
देखा दस दसन देस झलकत महलन उजास।
ससि ज्योँ उजियार पाख चाँदनि छिटकाई ॥ १ ॥
छेक़ा नल नभ निवास सरवर तज तरु तड़ाग[1]।
कड़ कड़ कड़का कड़ाक कँवलन के माहीँ ॥
धरनी धर धरन धीर रबि रथ धुव थकत जात।
भूमी भय कलमलात डगमग अकुलाई ॥ २ ॥
सूरति सज जुगल पटल मानो मिरदँग अकार।
मकड़ी चढ़ि मकर तार अधर पै लगाई ॥
फेकी धर सुरत सिस्त बसन नाल बिनस सूत।
मीना मजबूत चाल धार धरन धाई ॥ ३ ॥
लख लख लोकी अलोक अंडा अति अधर आठ।
बूझै कोइ संत बाट घाटा घट माहीँ ॥
रेखा नहिँ रूप रास गुर तट पट पदम पार।
द्वादस बस बिमल बास संतन सरनाई ॥ ४ ॥

(३)

तुलसिदास निज बिलास बिमल बास बेली।
दृगन दीप लखि समीप खुलि खुलि सुति खेली ॥ टेक ॥
मंद्यागिरि मथन कीन्ह चौदह चढ़ि रतन काढ़ि।
रतनागिरि खलबलात मछ कछ पर पेली ॥
असुरन हरहार[2] कीन्ह अमृत सुर सबन हाथ।
मोहनी छल बल बिलात वन तन मन मैली ॥ १ ॥
राहू अपमान कीन्ह हनत चक्र भयो केतु।
जुगल बंधु बैर भाव रवि रथ थक ठेली ॥
सोई बैराट नैन छिन भर नहिँ गन चैन।
ता से जग परत ग्रहन जुग जुग जम जेली ॥ २ ॥

---

(१) तलाव। (२) साँप।

बंधन बस लस बैराट ब्रह्मँड पिँड सब अकार ।
इंद्रिन बसदेव बास मिलि मन बिस भेली ॥
तीनोँ गुन गाँठ दीन्ह रज सत तम करि बिनास ।
अस अस जिव करम फाँस दुख सुख भड़ि भेली ॥
ब्रह्मा बिधि बेद कीन्ह सास्तर मुनि मथन काढ़ि ।
करि करि अठरा पुरान गाई ज्ञान गैली ॥
उरझे ऋषि मुनी झार करि करि षट तप बिकार ।
लीन्हे फल राज रीत खानि चार फैली ॥ ४ ॥
माया मद मोह मीत चेतन तन मन बँधान ।
तिरिया सुत धरत कानि भूले गुर गैली ॥
जहँ से बैराट अंस आया बस बना ठाठ ।
गाया सब संत घाट बाट चूक चेली ॥ ५ ॥
पावै सतगुर दयाल मारै जम डंड काल ।
कीन्ही निज निज निहाल दीन्ही नल नेली ॥
चढ़ि चढ़ि बेली निरास सतगुर पद चरन आस ।
काटे जम काल फाँस संतन लख लेली ॥ ६ ॥

चाचरी ख्याल

(१)

मुहब्बत महबूब सुकर मुकर के मुनारे ।
आब के जवाब चसम रसम ना सुना रे, जाने लख सज्जन न्यारे ॥१॥
सुहबत स्याहरू[1] जिकर निकर ना गुना रे ।
गाफिल बेहोस हिरस डगर में दुना रे, तक परबीन प्यारे ॥२॥
अव्वल असराफ असल नकल बीत नारे ।
बरतन बिस्वास बदन महल में चुना रे, नबी जी ने कर कुना रे ॥३॥
महरम कोइ अबर खबर नेक ना उनारे ।
मुरसिद बिन इलम खलक भाड़ में भुना रे, तुलसी तरकीब वारे ॥४॥

---

(१) कलमुहाँ ।

(२)

चढ़ि चलु अली दृगन सुरति घुमरि डगर पावे ॥ टेक ॥
सनन सनन सुरति मुरति मँदर मुकर धावे, प्यारी तत तारी लावे ॥१॥
सुन्न समाध साध सिखर निकर नेह लगावे।
तुलसी की मुराद आदि झड़ से झड़ मिलावे, अड़बड़ अबर आवे॥२॥

जैजैवंती

(१)

एरी आली एक तो अचंभा देखा पेखा अपनाइ के ॥ टेक ॥
नभ मिल के भवन समाना ता को बैराट बखाना।
अगिनी पानी और पवना गगना पर धाइ के ॥ १ ॥
चंदा रबि नैन कहाये राहू रति मति से दुख पावे।
वेदांती ब्रह्म बखाने कहे आतम गाइ के ॥ २ ॥
सोई आतम जीव कहावे रहे इंद्री गुन मन धावे।
ता को जग राम सुनाये भया जड़ तन पाइ के ॥ ३ ॥
दस इंद्री दसरथ गाई जेहि माहीँ रह्यो समाई।
ज्ञाना पँच कहूँ पच करमे भरमे भरमाइ के ॥ ४ ॥
तुलसी मोहिँ अचरज आवे कस कस तेहि ब्रह्म बतावे।
करम सुभ सँग असुभ रहाये पाये फल जाइ के ॥ ५ ॥

(२)

एरी अभिमान मेँ भूला जग पापू आपू अपनाइ के ॥ टेक ॥
औतारी राम सुनावेँ मूरत धर मंदिर धावेँ।
पाहन गढ़ि गढ़न सँवारा सिला पट मठ जाइ के ॥ १ ॥
सास्तर पुनि पुरान बतावा तन बीच ब्रह्मँड लखावा।
आतम बस बंधन राखा भाखे अस गाइ के ॥ २ ॥
ता को तजि पूजे पानी पाहन मति बुधि हैरानी।
पंडित जग राग बैरागी पागे पक्ष पाइ के ॥ ३ ॥

अली अंस सिंध से आया जा का नहिँ खोज लगाया।
किरनी रबि संध लगावै पावै रबि धाइ के ॥ ४ ॥
रबि किरनी सूरज पावै लख आदि अपन अलगावै।
किरनी सिष सुरज समानी सिष गुर सरनाइ के ॥ ५ ॥
स्वामी का खोज न जानी बूड़े पाहन और पानी
मुक्ती तुलसी कस पावै जड़ सँग उरझाइ के ॥ ६ ॥

(३)

एरी आली आज तो मँदर इक देखा लेखा निरताइ के
दीपक बिन महल उजारा दसो दिसि दीखत संसारा
देखा दृग हिये से न्यारा[१] धारा सुरति धाइ के ॥ १ ।
बिन जिभ्या बेद सुनावे अच्छर बिन बानी गावे
सरवन बिन तान सुहाई भाई भुईँ आइ के ॥ २ ।
करता बिन करहि कहावे पँगुला चढ़ि परबत धावे।
रसना बिन स्वाद बखानी जानी षट रस पाइ के ॥ ३ ।
नैना बिन निरखि निहारे जहँ लगि सूरति सुधि धारे।
चौदह भव भवन बखाना जाना तन बन पाइ के ॥ ४ ।
तुलसी सब सुगँध बखाने बिन नासा बिधि बिधि जाने
कहौँ कहा अगम अलेखा लेखा लख लाइ के ॥ ५ ।

(४)

एरी आली आज तो अगम की बानी जानी जिन जाइ के
आतम के पार पसारा परमातम से पद न्यारा
जग जिया बिच ब्रह्म बँधावा कही संतन गाइ के ॥ १ ।
अंडा सुनि धुनि के पारा जहँ जोति नहीँ निराकारा
तीनोँ लोकइ सोक समाना न्यारा निरखा जाइ के ॥ २ ।
चौथा पद परम निवासा जहँ संत गुरन का बासा
बेनी बस बास प्रयागा निर्मल भई न्हाइ के ॥ ३ ।

(१) एक लिपि में "न्यारा" की जगह "प्यारा" है।

जिन इन सतगुर को जाना भागे भय भव भ्रम खाना ।
छूटी मन भूल बड़ाई टूटी अरथाइ के ॥ ४ ॥
कोइ वा घर को लखि पावै कंजा मन सुरति लगावै ।
समुदर रतनागिरि गैजी तुलसी लख लाइ के ॥ ५ ॥

कहेरा

(१)

बेली एक सिंध तजि आई । कँवल कूप किया बासा जी ॥
जड़ नहिँ पेड़ पात नहिँ साखा । भवन तीन फल पाका जी ॥१॥
बेली बेल फैल घन छाई । तीन लोक लिपटाई जी ॥
अंड ब्रह्मंड खंड जग जारा । वाही को सकल पसारा जी ॥२॥
ब्रह्मा बिस्नु वेद और सेसा । दस औतार महेसा जी ॥
बेली फूल मूल नहिँ पावै । खोजि खोजि पछताई जी ॥३॥
वाका भेद अभेद अकाया । संत बूझि जिन पाया जी ॥
तुलसीदास बेलि लख पाई । भव जम जाल नसाई जी ॥४॥

(२)

लखि अकास इक हौंमा[१] पंछी । रहत गगन के माँही जी ॥
पंख न चोंच चरन नहिँ वाके । सकल भवन चरि खाई जी ॥१॥
पर के पंछी स्वास धर खैँचा । जिवत कोई नहिँ बाचा जी ॥
सिंध पोल पर दे पट द्वारा । चीन्हि जीव होइ न्यारा जी ॥२॥
ता के परे बंक सुर नाला । पहुँचै न जहँ जम काला जी ॥
ता के परे बहै इक सलिता । अधर धार जल चलता जी ॥३॥
ता के परे पुरुष इक देखा । रूप न रेख अदेखा जी ॥
वे रस राह संत कोइ जाना । छिन छिन कीन्ह पयाना जी ॥४॥
तुलसीदास पास जिउ खोजा । पावे पुरुष सुख मौजा जी ॥
पंछी चीन्ह चेत चित लाये । आदि अंत सुख पाये जी ॥५॥

---

(१) हुमा नाम स्वर्ग की चिड़िया का है ।

शब्द दादू जी का

(१)

दादू दुनिया दिवानी । पूजे पाहन पानी ॥ टेक ॥
गढ़ मूरत मंदर में थापी । नै नै करत सलामी ॥
चंदन फूल अछत सिव ऊपर । बकरा भेँट भवानी ॥ १ ॥
छपन भोग ठाकुर को लागेँ । पावत चेतन प्रानी ॥
धाइ धाइ तीरथ को धावे । साध सँगति नहिँ मानी ॥ २ ॥
ता ते पड़ा करम बस फंदा । भरमे चारो खानी ॥
बिन सतसंग पार नहिँ जाने । फिरि फिरि भरम भुलानी ॥ ३ ॥

(२)

दादू दृष्टि दिखाना । पिय घर अधर ठिकाना ॥टेक॥
अंड अकार द्वार दुइ दल पर । बिगसत कँवल लिखाना ॥
ता बिच ताक तके सोइ सूरत । सूली सिस्त निसाना ॥ १ ॥
चढ़ गिरि गगन गई सरवर में । बिन तत बदन बिधाना ॥
भँवरगुफा सत सुंदर माहीँ । ब्रह्म अदृष्ट अमाना ॥ २ ॥
अगम अदीद दीद बिन देखा । मधुकर कंज लुभाना ॥
चुभक चुभक रस अमल अमी का । पिये कोइ दरद दिवाना ॥ ३ ॥
या की साख आँख बिन देखे । भाखत बरन बखाना ॥
सास्तर अंत बेदांत ब्रह्म कहे । बेद जो नेत निदाना ॥ ४ ॥
अतम तत्त ताल बिच बासा । जोगी जुगत बिकाना ॥
घट बिच बास भरम गढ़ टूटे । छूटे इष्ट पखाना ॥ ५ ॥

शब्द भीखाजी

भीखा भय नाहीँ । सबै काल चरि जाई ॥ टेक ॥
आदि अंत परलय हम देखा । लेखा अलेख गुसाइँ ॥
ब्रह्मा बिसुन देव मुनि नारद । कोई बचन नहिँ पाई ॥ १ ॥
अरध उरध बिच भाठी लगाई । सो रस पीन अघाई ॥
मान सरोवर मैल छुड़ावा । बेनी में पैठि अन्हाई ॥ २ ॥

जिन इन सतगुर को जाना भागे भय भव भ्रम खाना।
छूटी मन भूल बड़ाई टूटी अरथाइ के ॥ ४ ॥
कोइ वा घर को लखि पावै कंज्रा मन सुरति लगावै।
समुदर रतनागिरि गैजी तुलसी लख लाइ के ॥ ५ ॥

कहेरा

(१)

बेली एक सिंध तजि आई। कँवल कूप किया बासा जी ॥
जड़ नहिँ पेड़ पात नहिँ साखा। भवन तीन फल पाका जी ॥१॥
बेली बेल फैल घन छाई। तीन लोक लिपटाई जी ॥
अंड ब्रह्मंड खंड जग जारा। वाही को सकल पसारा जी ॥२॥
ब्रह्मा बिस्नु बेद और सेसा। दस औतार महेसा जी ॥
बेली फूल मूल नहिँ पावै। खोजि खोजि पछताई जी ॥३॥
वाका भेद अभेद अकाया। संत बूझि जिन पाया जी ॥
तुलसीदास बेलि लख पाई। भव जम जाल नसाई जी ॥४॥

(२)

लखि अकास इक हौँमा[1] पंछी। रहत गगन के माँही जी ॥
पंख न चोँच चरन नहिँ वाके। सकल भवन चरि खाई जी ॥१॥
पर के पंछी स्वास घर खैँचा। जिवत कोई नहिँ बाचा जी ॥
सिंध पौल पर दे पट द्वारा। चीन्हि जीव होइ न्यारा जी ॥२॥
ता के परे वंक सुर नाला। पहुँचे न जहँ जम काला जी ॥
ता के परे बहै इक सलिता। अधर धार जल चलता जी ॥३॥
ता के परे पुरुष इक देखा। रूप न रेख अदेखा जी ॥
वे रस राह संत कोइ जाना। छिन छिन कीन्ह पयाना जी ॥४॥
तुलसीदास पास जिउ खोजा। पावे पुरुष सुख मौजा जी ॥
पंछी चीन्ह चेत चित लाये। आदि अंत सुख पाये जी ॥५॥

---

(१) हुमा नाम स्वर्ग की चिड़िया का है।

प्रेम परख प्याला पिये, जियन जुगन जुग होइ।
जोइ जमक रँग पाँच को, साच सबन स्तुति सोइ ॥ ६ ॥
मन मतवाली सुरति की, सज्जन करत बखान।
जान जनक जिय ना लखे, तुलसी ठाँव ठिकान ॥ ७ ॥
एक अलख की पलक में, खलक रचा सब सोइ।
जानि निरंजन काल को, जाल जगत सब कोइ ॥ ८ ॥
अधर अंड के बीच में, नौ लख खलक निहार।
पार पदम दल कँवल पै, तुलसी अगम अपार ॥ ९ ॥
सुन्न सहर के बाहिरे, महासुन्न के पार।
सार सब्द जा को कही, तुलसी निरख निहार ॥ १० ॥
राम रमन मन भवन में, आतम सरवर ताल।
काल अहेरी करत ज्यों, जुग जुग बंधन जाल ॥ ११ ॥
आतम तेज अकास में, बास भवन दस माहिँ।
मन मारग सूरति चली, अंदर ऐन समाइ ॥ १२ ॥
छर छत्तीसो भवन में, अच्छर ब्रह्म समान।
स्रवन नैन मुख नासिका, इंद्री पाँच प्रमान ॥ १३ ॥
छर अच्छर से भिन्न है, निहअच्छर निहनाम।
धाम लोक चौथे बसे, जानत संत सुजान ॥ १४ ॥
सुन्न अकास के भास में, स्वासा निकसत पौन।
बंक नाल के बीच में, इँगल पिंगल पर जौन ॥ १५ ॥
सुई अग्र वह द्वार है, सुखमनि घाट कहाइ।
धाइ धाइ स्वासा चढ़े, जो जो जोग लखाइ ॥ १६ ॥
संत समुँद घर अगम को, ज्ञान जोग नहिँ ध्यान।
ये तीनोँ पहुँचे नहीँ, जाकी करत बखान ॥ १७ ॥
ज्ञान ब्रह्म आतम कहे, मन जड़ चेतन गाँठ।
तन इंद्री सुख बंध में, बहत गुनन की बाट ॥ १८ ॥
आतम अगम अकास में, नैन निरखि मन बास।
फाँस फँसानी गुनन में, याको कहत अकास ॥ १९ ॥

धनुवा साध चले त्रिकुटी को। खैंचि कमान चढ़ाई ॥
फोड़ निसान दसो दिसि पारा। काल को मार ढहाई ॥ ३ ॥
अनंत[1] साहिब गुरु अस पाई। तिन मोहिँ संध लखाई ॥
अंतर आदि अधर घर पाई। जम की जाल बहाई ॥ ४ ॥

शब्द चरनदासजी

चरनदास चित चेरा। गति कीन्ह निबेरा ॥ टेक ॥
सूरति दौड़ि घोर घर अपने। उलट कँवल दल फेरा।
काया कलस काल लगि लहरा। छिन छिन साँझ सवेरा ॥ १ ॥
सुन्नी सेत दीप नभ अंदर। लै लगी कीन्ह बसेरा।
ठहरी ठीक ठौर निज हेरा। आदि अदेख घनेरा ॥ २ ॥
गोता मारि सार सम सूरा। पूरा नूर जहूरा।
मन मरजीव पीव सोइ पाया। आपा मेट अँधेरा ॥ ३ ॥
है रनजीत वैस कुल केरा। फेर नाम किया चेरा।
चरनदास सुकदेव मिले जब। कीन्ह अधर घर डेरा ॥ ४ ॥

साखी

घट अकास के मद्ध में, पंछी परम प्रकास।
समुँद सिखर सूरत चढ़ी, पावे तुलसीदास ॥ १ ॥
लख प्रकास पद तेज को, सेज गवन गति गाइ।
पाइ पदम सूरति चली, पिया भवन के माहिँ ॥ २ ॥
आठ पहर रोवत रही, भरि भरि अँखिया नीर।
पीर पिया परदेस की, जा से भँवर अधीर ॥ ३ ॥
नगर पाँच परपंच में, कस कस रहन हमार।
चार चुगल चुगली करें, रहूँ बेचैन मन मार ॥ ४ ॥
अली अकास सूरत चली, गली गगन के माहिँ।
धाइ धमक ऊपर चढ़ी, खड़ी महल मुसकाइ ॥ ५ ॥

(१) अविनाशी।

प्रेम परख प्याला पिये, जियन जुगन जुग होइ।
जोइ जमक रँग पाँच को, साच सबन स्तुति सोइ ॥ ६ ॥
मन मतवाली सुरति की, सज्जन करत बखान।
जान जनक जिय ना लखे, तुलसी ठाँव ठिकान ॥ ७ ॥
एक अलख की पलक में, खलक रचा सब सोइ।
जानि निरंजन काल को, जाल जगत सब कोइ ॥ ८ ॥
अधर अंड के बीच में, नौ लख खलक निहार।
पार पदम दल कँवल पै, तुलसी अगम अपार ॥ ९ ॥
सुन्न सहर के बाहिरे, महासुन्न के पार।
सार सब्द जा को कही, तुलसी निरख निहार ॥ १० ॥
राम रमन मन भवन में, आतम सरवर ताल।
काल अहेरी करत ज्यों, जुग जुग बंधन जाल ॥ ११ ॥
आतम तेज अकास में, बास भवन दस माहिं।
मन मारग सूरति चली, अंदर ऐन समाइ ॥ १२ ॥
छर छत्तीसो भवन में, अच्छर ब्रह्म समान।
स्रवन नैन मुख नासिका, इंद्री पाँच प्रमान ॥ १३ ॥
छर अच्छर से भिन्न है, निहअच्छर निहनाम।
धाम लोक चौथे बसे, जानत संत सुजान ॥ १४ ॥
सुन्न अकास के भास में, स्वासा निकसत पौन।
बंक नाल के बीच में, इँगल पिंगल पर जौन ॥ १५ ॥
सुई अग्र वह द्वार है, सुखमनि घाट कहाइ।
धाइ धाइ स्वासा चढ़े, जो जो जोग लखाइ ॥ १६ ॥
संत समुँद घर अगम को, ज्ञान जोग नहिँ ध्यान।
ये तीनोँ पहुँचे नहीँ, जाकी करत बखान ॥ १७ ॥
ज्ञान ब्रह्म आतम कहे, मन जड़ चेतन गाँठ।
तन इंद्री सुख बंध में, बहत गुनन की बाट ॥ १८ ॥
आतम अगम अकास में, नैन निरखि मन बास।
फाँस फँसानी गुनन में, याको कहत अकास ॥ १९ ॥

ध्यान धरत जोगी मुए, प्रानायाम अधार।
संत सिखर के पार की, भाखत अगम अपार॥ २० ॥
भूल भटक मन भरम से, करे जगत की रीत।
भक्ति राम गुन गो बसे, जासे पालें प्रीति।॥ २१ ॥
राम खान जुग चारि में, अंडज उषमज जान।
अस्थावर पिंडज कही, सब चर अचर समान॥ २२ ॥
बंद बेद बस करम के, धरि धरि जन्म अनेक।
फाँस फँसी छूटे नहीं, मुए मिलन की टेक॥ २३ ॥
निराकार के पार है, सब कहें संत बखान।
अगम दयानिधि पुरुष को, गुर सँग परख पिछान॥ २४ ॥
काल कठिन के जाल से, सुकदेव ब्यास बिहाल।
ऋखी मुनी नारद कहूँ, सब की खैंचत खाल॥ २५ ॥
संत अगम के पार की, लखि लखि करत बखान।
तुलसी जड़ जाने नहीं, समझ सुने नहिं कान॥ २६ ॥

॥ साखी ॥

पुर पट्टन इक सहर है, सुन्न समुँद के पास।
गगन गरज सूरति चढ़ी, पावे तुलसीदास॥ १ ॥

॥ मंगल ॥

पुर पट्टन केरि बाट, तो अचरज देखिया।
वा घर गढ़त कुम्हार, सो सुरति बिवेकिया॥

॥ साखी ॥

तन मन अच्छर आदि का, काया कलस कुम्हार।
नित वरतन विनसे वने, उपजत वारम्बार॥ १ ॥
सतगुर से सूरति भई, दई कीन्ह घर घाट।
वाट भटक जम जाल में, वेचत हाटै हाट॥ २ ॥
सब्द साख की आँख से, नहिं छूटे भ्रम जाल।
पल पर पल निरखत रहे, स्वामी दीनदयाल॥ ३ ॥

हरखि लखे हिरदे हिया, परसि पिया पद आप ।
पाप पुन्न सब ही तजे, भजि भ्रम होत मिलाप ॥ ४ ॥
तुलसी तक तल्लास की, नभ चढ़ि बरनि बिलास ।
आस अली आगे चली, कर निज नैन निवास ॥ ५ ॥
बिरह भाँति यह बिधि करे, हरे सकल दुख ब्याध ।
आदि पिया बिन पुरुष कूँ, लख लख लगन अगाध ॥ ६ ॥

॥ मंगल ॥

बिरहिन यों पिय पार, उतर नों नावही ।
बिन सतगुर मल्लाह, थाह नहिँ पावही ॥

॥ साखी ॥

प्रेम परन तन मन गहे, रहे चरन चित चाइ ।
पायँ पकड़ गुर गुर कहे, आठ पहर लव लाइ ॥ १ ॥
रैन चैन दिन दिन रटे, और घटे घड़ी नहिँ एक ।
टेक बाँध सूरति अड़े, टारी टरे न नेक ॥ २ ॥
गो गुन इंद्री स्वाद की, बाद बिचारे बात ।
हाथ पकड़ न्यारी करे, धरि धरि मारे लात ॥ ३ ॥
यह अँग बिरहिन संत तजे, भज निरभय नभ माहिँ ।
हाय हाय इनसे करे, छूटत यह धरि खाइ ॥ ४ ॥
सुरति समझ मन में बसे, फँसे न इनके साथ ।
यह केहि भाँति भुलावही, चौकस देखत जात ॥ ५ ॥
दीन गरीबी गहन की, रहन रहे भरपूर ।
कूर कुटिल निरखत चले, सो सज्जन सर सूर ॥ ६ ॥
ज्ञान गिरा गढ़ गगन में, मगन रहे सुख पाइ ।
अस बिधि भाँति बिबेक से, कबहुँ न पकड़े जाइ ॥ ७ ॥
तन की तपन निवारि के, तकि तकि तका तक आव ।
नैन निरखि छूटे नहीँ, लै लै बल्ली थाव ॥ ८ ॥
पाइ खेइ खुल खुल गई, स्याम सेत के घाट ।
बाट बिमल सूरति तनी, तुलसी खोल कपाट ॥ ९ ॥

मगर मीन सम्बाद की, प्रति उत्तर बर्तमान ।
जुगल बचन जस जस कही, कहे तुलसी सुन कान ॥ १० ॥

॥ मगल ॥

मीन मगर सम्बाद, आदि सुनि ले सही ।
यह जग मारत काल, जाल गुड़िया दई ॥ १ ॥
कहन मीन मन मगर, बात माने नहीं ।
सतगुर काटैं जाल, काल डर ना रही ॥ २ ॥

॥ साखी ॥

बदन नाद जल आदि सूँ, तन बैराट बिनास ।
प्रिथी अगिन आकास लौं, नस पाँचो बरबाद ॥ १ ॥
मगर कहत मत मीन से, सत मत बेद पुरान ।
यह सनात सब ने कही, सुन मन मीन जुड़ान ॥ २ ॥
मीन कहत सत संत ने, सतगुर बाँह बखान ।
जो पुरान बेदन कही, जुग जुग बंधन खान ॥ ३ ॥
मगर कहे बैराट के, ब्रह्मा नाभ निवास ।
बेद चार मुख से कही, सरगुन बाक बिलास ॥ ४ ॥
मीन कहे मन मगर से, जल उतपति जम जाल ।
काल कला परचंड से, जुगन जुगन जंजाल ॥ ५ ॥
मगर कहत मगरूर से, सुन सत मीन बिचार ।
लख अकास अस्थूल से, उतपति निरख निहार ॥ ६ ॥
मीन बरन मन मगर कूँ, जल बिच ब्रह्म अधार ।
ब्रह्म परे के पार की, जम धरि करत बिगार ॥ ७ ॥
निरंकार के पार है, जोतन आतम रूप ।
चंद सुरज तत नभ नहीं, जहाँ छाँह नहिं धूप ॥ ८ ॥
मगर मस्त माने नहीं, ज्ञान करत मतिहीन ।
मीन मते की बात को, करत दृष्ट नहिं चीन्ह ॥ ९ ॥
मीन मगर झगड़ा कही, तुलसी तरक उपाध ।
मगर अंध माने नहीं, मीन वचन विख्यात ॥ १० ॥

सिंह सम्बाद

॥ साखी ॥

सिंघ बसै बन बीच में, सारदूल समझ अकास ।
पिरथी सेस निवास है, कहिया तुलसीदास ॥ १ ॥

॥ मंगल ॥

सिंघ सारदूल सेस, सहस कँवला कही ।
द्वै दल फूला फूल, मूल तत में तुही ॥

॥ साखी ॥

(१)

तीन तिलोँ के बीच में, तुम्हरा सकल पसार ।
पारपुरुष भूलत भई, सारँग सुरति अधार ॥ १ ॥
जगत अंध फरफंद से, माया मीन बिचार ।
जल बिछुरत ब्याकुल भई, मकरी उरझी तार ॥ २ ॥
इंद्री बैठक बास में, देवन दुंद पसार ।
गुन बस जो जैसी कहै, जड़ चेतन बिस्तार ॥ ३ ॥
बिस्व बिदित सब देव के, सास्तर सिम्रित पुरान ।
मूल मरम जाने बिना, कबहुँ न सुरति जुड़ान ॥ ४ ॥
तुलसी तखत बिसारि के, कीन्ही बारह बाट ।
सतगुर से परिचय भई, जब चीन्हा घर घाट ॥ ५ ॥

(२)

जीव ब्रह्म अरु आतमा, जाके परे निवास ।
मन गो गुन पहुँचे नहीं, तुलसी अगम अवास ॥ १ ॥
पढ़ि बिद्या ज्ञानी भये, बिना बास ज्यों फूल ।
ब्रह्म बरन कहें आप को, सो झूठे मति मूल ॥ २ ॥

॥ मंगल ॥

ब्रह्म जीव के पार, पुरुष इक री बसे ।
आतम नहीं अकास, अजर कहो री कसे ॥

॥ साखी ॥

(१)

आतम तत्त अकास से, पृथी जल पवन समान ।
अगिन अली अस पाँच में, आतम जीव फँसान ॥ १ ॥

मगर मीन सम्बाद की, प्रति उत्तर बर्तमान ।
जुगल बचन जस जस कही, कहे तुलसी सुन कान ॥ १० ॥

॥ मंगल ॥

मीन मगर सम्बाद, आदि सुनि ले सही ।
यह जग भारत काल, जाल गुड़िया दई ॥ १ ॥
कहन मीन मन मगर, बात माने नहीँ ।
सतगुर काटैँ जाल, काल डर ना रही ॥ २ ॥

॥ साखी ॥

बदन नाद जल आदि सूँ, तन बैराट बिनास ।
प्रिथी अगिन आकास लौँ, नस पाँचो बरबाद ॥ १ ॥
मगर कहत मत मीन से, सत मत बेद पुरान ।
यह सनात सब ने कही, सुन मन मीन जुड़ान ॥ २ ॥
मीन कहत सत संत ने, सतगुर बाँह बखान ।
जो पुरान बेदन कही, जुग जुग बंधन खान ॥ ३ ॥
मगर कहे बैराट के, ब्रह्मा नाभ निवास ।
बेद चार मुख से कही, सरगुन बाक बिलास ॥ ४ ॥
मीन कहे मन मगर से, जल उतपति जम जाल ।
काल कला परचंड से, जुगन जुगन जंजाल ॥ ५ ॥
मगर कहत मगरूर से, सुन सत मीन बिचार ।
लख अकास अस्थूल से, उतपति निरख निहार ॥ ६ ॥
मीन बरन मन मगर कूँ, जल बिच ब्रह्म अधार ।
ब्रह्म परे के पार की, जम धरि करत बिगार ॥ ७ ॥
निरंकार के पार है, जोतन आतम रूप ।
चंद सुरज तत नभ नहीँ, जहाँ छाँह नहिँ धूप ॥ ८ ॥
मगर मस्त मानै नहीँ, ज्ञान करत मतिहीन ।
मीन मते की बात को, करत हट नहिँ चीन्ह ॥ ९ ॥
मीन मगर झगड़ा कही, तुलसी तरक उपाध ।
मगर अंध मानै नहीँ, मीन बचन बिख्यात ॥ १० ॥

सिंह सम्बाद

॥ साखी ॥

सिंघ बसै बन बीच में, सारदूल समझ अकास ।
पिरथी सेस निवास है, कहिया तुलसीदास ॥ १ ॥

॥ मंगल ॥

सिंघ सारदूल सेस, सहस कँवला कही ।
द्वै दल फूला फूल, मूल तत में तुही ॥

॥ साखी ॥

(१)

तीन तिलोँ के बीच में, तुम्हरा सकल पसार ।
पारपुरुष भूलत भई, सारँग सुरति अधार ॥ १ ॥
जगत अंध फरफंद से, माया मीन बिचार ।
जल बिछुरत ब्याकुल भई, मकरी उरझी तार ॥ २ ॥
इंद्री बैठक बास में, देवन दुंद पसार ।
गुन बस जो जैसी कहै, जड़ चेतन बिस्तार ॥ ३ ॥
बिस्व बिदित सब देव के, सास्तर सिम्रित पुरान ।
मूल मरम जाने बिना, कबहुँ न सुरति जुड़ान ॥ ४ ॥
तुलसी तखत बिसारि के, कीन्ही बारह बाट ।
सतगुर से परिचय भई, जब चीन्हा घर घाट ॥ ५ ॥

(२)

जीव ब्रह्म अरु आतमा, जाके परे निवास ।
मन गो गुन पहुँचे नहीं, तुलसी अगम अवास ॥ १ ॥
पढ़ि बिद्या ज्ञानी भये, बिना बास ज्यों फूल ।
ब्रह्म बरन कहैं आप को, सो झूठे मति मूल ॥ २ ॥

॥ मंगल ॥

ब्रह्म जीव के पार, पुरुष इक री बसे ।
आतम नहीं अकास, अजर कहो री कसे ॥

॥ साखी ॥

(१)

आतम तत्त अकास से, पृथी जल पवन समान ।
अगिन अली अस पाँच में, आतम जीव फँसान ॥ १

पाँच तत्त से भिन्न है, सुन्न सिखर अस्थान।
परमातम वा को कहैँ, सोइ अस ब्रह्म बखान ॥ २ ॥
सुन्न सहर रबि ससि नहीँ, नहिँ कछु अंड अकार।
महासुन्न के पार है, सो सतपुरुष निनार ॥ ३ ॥
संत सैन वहि घर करैँ, सूरति सैन चढ़ाय।
पद प्रयाग बेनी लखैँ, पीया पैठि अन्हाय ॥ ४ ॥
अगुन सगुन के पार है, दस औतार न जाय।
ब्रह्मा बिस्नु महेस जो, बेद नेत गोहराय ॥ ५ ॥
ज्ञान ध्यान अरु भक्ति से, संत मता है न्यार।
सासतर पट वेदांत जो, नहिँ कोइ पावत पार ॥ ६ ॥
भेष पंथ जोगी जती, परमहंस सन्यास।
ब्रह्मचार बैराग लौँ, पंडित झूठी आस ॥ ७ ॥
अगम निगम जो कोइ लखै, तकै सुरति घर पाइ।
वे अकाय न्यारे रहैं, तुलसी अगम अथाह ॥ ८ ॥

(२)

परमहंस वेदांत से, पढ़ि पढ़ि ब्रह्म बखान।
सुध सरूप कहैँ आप को, अहमक खोज भुलान ॥ १ ॥
मन मलीन तन में बसा, फसा करम की कार।
जार बँधा गो गुनन को, लख चौरासी धार ॥ २ ॥

॥ शब्द ॥

ज्ञान वाक वेदांत से, पढ़ि ब्रह्म बतावैँ हो ॥ टेक ॥
सुध सरूप कहैँ आतमा, अहमक अस्थावैँ हो।
दुख सुख संसय लहर में, मन तरँग उठावैँ हो ॥ १ ॥
मन मलीन तन मेँ बसै, दस करम करावैँ हो।
जड़ चेतन बंधन बँधे, निसकलप कहावैँ हो ॥ २ ॥
अहंग भाव भरमत फिरैँ, जग रूप हढ़ावैँ हो।
अज अरूप जानैँ नहीँ, मूरख भरमावैँ हो ॥ ३ ॥

आप थाप अपनी करैं, घट भेद न पावैं हो।
पाँच तत्त तन ना हते, तब को नहिँ गावैं हो ॥ ४ ॥
बिंद बदन बैराट मैं, उपजैं बिनसावैं हो।
नाद आद की आद को, सुपने नहिँ पावैं हो ॥ ५ ॥
कहत बेद हम से भये, हम जग उपजाये हो।
झूँठ बात बकते फिरैं, सिर भार चढ़ाये हो ॥ ६ ॥
अपने ब्रह्मानन्द को, अस कहन बतावैं हो।
बेद बिधी बेदांत की, फिर साख सुनावैं हो ॥ ७ ॥
परमातम के पार को, तुलसी नहिँ पावैं हो।
बिन सतगुर बिनसैं सदा, नर देह गँवावैं हो ॥ ८ ॥

॥ साखी ॥

गगन मँडल के बीच में, गंगा बहत प्रबाह।
संत सुरति मंजन करे, पार अधर के माहिँ ॥

॥ शब्द ॥

(१)

गगन धार गंगा बहै, कहैं संत सुजाना हो ॥ टेक ॥
चढ़ि सूरति सरवर गई, ससि सूर ठिकाना हो।
बिरले गुरमुख पाइया, जिन सब्द पिछाना हो ॥ १ ॥
प्रानपुरुष आगे चली, सोइ करत बखाना हो।
बिमल बिमल बानी उठै, अद्भुत असमाना हो ॥ २ ॥
सहस कँवल दल पार ये, मानो बुद्धि हिराना हो।
निरमल बास निवास में, करि करि कोइ जाना हो ॥ ३ ॥
तुलसी तलब तलबी करै, नित सुरति निसाना हो।
अंड अलख लखिहै सोई, चढ़ि करि धरि ध्याना हो ॥ ४ ॥

(२)

पंडित भल चारो बेद पढ़े ॥ टेक ॥
गीता ज्ञान भागवत बाँची, जहँ मछरी तहँ लेत खड़े ॥ १ ॥
करि असनान अचार रसोई, हाँड़ी भीतर हाड़ भुड़े ॥ २ ॥

॥ साखी ॥

मन बिगवा[1] भेड़ा कहा, तन मन करत बिहार।
संत समझ की राह कूँ, पकरि न करत सिहार ॥ १ ॥
ऋषी मुनी जोगी जती, रती न पावैं चैन।
पाँच पचीसो संग जो, ज्ञान हरन दुख देन ॥ २ ॥

(९)

नगर बिच बिगवा[1] गजब करै, सुधि बुधि ज्ञान हरै ॥ टेक ॥
द्वारे डगर फाड़ि फाटक को, मछरी पकरि धरै ॥ १ ॥
संजम सुरति वचन नहिँ पावै, गो गुन आनि अरै ॥ २ ॥
बाहर नगर निकरि कोइ जावै, ता की गैल परै ॥ ३ ॥
तुलसी जब सतगुर को पावै, सत मति सठ सुधरै ॥ ४ ॥

॥ साखी ॥

पंछी पौन अकास में, स्वासा सुन्न निवास।
चाँद सूर सत द्वार में, भाखै तुलसीदास ॥ १ ॥
इंगल पिँगल समीर[2] से, सुखमनि बंक बिचार।
सहस कँवल दल द्वार में, तुलसी निरखि निहार ॥ २ ॥

(१०)

पंछी पौन चुगै अलख घर ॥ टेक ॥
सहर सेत अस देख अचंभा, साँझै सूर उगै ॥ १ ॥
नित परकास पद अगर उजाली, जगमग जुगन जुगै ॥ २ ॥
सुखमनि सुन्न सुरति महलोँ पर, चढ़त न पैर डगै ॥ ३ ॥
करुना कँवल सोई दल द्वारा, लै लै मन उमडै ॥ ४ ॥
तुलसी तिल दिल देख दृगन में, साचे सूर थुवै ॥ ५ ॥

॥ साखी ॥

कपट किवारी खोलि कै, चटक चली पिउ धाम।
स्याम कंज की राह से, गुर लखिया सतनाम ॥ १ ॥
दुलहिनि सजी बरात लै, सूरति सेहरा बाँधि।
दिल दुरबीन अंदर लखा, दुलहा अजर अधार ॥ २ ॥

---

(१) भेड़िया। (२) पवन।

(११)

गगन चढ़ि अगम कपाट खुलै ॥ टेक ॥
कुंजी दीन्ह दया सतगुरु की, सब भ्रम घाट घुलै ॥ १ ॥
लोहा से कंचन करि दीन्हा, रतनन बाट तुलै ॥ २ ॥
पी केरी पलँग पास महलों में, गैबी चँवर ढुलै ॥ ३ ॥
तुलसी अचल सुहाग सुरति से, पाइ सतनाम दुलै[1] ॥ ४ ॥

॥ साखी ॥

नगर संग रँग रीति कूँ, दूर बहाऊँ झार ।
बार बार बिगवा दुखी, तन मन जारूँ मार ॥

(१२)

नगर अब छोड़ित जोगी संग, बिगवा करत कुरंग ॥ टेक ॥
ज्ञान गली मग मारग रोकूँ, तोष करूँ तन तंग ॥ १ ॥
धीर ढाल करि सील सरोही[2], मारि कतल करूँ अंग ॥ २ ॥
तुलसी कैद करूँ पाँचो को, अटक जँजीर अपंग ॥ ३ ॥

॥ साखी ॥

सुरति समझ सहजै अड़ी, खड़ी द्वार के माहिँ ।
धाइ धमक मग पीव के, जीव ब्रह्म होइ जाइ ॥

(१३)

सजि कै सुरति अड़ी गैब घर ॥ टेक ॥
नगर नैन सुख चैन चौहटे, थिर करि सम्हल चढ़ी ॥ १ ॥
दीपक तत्त तेल बिन बाती, जगमग जोति बरी ॥ २ ॥
अजर उजार पार लखि सूरति, जात न लगत घड़ी ॥ ३ ॥
पच्छिम द्वार हिये दृग हरखी, घर की खबर पड़ी ॥ ४ ॥
तुलसी तोल अतोल अजर लखि, सहजै जाइ खड़ी ॥ ५ ॥

॥ साखी ॥

बोल काल काया बसे, बिंद बन कीन्ह पसार ।
सार भूल भरमै रहे, गही न आदि अपार ॥ १ ॥

---

(१) दुलहा । (२) तलवार ।

पाँच तत्त पिंडा बना, अंडा अगम अकास।
जल पौना पिरथी नहीं, जहँ बस कीन्हा बास ॥ २ ॥
पिंड ब्रह्मंड से भिन्न है, सो घर पिय पद मूल।
काया काल पसार है, तजि बोलत घर सूल ॥ ३ ॥

(१४)

सब्द घट तन में बोलत काल, इनहिं रचा जंजाल ॥ टेक ॥
भूला नाद आदि अपनी कूँ, सो घर सब्द न ख्याल ॥ १ ॥
पाँच तत्त बैराट काया में, माया बिबस बेहाल ॥ २ ॥
इंद्री बास बिंद उपजाया, जग बंधन जम जाल ॥ ३ ॥
आवा गवन भवन में भूले, भूले करम कराल ॥ ४ ॥
चौरासी बासी बंधन में, बिसरे दीन-दयाल ॥ ५ ॥
पिंड ब्रह्मंड दोऊ में नाहीं, सो घर अगम अकाल ॥ ६ ॥
तुलसी तोल बोल बिषया तजि, भजु पिया भरम निकाल ॥ ७ ॥

॥ साखी ॥

चारि गुरू तन में बसैं, धुर गुर अगम अगाध।
बरनन बिधि बिधि बिधि कही, बूझैं बिरले साध ॥ १ ॥
चारि ठिकाने चारि गुर, भिन भिन न्यारे धाम।
स्याम कंज के ऊपरे, तुलसी लखन बखान ॥ २ ॥

(१५)

अधर घर सतगुर सोध करो, लखि सुति धरनि धरो ॥ टेक ॥
काया खोज करो कँवलन में, सो गुर तत्त तरो ॥ १ ॥
गुर चारो पद चारि ठिकाने, भिन भिन बरन बरो ॥ २ ॥
परथम गुर दलसहसकँवल में, कंज काज सुधरो ॥ ३ ॥
गुर दूसर गढ़ गगन सिखर पर, द्वैदल पद सुमिरो ॥ ४ ॥
गुर तीसर तीसर कँवला में, चौदल चरन परो ॥ ५ ॥
चौथे सिंध सत लोक गुरू को, जानै सो जोई उबरो ॥ ६ ॥
गुरू चारि पद पार परम गुर, सो संतन पकरो ॥ ७ ॥

सुन्न सब्द नहिँ आतम आसा , स्वास जोग झगरो ॥ ८ ॥
अंड ब्रह्मंड से पिंड पसारा , निरगुन गुन बिगरो ॥ ९ ॥
गुर सिष नाहिँ गुरू गुरुवाई , बिन गुर भरम मरो ॥ १० ॥
कनफूँका गहि कंठी बाँधी , इनसे जग बिगरो ॥ ११ ॥
आसा बस बंधन सिष कीन्हा , इन हिये ज्ञान हरो ॥ १२ ॥
पढ़ि पढ़ि मोट भये मन ज्ञानी , मान मस्त मगरो ॥ १३ ॥
सुनि सतसंग नेक नहिँ भावे , बूड़ जनम अगरो ॥ १४ ॥
मूल अजर सतगुर बिन भूले , नहिँ पावे डगरो ॥ १५ ॥
ये सब्दन में परखि पुकारे , या से भव उतरो ॥ १६ ॥
अकथ अलोक लोक से न्यारा , तुलसी अज अजरो ॥ १७ ॥

(१६)

अगम नहिँ गुर बिन समुझि परै ॥ टेक ॥
चारि बेद पढ़ि पुरान अठारा , नौ षट खोजि मरै ॥ १ ॥
ज्ञानी भये भरम नहिँ छूटा , झूठा बाद करै ॥ २ ॥
बिष बिस्वास आस कर्मन की , नहिँ प्रन टेक टरै ॥ ३ ॥
काल सनाती[1] जुग जुग खावै , चर और अचर चरै ॥ ४ ॥
बिन सतसंग और संत बिन , बेरी बिकट को बिपत हरै ॥५
तजि नित नेम अचार भार सिर, निरमल धरनि धरै ॥ ६ ॥
कहैं गुर संध अकास बास पर , सूरति गगन चढ़ै ॥ ७ ॥
तन बैराट जीव तरै तुलसी , सहजै भव उतरै ॥ ८ ॥

शब्द धामों के

(१)

देखो नर नगर द्वारिका जावै , साँड दगन दगवावै ॥ टेक ॥
बाम्हन जाति बरन में ऊँचे , तन लै अगिन जरावै ।
छाप दिवाइ लेत दोउ भुज पर , दादिहि जनम गँवावै ॥ १
राम कृस्न औतार करम बस , सो बुध रूप कहावै ।
गोपी साथ भाँति करि क्रीड़ा , डुंड प्रतच्छ दिखावै ॥ :

(१) प्राचीन ।

(६)

बँगला अजब अनूप रूप में अधर बना रे ॥ टेक ॥
मन मेमार[१] राज निंव दीन्हा, दिल देवल सरूप ।
आस ईंट चित्त कर चूना, गो गच कीन्हा तूप ॥ १ ॥
पाँच तत्त खँभ खेल बनाया, खिड़की भँवर अरूप ।
नौ दरबार द्वार में बैठा, पौरी पदम पर पूप ॥ २ ॥
नौ निरवार दसो दरवाजे, भाजे सुरति सरूप ।
सतगुर सरन परन मत पूरा, जहाँ छाँह नहिं धूप ॥ ३ ॥
तुलसी समझ सूर कोइ पावे, अगम औंध मुख कूप ।
दृढ़ कर पकरि डोल की डोरी, उठत सब्द मन भूप ॥ ४ ॥

(७)

देखि गजब की बात, अजब चित चेत न आवे ॥टेक॥
साध संत साखी सब्दी में, बरन बखानी भाँत ।
पढ़ि पढ़ि मरत सुनत दिन राती, बूझै एक न बात ॥ १ ॥
करि करि कान बानी नहिं छूटै, मोटे मन सँग साथ ।
मन मतंग माता मस्ती में, हस्ती होस न हाथ ॥ २ ॥
यह ताजुब की बात बिचारी, सारा जग उतपात ।
काम क्रोध लखि लोभ लबारा, बार बार बिष खात ॥ ३ ॥
तुलसी तरक नेक नहिं लावे, भावे भर्म उपाध ।
खाविंद खबर नित नेक न बूझी, खैहौ जम की लात ॥ ४ ॥

(८)

मरना हक ईमान जान, कछु संग न जावे ॥ टेक ॥
करता अजब गजब की बातें, मझब मौज के साथ ।
लात लबार फिरिस्ते मारें, दस्त बंधे दोउ तान ॥ १ ॥
काफिर कुफर करे कुफराना, दिल दलील हैरान ।
खाना खाय गाय को काटी, मिट्टी मजा जबान ॥ २ ॥
करि करि खून गुनह की बातें, गुनहगार गफिलान ।
खुद महजित तन बदन बनाया, अल्ला अलिफ जहान ॥ ३ ॥

---

(१) थवई ।

मुहम्मद दर्दमंद भये आपी, मिहर रहम रहमान।
खुदा खलक खाविंद सबही का, कहत कतेब कुरान॥ ४॥
मुसलमीन सोइ दीन बिचारे, तुलसी तुरक इमान।
दोजख दर्द दूर कर फीकी, नेकी भिस्त निदान॥ ५॥

(९)

बिरह बिमल बैराग राग, तजि सब्द सुनो रे॥ टेक॥
मिरगा रोज मौज बन माहीँ, चरत फिरत भव भाग।
बधिक बीन बन बीच बजाई, सुनत स्रवन लौ लाग॥ १॥
घनुवाँ पकरि पारधी मारा, सुधि बुधि बिसरस राग।
मारत तान बान मिरगा को, तुरत प्रान तन त्याग॥ २॥
जैसे चंद सती सत मारग, तजि धन धाम सुहाग।
मुरदा संग तरंग जरन की, ले मन तन अनुराग॥ ३॥
तुलसी स्रवन सुने अनहद को, सुनि मन मृग मत माँग।
सती सूर सूरा मन माहीँ, सुनि धुनि पूरन भाग॥ ४॥

(१०)

सुरत सिरोमनि घाट, गुमठ मठ मृदँग बजे रे॥ टेक॥
किँगरी बीन संख सहनाई, बंकनाल की बाट।
चित बिच चाट खाट पर जागी, सोवत कपट कपाट॥ १॥
मुरली मधुर झाँझ झनकारी, रम्भा नचत बैराट।
उड़त गुलाल ज्ञान गुन गाँठी, भरि भरि रँग रस माट॥ २॥
गइया गैल सैल अनहद की, उठे तान सुर ठाठ।
लगन लगाय जाय सोइ समझी, सुरति सैल नभ फाट॥ ३॥
तुलसी निरखि नैन दिन राती, पल पल पहरो आठ।
यहि बिधि सैल करे निस बासर, रोज तीनसै साठ॥ ४॥

(११)

खुलि खुलि बोल बिचार, तोल कोइ समझ सुनो रे॥टेक॥
बानी बरन सरन सतगुर की, सत मत ब्रत तत सार।
भव भ्रम भार उतार जगत का, उतरो भवजल पार॥ १

ये सब सार समझ मन मारग, बूड़े अगम अपार।
सतगुर संध फंद सब काटे, बैठे जम झख मार ॥ २ ॥
समझे भेद खेद खुल छूटे, टूटे तपत निवार।
सार सब्द सूरति सँग खेली, मैली मूर निकार ॥ ३ ॥
तुलसी ताक भाव नर देही, छिन छिन घटत घटाव।
दाव साव सरबे की बिरिया, मिलन बखत निरधार ॥ ४ ॥

(१२)

चेत सबेरे चलना बाट ॥ टेक ॥
मन माली तन बाग लगाया, चलत मुसाफिर को बिलमाया।
बिष के लड्डू ताहि खवाये, लूट लिया स्वादन की चाट ॥ १ ॥
तन सराय में मन उरझाना, भठियारी के रूप लुभाना।
निस बासर वाही सँग रहना, कर हिसाब सतगुर की हाट ॥ २ ॥
ज्ञान का घोड़ा बनाय के लीजे, प्रेम लगाम ताहि मुख दीजे।
सुरति एड़ दे आगे चलना, भव सागर का चौड़ा फाट ॥ ३ ॥
क्या सोवे उठ साहिब सुमिरो, दसो दिसा काल निज घेरो।
तुलसी कहै चेत नर अंधा, अब क्या पड़ा बिछाये खाट ॥ ४ ॥

(१३)

जात रे तन बाद बिताना ॥ टेक ॥
छिन छिन उमर घटत दिनराती, सोवन क्या उठि जाग बिहाना ॥१॥
यह देही बारू सम भीती, बिनसत पल बेहोस हैवाना ॥२॥
ज्यों गुलाल कुमकुम भरि मारे, फेंक फूटि जिमि जात निदाना ॥३॥
यह तन की अन आस अनाड़ी, तैं बिष बंधन फाँस फँदाना ॥४॥
यह माया काया छिन भंगी, रँग रस करि करि डारत खाना ॥५॥
सुख सम्पति आसिक इंद्री में, बिष बस चौज मौज मन माना ॥६॥
तुलसी ताव दाव यहि औसर, बासर निसि गइ भजन न जाना ॥७॥

(१४)

मान रे मन मस्त मसानी ॥ टेक ॥
पोखि पोखि तन बदन बढ़ाया।
सो तन बन जरै अग्नि निदानी ॥ १ ॥

कुटुँब बंधु भैया सुत नारी ।
  मरत कोऊ सँग जात न जानी ॥ २ ॥
यह संसार समझ दुखदाई ।
  पर बंधन नहिँ परत पिछानी ॥ ३ ॥
जोइ जोइ पाप पुन्न जिन कीन्हे ।
  आप आप भव भुगतत खानी ॥ ४ ॥
फूला बृच्छ फूल गिरि जावे ।
  तैँ फूले पर कौन ठिकानी ॥ ५ ॥
तुलसी जगत जान दिन चारी ।
  भारी भव बिच फाँस फँसानी ॥ ६ ॥

(१५)

देख रे दिन जात दिवाने ॥ टेक ॥
रस बस बंध पड़ा जुग चारी ।
  अब छूटन भज बखत न जाने ॥ १ ॥
जग आसा बैराग बनाया ।
  खाया कछु दिन बाद भ्रमाने ॥ २ ॥
मन इंद्री सुख नींद बिचारे ।
  पारे परम धाम इमि आने ॥ ३ ॥
जगत बोध बस आप गँवाया ।
  राम कहत सब जन्म सिराने ॥ ४ ॥
तुलसी अब बाकी चुकि बीती ।
  या मेँ कर सतसंग न हाने ॥ ५ ॥

(१६)

जात रे जड़ जन्म सिराना ॥ टेक ॥
सोवत नींद निरखि तन बीता ।
  कीन्हा जग रस करम कमाना* ॥ १ ॥

---
*एक लिपि में "कसाना" है जिस का अर्थ कस गया या जकड़ गया के है

लोक लाज सब काज कियो रे ।
जीव काज परलोक हँसाना ॥ २ ॥
नीम कीट जिमि नीम पियारी ।
बसि रहे बिष सही अमृत जाना ॥ ३ ॥
गुबरीला गोबर बिष्टा में ।
उठि बैठे जहँ बास बसाना ॥ ४ ॥
ज्यों मदिरा मद पियत सराबी ।
पियत अमल मद में मस्ताना ॥ ५ ॥
यह गो गुन मन मगन मिलापी ।
सो तुलसी कहिँ नहिँ कसकाना ॥ ६ ॥

(१७)

छाड़ रे मन मान मुटाई ॥ टेक ॥
मोटे मन सिर मोट बँधानी ।
मान मनी तजि झूठ खुटाई ॥ १ ॥
छल बल छाड़ि छूत लबराई ।
सत्त बात मन आनि छुटाई ॥ २ ॥
चार दिना यह देह दिवाने ।
ज्यों चरखी धौं कपास ओटाई ॥ ३ ॥
बिन गुर भजन भाग जेहिँ फूटा ।
झूठे जग सँग साथ लुटाई ॥ ४ ॥
बूझे वस्तु बैठ सतसंगा ।
छिन-भँग तन यह देत दृढ़ाई ॥ ५ ॥
तुलसी तोल बोल यह बानी ।
बूझ मूढ़ फिर छोड़ ढिठाई ॥ ६ ॥

(१८)

रोवत रैन खुरख भइ अँखियाँ ॥ टेक ॥
ढुरि ढुरि नीर बहत सुन सखियाँ ।
झखियाँ मन मूरख बुधि बैन ॥ १ ॥

गो गुन गूढ़ मूढ़ मन पकियाँ।
चखियाँ बिष नहिँ मानत कहन ॥ २ ॥
गुर मत मूल भूल भल रखियाँ।
तकियाँ ता से सुरति न पैन ॥ ३ ॥
नगर छली तुलसी तक थकियाँ।
लखियाँ नर नारी दुख दैन ॥ ४ ॥

(१९)

रही री बेचैन नगर नहिँ बसिहौँ ॥ टेक ॥
गो गुन पंच रंच नहिँ फसिहौँ।
धसिहौँ बिमल बजावत बैन ॥ १ ॥
करम अनीत नीत सब कसिहौँ।
डसिहौँ नागन डगरहि ऐन ॥ २ ॥
अली री यकीन दीन दिल लसिहौँ।
ससिहौँ दीपक मानो कहन ॥ ३ ॥
चढ़िहौँ उलट पलट जब हसिहौँ।
मसिहौँ मार सुरति की सैन ॥ ४ ॥
आगे न कहन कहूँ आली असि हौँ।
जसि हौँ तस तुलसी लख लैन ॥ ५ ॥

(२०)

अली री अकास सुरति सजि चाली ॥ टेक ।
उड़ि उड़ि बिहँग चढ़त नभ नाली।
भाली झलक भयो उजियास ॥ १ ॥
दृग दीपक मंदर उजियाली।
लाली लाल फैल चहुँ पास ॥ २ ॥
उमँगी सुरति प्रेम प्रन पाली।
माली मीन जल सींच हुलास ॥ ३ ॥
तुलसी रंग रूप रस डाली।
हाल होत हिये ब्रह्म बिलास ॥ ४ ॥

(२१)

विमल रस प्याला पियत करूर ॥ टेक ॥
भट्ठी अगम अधर रस गाला ।
नाल चुवत कोइ जानत सूर ॥ १ ॥
अली री अतूल मूल रस आला ।
अमल करे सोइ अगम अपूर ॥ २ ॥
पी पी भये संत मतवाला ।
डाला डोल न जाना कूर ॥ ३ ॥
मैं पिय पियत मिली दर हाला ।
हँसि हँसि बोली बात हजूर ॥ ४ ॥
नगर नारि सब करत बिहाला ।
इन सब के मुख डारी धूर ॥ ५ ॥
तुलसी अधर कदर खुलि ख्याला ।
कठिन कूर करि दीन्हे दूर ॥ ६ ॥

(२२)

सुरति मतवाली करत कलोल ॥ टेक ॥
पलँगा साज सजी पिउ प्यारी ।
पिय रस गाँठ दई सब खोल ॥ १ ॥
गहि गहि बाँह गले बिच डाली ।
धार धरनि करि कीन्हि अडोल ॥ २ ॥
झमक चढ़ी हिये हेर अटारी ।
न्यारी निरखि सुना इक बोल ॥ ३ ॥
पच्छिम दिसा दिस खोलि किवारी ।
पिय पद परसत भई री अमोल ॥ ४ ॥
तुलसी जगत जाल सब जारी ।
डारी डगर वेदन की पोल ॥ ५ ॥

(२३)

कोइ बूझै न परख प्रबंध, सब्द की संध को ॥ टेक ॥
ज्ञानी गुनी कबीसुर पंडित, क्या जाने जग अंध ।
पंथ अंत कोइ भेद न पावे, मन मूरख मतिमंद ॥ १ ॥
आस अनंत अपार असंखन, माया के फरफंद ।
आवा गवन भवन में भूले, सहन लगे दुख दुंद ॥ २ ॥
ऋषी मुनी तप बन फल खाते, सब जड़ मूली कंद ।
जगत त्याग बन भाग बसत हैं, ऋधि सिधि उड़ी रे सुगंध ॥३॥
आपन में आपा नहिं देखा, अंदर माहिं अनंद ।
सतगुर गगन सोध नहिं कीन्हा, चीन्हा न मन मकरंद ॥ ४ ॥
तुलसी तुरत तत्त तन खोजे, छाड़े धोखे धंद ।
सुरति डोर सुन द्वार सब्द में, पिया सँग केल करंद ॥ ५ ॥

(२४)

कोइ बूझै बूझनहार, सब्द के सार को ॥ टेक ॥
सतगुर संध सब्द में खोले, बोले बचन पुकार ।
अगम अडोल ढोल के धमके, कहते हेला मार ॥ १ ॥
रबि ससि सूर अपूर अधर का, मारग अपरम्पार ।
संत अनंत परम गुर पूरन, परसत अगम अपार ॥ २ ॥
सो सज्जन सूरे पूरे हैं, हीरे रतन जवार ।
उनके संग रंग रस पीवे, अमरी सुरति सँवार ॥ ३ ॥
अमरी आई अमर लोक से, मोच्छ बँधी दरबार ।
दरसन करत नाम की नौका, चढ़ि उतरे भव पार ॥ ४ ॥
तुलसी तंत संत का मारग, असली अतर निकार ।
सूँघत अंग संग सब भींजे, बरसे अखंडित धार ॥ ५ ॥

(२५)

कोइ समझैं सूरे संत, मता बेअंत है ॥ टेक ॥
जोगी जती तपी सन्यासी, नहिं कोइ पावे तंत ।
आगे अगम बिना सतगुर के, को लखवावे पंथ ॥ १ ॥

मारग मरम मूल हंसन को, वे वोहि देस बसंत ।
बिन उनकी संगत नहिँ पावे, पचि पचि मूए रे अनंत ॥ २ ॥
जो वोहि लोक लखन की बरनन, कहते बाक बृतंत ।
पिय पद परखि हरखि हिये अपने, उमँगि मिले जेहि कंत ॥ ३ ॥
ध्रु तारे सूरज मंडल चढ़ि, आगे को परंत ।
उनके परे परम गुर पूरन, जहँ पहुँचे कोइ संत ॥ ४ ॥
अधर धाम स्वामी को सेवे, तुलसी अगम अतंत ।
सेज बिछाय पलँग पर पौढ़े, सो तोड़े जम दंत ॥ ५ ॥

(२६)

कोइ क्या बूझेंगे बैन, अगम की ऐन को ॥ टेक ॥
अगम निगम पढ़ि पढ़ि पचि हारे, यह संतोँ की कहन ।
सतगुर गुप्त मते की संधेँ, क्या पहिचानेँ सैन ॥ १ ॥
दस अवतार जगत मेँ आये, यह भव रस को लेन ।
ब्रह्मा बिस्नु महेसुर जोगी, मोहनी भोग बेचैन ॥ २ ॥
देवी देव सकल जग जूड़ी, लागि सबै दुख देन ।
और आस बिस्वास बरन मेँ, नहिँ देखे निज नैन ॥ ३ ॥
सर्व मते पाहन को पूजेँ, जोगी जंगम जैन ।
अंत समय मारग को भूले, आस बास लगे रहन ॥ ४ ॥
तुलसी सब संसार सुधा सुर, कामधेनु सुख चैन ।
गो इंद्री मन मूढ़ मते से, भवजल जात न पैन ॥ ५ ॥

(२७)

सब बढ़े रे गुमर की गैल, पड़े रस केल मेँ ॥ टेक ॥
सब संसार नहीँ जग रचना, जब था ब्रह्म अकेल ।
द्वैत भाव भई मन माया, करि काया बस खेल ॥ १ ॥
मन तन बन बैराट बना जब, गो गुन चहुँ दिस फैल ।
एक अनेक देह धर धारे, डारे करमन पेल ॥ २ ॥
लख चौरासी जोनि खानि मेँ, बढ़े तलाने तेल ।
जुग जुग पड़े पीर निस बासर, करि माया सँग मेल ॥ ३ ॥

जीवन मरन मौत मारग में, ठौर ठौर के ठेल ।
बूड़े बहे कहे कहो का से, यह दुख सुख की सैल ॥ ४ ॥
करनी करी भोग भुगतन की, बने बाट के ढेल ।
मारे फिरें ठौर ठोकर के, तुलसी यह जग जेल ॥ ५ ॥

(२८)

नहिं मन तन बिरह बैराग, तमा[1] त्यागे बिना ॥ टेक ॥
जग परिवार कुटुँब को तजि के, बैठे बन में भाग ।
मन की कहर ज़हर नहिं छूटी, अंदर में रही लाग ॥ १ ॥
रमक रीत मारग को बूझै, जब उपजै अनुराग ।
सहज भाव से जो कुछ आवै, क्या रूखो क्या साग ॥ २ ॥
भोजन भाव सहज की भिच्छा, नहिं कोइ से कुछ माँग ।
भीतर तमक रमक नहिं उनके, को लख पावै थाग ॥ ३ ॥
जग से रहै उदासी बासी, मोह माया निरदाग ।
मन में मगन लगन सतगुर की, आठ पहर लौ लाग ॥ ४ ॥
तुलसी तरक फरक आलम से, जग सोवत वे जाग ।
सब संसार सुप्न सम बिनसहि, बुझी रे तपन की आग ॥ ५ ॥

(२९)

अलमस्त फिरे क्या होइ, सुरति ले धोइ के ॥ टेक ॥
सतगुर सिला ज्ञान कर साबुन, दुरमति डारो खोइ ।
काया कुमति सुमति जल मल को, दाग न राखो कोइ ॥ १ ॥
निर्मल ज्ञान उदय अंदर में, बिमल बिबेकी जोइ ।
जब बिज्ञान भान उर ऊगै, तिमर बिनासे सोइ ॥ २ ॥
सतगुर संध पकरि कर पौड़ी, सुरति चढ़े निरमोइ ।
झिलमिल जोत गगन में झलके, दिखे मंदर में तोइ ॥ ३ ॥
यह उजियारे बैठ मगन है, लखि ब्रह्मण्ड बिलोइ ।
सूरति फेक देख आगे की, सब घट एक समोइ ॥ ४ ॥
बर्नन और कहूँ क्या उनकी, अद्भुत है अहोइ ।
तुलसी कहै संत कोइ भेदी, लखि ले ठीके टोइ ॥ ५ ॥

---

(१) क्रोध ।

(३०)

सुन सतगुर परम उदार, पार पहुँचावहीं ॥ टेक ॥
अली अब ब्यान कहूँ तेरे से, अबरन बरन बिचार।
मिलन मिलाप पिया धुर घर की, कहैं सतगुर निरधार ॥ १ ॥
कर सतसंग टहल संतन की, महल मुदित मन मार।
जब दें संध सुरति सुंदर की, उतरि चलो चौधार ॥ २ ॥
कहुँ निरवार पार घर मारग, प्रीतम दरस दुलार।
धीरज धरो करो निज कारज, सतगुर खेवनहार ॥ ३ ॥
पूरब परख पार की नौका, केवट के सिर भार।
निरदुँद रहो गहो सोइ मारग, जो जेहि घाट उतार ॥ ४ ॥
दीप नगर परदे बिच टाटी, फाटी फरक निनार।
परदा फोड़ तोड़ कर टाटी, निकरि कढ़ो वोही द्वार ॥ ५ ॥
ये तो बाट बिहंगम केरी, चढ़ि उड़ बैठे डार।
ऊपर अधर पाक फल चाखै, पंछी कवन प्रकार ॥ ६ ॥
अब पपील[1] की परख बताऊँ, जो दूजी दरकार।
सूरज कँवल नाल नभ अंदर, चढ़ि उतरो उर धार ॥ ७ ॥
चढ़ि चेंटी तरवर से भुँइ पर, गिर पर चढ़ि कइ बार।
मारग पौन पपील झकोरै, चढ़ि फिर बहुरि उतार ॥ ८ ॥
यौं कर कढ़े चढ़े फिर उतरे, ज्यौं मकरी का तार।
जाला बुने उने वोहि औसर, लखि देखो लौ लार ॥ ९ ॥
वर्नन बाट पपील पुकारी, और बिहँग बिस्तार।
जड़ चेतन की गाँठ खुले जब, आगे को पग धार ॥ १० ॥
देह तज करिके डगर चले जोइ, वाक बिदेह अधार।
सब जग वचन बैखरी बोले, वे परबोल पुकार ॥ ११ ॥
मेहर दया की मौज निनारी, वह उनके अखत्यार।
जब कोइ वखत सखत निकसनकी, लेकर पकरि निकार ॥ १२ ॥
ये त्रै जुक्ति मुक्ति से न्यारी, बूझैं बूझनहार।
तुलसी तरक फरक फहमीदे, और डगर दे डार ॥ १३ ॥

---

(१) चींटी।

(३१)

जीवन तुच्छ लखो रे नर जग में ॥ टेक ॥

पिरथम पाप पुन्न लख जिय के, नीके बूड़ि रह्यो अरी अघ में ॥१॥

जुग जुग जनम मरन जम जोनी, होनी लेख गरभ बहु भग में ॥२॥

भटकत फिरत खान चौरासी, फाँसी परत डगर के मग में ॥३॥

तुलसी चेत चलो नर काया, जग परपंच बसे जाय ठग में ॥४॥

(३२)

नर तन संग अंग बिनसन को ॥ टेक ॥

यह धन धाम कुटँब और काया, माया तजि बन बास बसन को ॥१॥

खीर खाँड घृत पिंड सँवारा, छूटे तन पल माहिँ नसन को ॥२॥

माहीमरातिब[1] हुकम रहे सोइ, कोइ मंदिर नहिँ दीप चसन को ॥३॥

तू तुलसी कहो केहि लेखन में, जाता जग जम जाल फँसन को ॥४॥

(३३)

नर धरि देह कुसल कहा कीन्ही ॥ टेक ॥

साधू संग रंग नहिँ राचे, खोटी बुद्धि लटक लौ लीन्ही ॥१॥

आठोँ पहर बिषय बस माहीँ, जुग जुग रही रे सुरति रस भीनी ॥२॥

धुर गुर आदि उमेद न राखी, चाखी चौरस परस न पीनी ॥३॥

तुलसी तन बरबाद गँवायो, खायो माहुर मरम न चीन्ही ॥४॥

(३४)

केवल ज्ञान कह्यो री गुर घट में ॥ टेक ॥

तप जप जोग जुगति करि हारे, लख स्तुति ध्यान धरो री प्रभु पट में ।१।

नैन कँवल करुनाकर माहीँ, साईँ मिलाप मनोरथ मठ में ॥२॥

करि करि खोज खलक नहिँ पावे, गुर दियो भेद सरोवर तट में ॥३॥

तुलसी तत काल तुरत तन सोधे, हाल मिले री आली अजपा रट में ।४।

---

*एक झंडा जिस पर एक मछली और दो गोले बने होते हैं और जो हाथी पर खड़ा किया जाता है। बादशाही वक्त में यह बड़ी भारी इज्जत का निशान समझा जाता था और सिर्फ भारी राजाओं और नवाबों को मिलता था।

(३५)

सब जग जाता रे जाता, अरे कोइ खोज खबर नहिँ लाता ॥टेक॥
इत से गये खबर नहिँ लाये, उत से कोई न आता।
मारग चली जात सब दुनियाँ, भेद कोई नहिँ पाता ॥ १ ॥
अंधा धुंध धरम के मारग, सब जग गोते खाता।
पंडित भेष देख सब जुगती, मुक्ति न बाट बताता ॥ २ ॥
सुभ और असुभ करम करनी से, नर तन में नहिँ आता।
छूटे बदन बिनसि तन काया, माया खानि समाता ॥ ३ ॥
खर कूकर सूकर जोनी में, हर दम काल चबाता।
भँवर चक्र में जुग जुग आवे, पावे नेक न साँता[1] ॥ ४ ॥
मात पिता बंधू सुत कारन, भारन बोझ उठाता।
जम घट रोकि प्रान ले जावे, जब कोइ संग न साथा ॥ ५ ॥
व्याकुल बदन करे जम जुलमी, मारें धरि धरि लाता।
जब हुसियार होस नहिँ लाये, अब काहे पछताता ॥ ६ ॥
जीवन तुच्छ जक्त में जाने, माने एक न बाता।
तुलसी तोल तरक तन छूटे, झूठ कुटँब का नाता ॥ ७ ॥

(३६)

इक दिन जाना वे जाना, अरे टुक वा की बात चजाना ॥टेक॥
सुख सम्पति यह सब जग लूटै, छूटै माल खजाना।
धन माया तेरी तू विचारै, मारै मौत निसाना ॥ १ ॥
माल मुलक हाथी और घोड़े, छोड़ै साज समाना।
तलबी हुकम तगादा लावै, खावै काल निदाना ॥ २ ॥
सब सुंदर तजि महल अटारी, नारी नेह भुलाना।
चलत बार कछु संग न लीन्हा, कीन्हा हंस पयाना ॥ ३ ॥
झूठी अंग उलफत मन मूढ़ा, बूड़ा जनम जहाना।
तुलसी तुच्छ तनक तन स्वासा, आस अनंत बँधाना ॥ ४ ॥

(१) शान्ति।

(३७)

कोई नहीं अपना रे अपना, अरे यह जगत रैन का सुपना ॥टेक॥
मिट्टी में मिट्टी मिलि जैहै, पैहै करम कलपना।
काया बिनस खबर नहिं दम की, जम की डगर डरपना ॥ १ ॥
बंधन जाल जुगन जम दीन्ही, कीन्ही काल थरपना।
छूटे जब सतगुर चरनन पर, तन मन सीस अरपना ॥ २ ॥
लागी रहै बिरह संतन की, ज्यौं जल मीन तलफना।
सुंदर सुख सन्मुख सूरज के, सूरति अजपा जपना ॥ ३ ॥
मारग मुकर महल दरपन में, मन में माल परखना।
तुलसी मँजिल मूल कहँ सूझै, बूझै एक हरफ ना ॥ ४ ॥

(३८)

आखिर मरना वे मरना, अरे तू जोर जुलम से डरना ॥टेक॥
सब में नबी नूर पहिचानो, खोफ खुदी का करना।
मुरसिद महरम पुख्त पैगम्बर, ख्याल जिगर में धरना ॥ १ ॥
फना बदन मिट्टी के पुतले, क्यौं दोजख में पड़ना।
नेकी बदी फिरिस्ते लिखते, हक हिसाब निस्तरना ॥ २ ॥
अल्ला मियाँ हुकम हक ताला, रूह रकान में भरना।
अरस अबर के मद्धि मुनारे, चढ़ि हर बखत उतरना ॥ ३ ॥
कामिल रहबर[1] राह बतावै, मुरसिद मँजिल निकरना।
नूर जहूर जिकर[2] में बंदे, हर दम कहर बिसरना ॥ ४ ॥
तुलसी नसीहत नेक निगह की, फैज न जात घुमरना।
खाविंद खोज खुदी को खोकर, हो दिल पाक[3] पकड़ना ॥ ५ ॥

(३९)

फाजिल बंदे वे बंदे, अरे गाफिल गुनह निखंदे ॥टेक॥
कर सवाब फाजिल फहमीदे, काढ़े दोजख फंदे।
गाफिल कुफर करै कुफराना, सो गुनाह के गंदे ॥ १ ॥
जो फाजिल अखत्यार उसी के, हक इमान कहंदे।
गाफिल जो बेहोस दिवाने, आँख ऐन के अंधे ॥ २ ॥

(१) राह दिखलाने वाला अर्थात् गुरू। (२) जाप। (३) एक लिपि में "पाँव" है।

कोई महबूब मियाँ के फ़ाजिल, लाखन माहिँ चुनिंदे।
सब जहान गाफिल दुनियाँ में, नहिँ कोइ भेद सुनंदे ॥ ३
जो फकीर फ़ाजिल खुदी खोवै, खाविँद खोज करंदे।
वे साहिब के पाक पियारे, हर दम हाल कहंदे ॥ ४
फ़ाजिल और गाफिल पहिचाने, सोई सहूर परंदे।
तुलसी तौल तवक्का[1] करके, है पाँव खाक रहंदे ॥ ५

(४०)

सुनो हो सखी इक देसवा, भूमी उगे भान ॥ टेक ॥
देसवा की उलटी रीति, साधू पालै प्रीति ॥ १
मछरी गगन पर गाजा, चंदा चुनै नाम ॥ २ ।
देसवा उरध मुख कुँइयाँ, गइया चुगै चाम ॥ ३ ।
गगना उठै धधकारी, धरै सूरति ध्यान ॥ ४ ।
खंभा न महल अटारी, प्यारी पिउ धाम ॥ ५ ॥
तारा अवर नहिँ पानी, बानी उठै बिन तान ॥ ६ ॥
खिरकी खुली बिन द्वारे, पारे परे ठाम ॥ ७ ॥
नइया कुटी भौ पारा, उतरै बिन दाम ॥ ८ ॥
तुलसी अगम गम जानी, स्रुति पायो निज नाम ॥ ९ ॥

(४१)

सखी री बिरछ पर ताला, जहँ करकै न काल ॥ टेक ॥
बिरछा के जड़ नहिँ पाती, वाकी दुरि दुरि डाल ॥ १ ॥
सर में सुरति अन्हवाई, कागा किये हैँ मराल ॥ २ ॥
संतो पंथ पिउ पाये, गुर भये हैँ दयाल ॥ ३ ॥
अठवेँ अटारी माहीँ, परे सुन पिय हाल ॥ ४ ॥
हिरवा बंकसुर नाला, चढ़ी चट चट चाल ॥ ५ ॥
सुरति गगन घन छाई, पिया परे परे ख्याल ॥ ६ ॥
तुलसी तरक तत तारी, भारी काटी भ्रम जाल ॥ ७ ॥

(१) आशा, प्रतीत।

(४२)

गुइयाँ हो गुरन गुहरावा, सुन अचरज ख्याल ॥टेक ॥
अगिनि जरै जल माहीँ, दिया बाती बिन तेल ॥ १ ॥
धरनि अधर पर छावा, गगना भूमी मेल ॥ २ ॥
सखी री नगर इक ठाँवाँ, सिंघिन ब्याई बैल ॥ ३ ॥
पपील[1] ने पील[2] गिरावा, ऊँटवा से करै केल ॥ ४ ॥
पंछी पहाड़ उड़ावा, गये गगना की गैल ॥ ५ ॥
गैया गली लख पाई, करै नित नित सैल ॥ ६ ॥
हिरना चरै हरी दूबा, चितवा चलै पेल ॥ ७ ॥
उलटे गगन नद नीरा, चकवा चलै छैल ॥ ८ ॥
तुलसी तरक तन माहीँ, पाये पाये पिया मेल ॥ ९ ॥

(४३)

आली री अधर घर न्यारा, लागी सूरति डोर ॥ टेक ॥
सखी री गगन नभ तारा, कारी बदरी की कोर ॥ १ ॥
सेता सहर सत द्वारा, धारा उठै घनघोर ॥ २ ॥
धनुवाँ धनुष धधकारा, करै अनी अनी सोर ॥ ३ ॥
कँवला कली कहूँ झरना, बहै बेनी जल जोर ॥ ४ ॥
तुलसी मगन मन माहीँ, पुनि पाये पिय मोर ॥ ५ ॥

(४४)

तुलसी तलब दृग द्वारे, अनहद हद पार ॥ टेक ॥
चंदा भवन इक नौरा, रवि गिरि गोहा चार ॥ १ ॥
महला[3] सहर दिल दौरा, संगलपुर डार ॥ २ ॥
कहका कँवल धृग धारा, सुखमना नदी नार ॥ ३ ॥
बदरी दरज सज मारे, रवि कोटि हजार ॥ ४ ॥
निरखा ब्रह्मंड पसारा, अंडा अंडा स्रुति तार ॥ ५ ॥
दीन दानी धृंग धाये, पाये पिव दरबार ॥ ६ ॥

(१) चींटी। (२) हाथी। (३) एक लिपि में "सदला" है।

उलटमासी

(१)

देखा अचरज भाई रे, कहूँ कहा न जाई ॥ टेक ॥
धी घर व्याह बाप ने कीन्हा, माता पुत्र बियाही ।
भैया भाव ब्याह बहिनी सँग, उलटी रीत चलाई रे ॥ १ ॥
चमरा लगन सोधि लिखि लाये, बम्हना चाम चढ़ाये ।
नउवा नैन सैन सकुचाने, ब्याह बराती आई रे ॥ २ ॥
दुलहा मुवा भई अहवाती[१], चौके राँड कहाई ।
चली बरात ब्याह घन दुलहिन, अचल सुहाग सुहाई रे ॥ ३ ॥
धरती घुमर गरज जल बरषा, बादर भींज बहाई ।
तुलसी चन्द्र चले पानी में, मछरी अकास अन्हाई रे ॥ ४ ॥

(२)

साईं सहर धौं कैसा रे, कोइ कहै सँदेसा ॥ टेक ॥
गंगा गगन धार चढ़ि धाई, बादर बाग लगाये ।
चर और अचर जीव जग के रे, बृच्छ बाग भये भेसा रे ॥ १ ॥
भँवरा भँवर बजाजी कीन्हा, सोना सराफ सुहाई ।
कागा करम केउ मन मैला, मैना मैला पेसा रे ॥ २ ॥
ब्रह्मा वेद भेद नहिं जानै, नेतहि नेत सुनावै ।
दस औतार देव मुनि नारद, मरम न जानै सेसा रे ॥ ३ ॥
बूझत फिरौं देव नर पंछी, कोई न भेद बतावै ।
खोजत खोजत जनम सिराना, मोरे मन अत जैसा रे ॥ ४ ॥
गरजे गगन गिरा गहरानी, सूरति सटक समानी ।
चढ़ी अकास वास बस देखा, बिन बन बाग अँदेसा रे ॥ ५ ॥
कर सतसंग रंग सब पेखो, सतगुर संत लखावैं ।
है लौलीन दीन जिन खोजा, तुलसी पावै ऐसा[२] रे ॥ ६ ॥

(१) सुहागिन । (२) ऐश=सुख ।

(३)

यह जग उलटी रीती रे, यह करै अनीती ॥ टेक ॥
बाम्हन ब्रह्म भेद नहिँ जानै, बेस्वा से पालै प्रीती।
जोति जगन राव राजन को, जीव मरन नहिँ जीता रे ॥ १ ॥
संतन साथ उपाधि लगावै, ऐसी मति भई भीती रे।
रीत अनीत एक नहिँ मानै, पड़ै नरक मन चीनी रे ॥ २ ॥
कर अस्नान मगन मन मोटे, खोट खोट कुन कीनी रे।
पाहन देव सेव पानी प्रति, पालै जड़ संग प्रीती रे ॥ ३ ॥
स्वारथ खान पान जग लूटा, झूँठे झूठ पछीती रे।
तुलसी भाव भरम जग बूड़ा, सब को कौन नचीती रे ॥ ४ ॥

(४)

जल बिच नाचत रंभा री, सखी सुनो अचंभा ॥ टेक ॥
किँगरी संख मृदंग मधुर धुन, नाना उठन तरंगा।
निरतत तान ब्यान सुन बाजे, लाजै सुर जगदम्बा री ॥ १ ॥
चमकै चंद बीज बिन बादर, अमृत चुवै अखंडा।
जल की भीत भीत जल भीतर, पवन भवन का थंभा री ॥ २ ॥
उलटे अललपच्छ नित जावै, निरतत नित चित चंगा।
धरती न गगन सुन्न नभ न्यारा, प्यारा अधर अलंबा ॥ ३ ॥
रात न दिवस दिवस नहिँ राती, भाखों मैँ कौनी भाँती।
तुलसी उलट सुलट नित न्यारी, चढ़त न लाग बिलंबा री ॥ ४ ॥

(५)

अद्भुत आदि अलेखा री, सखी सइयाँ को भेपा ॥ टेक ॥
उदित मुदित दोउ सहर सुहावन, स्याम सेत नित देखा।
अरज छेत्र नभ फटक सिला पर, पद निरबान बिवेका री ॥ १ ॥
सिलोपिली बिजै खेत बिंध्याचल, लील सिखर पर ठेका।
समुँदर सार पार जल खंडा, अंडा अचले पेखा री ॥ २ ॥
निरखे चारि खानि गति चारी, बिधि बिधि जीव बिसेपा।
केवल ज्ञान होत गुंकारा, देखे केवली अनेका री ॥ ३ ॥

यह निरबान भूमि मति मारग , आगे जानै न लेखा ।
स्रावग जैन धरम मति माहीँ , उनके थाकी टेका री ॥ ४ ॥
आतम ज्ञान ध्यान बतलावैँ , आगे भेद न पावैँ ।
सास्तर साख भाखि बिधि देखैं , खोजत मुए अनेका री ॥ ५ ॥
या के परे भिन्न गति न्यारी , सुन्न बाइस बिधि देखा ।
ता के परे सार सत साहिब , सो पद संतन लेखा री ॥ ६ ॥
सुन्न सुन्न प्रति प्रति पद माहीँ , जहँ निरबान न पेखा ।
केवल आदि आतमा नाहीँ , धर्म कर्म नहिँ एका री ॥ ७ ॥
सूर चन्द्र नहिँ धरनि अकासा , तेज पवन जल छेका ।
ता के परे पार निखि न्यारा , तुलसी हिये दृग देखा री ॥ ८ ॥

(६)

सब जग कर्म के बस बिकल , अघ भोग भर्मन के फल ॥टेक॥
सुभ असुभ अंक लिलार लिख , सिख मान मूरख नकल ।
दुख सुख चितानँद चेत अस , गुरु ज्ञान लेकर सिकल ॥ १ ॥
जिव काल जाल जँजीर में से, कढ़न की यह अकल ।
सतगुर सब्द बिन बंद नहिँ , कोइ कर्म काटन की कल ॥ २ ॥
सतसँग समझ की रमज पल इक, टेक तिल पर ताकि ले ।
यहि से सरे सब काज सुन , अब आज दिल पर लिखि ले ॥३॥
सब संत बरन पुकारि कहैँ , निरवार नैना नकल ।
जेहि पार तुलसी लखन सुरति , सिमिट आगे ढिकल ॥ ४ ॥

(७)

सतगुर सब्द में कहैँ सनंद , लख मान सुनिकर अनंद ॥टेक॥
तत पाँच अंड अकार में . निरंकार नभ रवि नंद ।

कहैं संत कोइ लखि अंत अंदर, बिमल बरन सुखानंद।
उनकी सरन कोटिन करम, कटि होय तुलसी धनंद ॥ ४ ॥

(८)

कभी न त्रिप्त भईं अरे मन मौजें ॥ टेक ॥
संग तो करन चावें, भावें चित चौजें।
मन की तरंगें माहीं, साईं घर खोजें ॥ १ ॥
सिंध तो अथाही थाहे, पावे अस को जे।
तिल बिक्रम और, बूड़े राजा भोजे ॥ २ ॥
दिल न डगर सोधे, बाँधे सिर बोझे।
भार को उतारे कोई, समरथ जो जे ॥ ३ ॥
गोपीचंद पीप त्यागे, जागे जग सो जे।
भरथरी भागे रे, अपन तजि फौजें ॥ ४ ॥
तुलसी डगर पावे, लावे पिया लौ जे।
संत सरन स्रुति, मारे जम फौजें ॥ ५ ॥

(९)

भ्रमत भवन तन मन मतवाले ॥ टेक ॥
मद में गरद फिरे बदन बिहाले।
छके रे खुमारा पिये भरि भरि प्याले ॥ १ ॥
अमल नसे में सुधि डगर न चाले।
कैफ की घुमेरें कोई सूर सम्हाले ॥ २ ॥
तन में वतन डेरा मोरा कहा मानि ले।
काया के किले से तुझे तुरत निकालें ॥ ३ ॥
कठिन अमल जग काल कराले।
पकरि गुनाह में तेरी खैंचैंगे खाले ॥ ४ ॥
तुलसी हुकम जम लिखि गया भाले।
करनी करम फल सोइ दरहाले ॥ ५ ॥

(१०)

तन में तत तार तँबूरा है ॥ टेक ॥
बंधन पाँच तार तन कीन्हा, खूँटी खलक जहूरा है ॥ १ ॥

यह निरबान भूमि मति मारग , आगे जानै न लेखा ।
स्रावग जैन धरम मति माहीँ , उनके थाकी टेका री ॥ ४ ॥
आतम ज्ञान ध्यान बतलावैँ , आगे भेद न पावैँ ।
सास्तर साख भाखि बिधि देखैं , खोजत मुए अनेका री ॥ ५ ॥
या के परे भिन्न गति न्यारी , सुन्न बाइस बिधि देखा ।
ता के परे सार सत साहिब , सो पद संतन लेखा री ॥ ६ ॥
सुन्न सुन्न प्रति प्रति पद माहीँ , जहँ निरबान न पेखा ।
केवल आदि आतमा नाहीँ , धर्म कर्म नहिँ एका री ॥ ७ ॥
सूर चन्द्र नहिँ धरनि अकासा , तेज पवन जल छेका ।
ता के परे पार निर्खि न्यारा , तुलसी हिये दृग देखा री ॥ ८ ॥

(६)

सब जग कर्म के बस बिकल , अघ भोग भर्मन के फल ॥टेक॥
सुभ असुभ अंक लिलार लिख , सिख मान मूरख नकल ।
दुख सुख चितानँद चेत अस , गुर ज्ञान लेकर सिकल ॥ १ ॥
जिव काल जाल जँजीर मेँ से, कढ़न की यह अकल ।
सतगुर सब्द बिन बंद नहिँ , कोइ कर्म काटन की कल ॥ २ ॥
सतसँग समझ की रम जपल इक, टेक तिल पर ताकि ले ।
यहि से सरे सब काज सुन , अब आज दिल पर लिखि ले ॥३॥
सब संत बरन पुकारि कहैँ , निरवार नैना नकल ।
जेहि पार तुलसी लखन सुरति , सिमिट आगे ढिकल ॥ ४ ॥

(७)

सतगुर-सब्द मेँ कहैँ सनंद , लख मान सुनिकर अनंद ॥टेक॥
तत पाँच अंड अकार मेँ , निरंकार नभ रवि नंद ।
किरन पार परम उदार स्वामी , सुरज सनमुख मनंद ॥ १ ॥
पद पुरुप दरस मिलाप धुर गुर, चरन चीन्हि चितानंद ।
उलटि मूल मराल लोटी , कोठीवाल मालिक बनंद ॥ २ ॥
सोइ परम धाम पुनीत दिनकर , भान भवन दरसानन ।
नहिँ पार सेस महेस पावैं , बेद भेद न भनंद ॥ ३ ॥

कहैं संत कोइ लखि अंत अंदर, बिमल बरन सुखानंद ।
उनकी सरन कोटिन करम, कटि होय तुलसी धनंद ॥ ४ ॥

(८)

कभी न त्रिप्त भईं अरे मन मौजें ॥ टेक ॥
संग तो करन चावें, भावें चित चौजें ।
मन की तरंगें माहीं, साईं घर खोजें ॥ १ ॥
सिंध तो अथाही थाहे, पावे अस को जे ।
तिल बिक्रम और, बूड़े राजा भोजे ॥ २ ॥
दिल न डगर सोधे, बाँधे सिर बोझे ।
भार को उतारे कोई, समरथ जो जे ॥ ३
गोपीचंद पीप त्यागे, जागे जग सो जे ।
भरथरी भागे रे, अपन तजि फौजें ॥ ४
तुलसी डगर पावे, लावे पिया लौ जे ।
संत सरन स्रुति, मारे जम फौजें ॥ ५

(९)

भ्रमत भवन तन मन मतवाले ॥ टेक ॥
मद में गरद फिरे बदन बिहाले ।
छके रे खुमारा पिये भरि भरि प्याले ॥ १ ॥
अमल नसे में सुधि डगर न चाले ।
कैफ की घुमेरें कोई सूर सम्हाले ॥ २ ॥
तन में वतन डेरा मोरा कहा मानि ले ।
काया के किले से तुझे तुरत निकालें ॥ ३ ॥
कठिन अमल जग काल कराले ।
पकरि गुनाह में तेरी खैंचेंगे खाले ॥ ४ ॥
तुलसी हुकम जम लिखि गया भाले ।
करनी करम फल सोइ दरहाले ॥ ५ ॥

(१०)

तन में तत तार तँबूरा है ॥ टेक ॥
बंधन पाँच तार तन कीन्हा, खूँटी खलक जहूरा है ॥ १ ॥

उठत अवाज साज बिन बाजे, अद्भुत सब्द अपूरा है ॥ २ ॥
खूँटी खसक तार तब टूटा, लूटा जम जग मूरा है ॥ ३ ॥
तुलसी तरक तोल जब पावे, लख सिष सतगुर सूरा है ॥ ४ ॥

(११)

जिँदड़ी दा साहिब बेलो वे ॥ टेक ॥
काहू लगाया बाग बगीचा, काहू लगाया चमेलो वे ॥ १ ॥
काहू ने जोड़ा माल खजाना, काहू चुनाई हवेलो वे ॥ २ ॥
तुलसी सोध बोध सतगुर को, यह संगत अजबेलो वे ॥ ३ ॥

(१२)

मैं तो दरस रस हीना निस दिन ॥ टेक ॥
दीदा दरस परस परसन होय, पिया हिया तड़फे ज्योँ मीना ॥१॥
आये अलोक लोक बस काया, माया लस लो लीना ॥ २ ॥
भयउ अचेत चेत कुछ नाहीँ, सतगुर संत न चीन्हा ॥ ३ ॥
पाँच पचीस बिषय बिधि माहीँ, ता पर गो गुन तीना ॥ ४ ॥
ये सब घेरि घारि बस राख्यो, भाख्यो भव रस पीना ॥ ५ ॥
चेतन ग्रंथ बँधा देही सँग, या बस फिरत अधीना ॥ ६ ॥
अब तो पुकारि दीन दिल दीजे, मैं अति अधम अलीना ॥ ७ ॥
तुलसी चेत चली नर काया, छिन छिन घड़ी पल खीना ॥८॥

(१३)

खोज अगम घट माहीँ साधो ॥ टेक ॥
जा सोँ देस बिदेस बिलोकी, संत सरन गति पाई ॥ १ ॥
पिंगल पेच खैंच सुर्त द्वारा, घर घट घोर सुनाई ॥ २ ॥
कजली पान पार दल अंदर, बिन बन बंसी बजाई ॥ ३ ॥
खोज अवाज बाज बिधि देखो, थिर होइ सुरति लगाई ॥ ४ ॥
ठहरी सुरति ठीक लखि न्यारी, गुरु पद पदम चढ़ाइ ॥ ५ ॥
कँवल भँवर रस माहिँ लुभाना, सब्द में सुरति चढ़ाई ॥ ६ ॥